04 - डॉक्टर बनने के लिए क्यों देश छोड़ रहे छात्र ?

05 - भाषा मैत्री से बढ़ेगी विश्व मैत्री

06 - वन विभाग की बड़ी कार्रवाई, 243 किलो जंगली सूअर का...

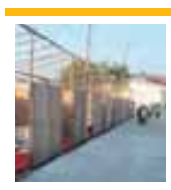
07 - बागेश्वर धाम में 7 दिन का महाकुंभ, ट्रैफिक प्लान जारी

सुबह सवेरे

A Daily News Magazine

इंदौर

शुक्रवार, 21 फरवरी, 2025

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 142, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

विशेष टिप्पणी

यह महिलाओं की बढ़ती आकांक्षा की शिरो 'रेखा' है....

अजय बोकिल

कार्यकारी प्रधान संपादक

दिल्ली प्रदेश और देश की राजधानी दिल्ली में नई मुख्यमंत्री के रूप में रेखा गुप्ता का चुनाव इस अर्द्धराज्य में केवल एक महिला चेहरे को प्रोजेक्ट करना भर नहीं है बल्कि मतदाता से लेकर उपभोक्ता के रूप में देश में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी, महत्वाकांक्षा, अपेक्षा और समाज में बराबरी के ट्रीटमेंट के आग्रह का सकारात्मक स्वीकार भी है। साथ ही यह महिलाओं की सत्ताकांक्षा के चमकते अक्षरों की शिरो रेखा भी है। लोक लुभावन योजनाओं (जिसे रेवड़ी कल्चर न भी कहें) के कारण ही सही, देश में चुनाव में महिलाओं की निर्णायक हिस्सेदारी ने भाजपा जैसे राजनीतिक दल को भी मजबूर कर दिया है कि वह नारी शक्ति के राजनीतिक स्वरूप न केवल सम्मान व मान्यता देना जारी रखे बल्कि देश की आधी आबादी को यह संदेश दे कि समूचे राजनीतिक तंत्र में उनकी भी उतनी ही अहम भूमिका है। बताया जाता है कि दिल्ली सीएम पद की दौड़ में शुरू में अंजान चेहरा मानी जानी वाली रेखा गुप्ता का दावा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के समर्थन से लगातार मजबूत होता गया। संघ चाहता था कि देश में बदलाव लाना है तो महिलाओं को हर क्षेत्र में सम्मान और अवसर देना होगा। दिल्ली राज्य की कमान महिला के हाथों में सौंपने का संदेश पूरे देश में जाएगा। मुख्यमंत्री के सदर्भ में ही देखें तो आज देश में 28 राज्यों में केवल एक महिला मुख्यमंत्री हैं और वो हैं ममता बैनर्जी। उनके बाद केन्द्र शासित अर्द्ध राज्य दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता होंगी। जबकि सीएम पद की दौड़ में कल तक सबसे आगे प्रवेश वर्मा का नाम था, जिन्हें दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को हराने के कारण 'जायंट किलर' कहा गया। लेकिन दिल्ली जैसे देश की राजधानी में सियासी पांसे कुछ अलग और दूरगामी मानदंडों पर चले गए। परिवारवाद, जाट नेता होना, हरियाणा में बीजेपी की एंटी जाट पॉलिटिक्स उनके आड़े आई। यूं दिल्ली भले ही छोटा सा राज्य हो, लेकिन वहां का कोई भी घटनाक्रम देशव्यापी संदेश लिए होता है। फिर चाहे रेखा गुप्ता का मुख्यमंत्री के रूप में अवतार हो या फिर महाकुंभ यात्रियों को रेलवे की अव्यवस्था के कारण मिली सद्गति हो।

ऐसा नहीं है कि भाजपा में रेखा गुप्ता के रूप में पहली बार कोई महिला सीएम पद की बागडोर संभाल रही हैं। इसके पहले बीजेपी में सुषमा स्वराज, वसुंधरा राजे, उमा भारती, आनंदी बेन पटेल ये जिम्मेदारी बखूबी संभाल चुकी हैं। इनमें से वसुंधरा राजे तो अभी तक फिर से सीएम बनने का सपना पाले हुए हैं। लेकिन भाजपा में मोदी-शाह युग के दौरान शीर्ष सत्ताधारी महिलाओं की संख्या में कमी आने लगी। इसका एक कारण पार्टी की नई और बेहद आक्रामक कार्यशैली भी हो सकती है। हालांकि दूसरी तरफ बीते दशक में नए नारी चेहरे जैसे स्मृति ईरानी, निर्मला सीतारमन भी नमूदार हुए। निर्मला तो देश की वित्त मंत्री के रूप में बहुत बड़ी जिम्मेदारी कुशलता से निभा रही हैं। लेकिन राज्यों में कमान महिला नेत्रियों के हाथ से फिसलती जा रही थी। इसके विपरीत लोकतंत्र के उत्सव चुनावों में साल दर साल महिला मतदाताओं की भागीदारी बढ़ती जा रही है। 2024 के आम चुनाव की बात करें तो महिला और पुरूष मतदाताओं के बीच अंतर बहुत बारीक रह गया था। यानी मतदान में महिलाएं अगर पुरूषों की बराबरी कर रही हैं तो यह नेतृत्व में महिलाओं के समान हिस्सेदारी की जोरदार दस्तक है, जिसे अनसुना करना अब संभव नहीं है। लोकसभा की ही बात करें तो यह प्रतिनिधित्व महिला आरक्षण बिल में प्रस्तावित 33 फीसदी से काफी कम है और जिस अनुपात में महिलाएं वोट कर रही हैं, उससे भी काफी कम है। एक तरफ चुनाव में महिलाओं का लगातार ज्यादा वोट करना तो दूसरी तरफ नेतृत्व के फलक पर महिलाओं का हाशिए पर जाते जाना अपने आप में चिंतनीय और विसंगति भरा है। हो सकता है कि इसके पीछे पुरूषवादी सोच भी हो, लेकिन यह जीवन के हर क्षेत्र और खासकर राजनीति में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी के तकाजे से मेल नहीं खाता।

यूं तो हर चुनाव में महिला मतदाताओं की संख्या बढ़ रही है, लेकिन मध्यप्रदेश में महिलाओं को सीधे नकदी देने वाली 'लाड़ली बहना योजना' ने 2023 के विधानसभा चुनाव में राजनीतिक उपभोक्ता के रूप में स्थापित किया। हर माह पैसे की रेवड़ी ने महिलाओं को सरकार बनाने में अपनी भूमिका बड़े पैमाने पर निभाने के लिए प्रेरित किया। लिहाजा वो अब काफी हद तक निर्णायक भूमिका में है। वोटर के रूप में महिलाओं का यह दबाव भी राजनीतिक दलों को विवश कर रहा है कि वो महिला नेतृत्व को मान्यता दें, उसका आदर करें। सत्ता की अपनी मुट्ठियां ढीली कर उन्हें मौका दें। यूं दिल्ली की मुख्यमंत्री के अधिकार सीमित हैं। बावजूद इसके शीला दीक्षित जैसी मुख्यमंत्री ने अपने काम से छाप छोड़ी थी। रेखा गुप्ता को कितनी आजादी से काम करने दिया जाएगा, डबल इंजन सरकार में वो कितना ईंधन झोंक पाएंगी, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आभा मंडल में अपनी जगह कितनी बना पाएंगी, चुनाव के दौरान भाजपा ने यमुना सफाई से लेकर दिल्ली को सुंदर राजधानी बनाने जैसे बड़े-बड़े वादे किए हैं, उन्हें कितना पूरा कर पाएंगी, यह अभी कहना मुश्किल है। लेकिन रेखा गुप्ता के लिए यह अवसर जरूर है कि वो अपने काम और शैली से भाजपा की एक राष्ट्रीय स्तर की नेता के रूप में उभरें। वो रिक्त जगह भरने की कोशिश करें, जो सुषमा स्वराज के निधन और किसी हद तक स्मृति ईरानी के चुनाव हारने के बाद खाली है।

वैसे रेखा गुप्ता को सीएम बनाकर बीजेपी ने आने वाले समय में अरविंद केजरीवाल के चौथी बार सीएम बनने की संभावनाओं को भी कुंद कर दिया है। रेखा गुप्ता के सामने उन्हें अपनी नेता आतिशी मार्लेना को ही आगे करना पड़ेगा। दूसरे, रेखा भी केजरीवाल की तरह हरियाणा मूल की हैं और उस वैश्य समुदाय से हैं, जो बीजेपी का कोर वोटर रहा है, लेकिन दिल्ली की राजनीति में उसका केजरीवाल के प्रति सॉफ्ट् कॉर्नर रहा है। लेकिन इससे भी बड़ी बात भाजपा में काम करने वाली उन लाखो महिला कार्यकर्ताओं और करोड़ों महिला वोटरों के लिए भी यह सकारात्मक संदेश है कि देश की राजनीतिक व्यवस्था में उनकी भी उतनी ही अहमियत है और इसे चाहकर भी कोई नजरअंदाज नहीं कर सकता।

पीएम मोदी के -'लाइफ' विजन के अनुरूप है प्रदेश की 'बॉयो फ्यूल योजना-2025' : सीएम

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि बॉयो फ्यूल योजना-2025 प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'लाइफ स्टाइल फॉर एनवायरनमेंट' (एलआईएफई) अभियान के मूल सिद्धांतों के अनुरूप है, जिसमें सतत विकास को प्राथमिकता देते हुए जिम्मेदार उपभोग और उत्पादन पर जोर दिया गया है। यह योजना प्रदेश की कृषि शक्ति का पूर्ण लाभ उठाते हुए नवाचार को बढ़ावा देगी। प्रदेशवासियों के लिए हरित और समृद्ध भविष्य के साथ, योजना से प्रदेश में बॉयो फ्यूल मैन्युफैक्चरिंग यूनिट्स, बॉयो ऊर्जा संयंत्र, फीड स्टॉक उत्पादन और आपूर्ति श्रृंखला के विभिन्न स्तरों पर व्यापक रूप से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार सृजित होंगे। योजना से प्रदेश की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने में मदद मिलेगी, साथ ही पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखते हुए औद्योगिक विकास को भी गति मिलेगी।

हरित ऊर्जा उत्पादन और रोजगार सृजन की क्रांतिकारी पहल- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि 'बॉयो फ्यूल योजना-2025' राज्य की आर्थिक समृद्धि, हरित ऊर्जा उत्पादन और रोजगार सृजन के लिए क्रांतिकारी पहल है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में भारत सतत विकास और नवकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर नई ऊंचाइयां छू रहा है। उनकी प्रेरणा से मध्यप्रदेश सरकार भी ऐसी योजनाएं बना रही है, जो दीर्घकालिक रूप से पर्यावरण के अनुकूल हों और रोजगार सृजन को बढ़ावा दें। इस योजना से प्रदेश में कृषि एवं जैव अपशिष्ट का प्रभावी उपयोग सुनिश्चित होगा, जिससे पर्यावरण अनुकूल ईंधन का उत्पादन किया जा सकेगा और राज्य हरित ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन सकेगा। नवकरणीय ऊर्जा और सतत विकास की दिशा में ऐतिहासिक कदम उठाते हुए 'बॉयो फ्यूल योजना-2025' को मंत्रि-परिषद द्वारा अनुमोदित किया गया है।

बॉयो फ्यूल उत्पादन संयंत्र के लिये भूमि आवंटन सहित अनेक रियायतें- प्रदेश सरकार ने इस योजना के तहत बॉयो फ्यूल उत्पादन संयंत्र स्थापना के लिये भूमि आवंटन, निवेश प्रोत्साहन, आधारभूत संरचना विकास में सहायता और कर रियायतें प्रदान करने का निर्णय लिया है।

रेखा ने रच दिया इतिहास... दिल्ली की चौथी महिला सीएम के तौर पर ली शपथ

नईदिल्ली (एजेंसी)। रेखा गुप्ता ने दिल्ली की मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ले ली है। वह दिल्ली की चौथी महिला मुख्यमंत्री बन गई हैं। उन्होंने रामलीला मैदान में पद की शपथ ली। यह पार्टी के लिए ऐतिहासिक दिन है क्योंकि बीजेपी 27 साल बाद राजधानी में सत्ता में वापस लौटी है। सुषमा स्वराज, शीला दीक्षित और आतिशी के बाद रेखा गुप्ता दिल्ली की चौथी महिला मुख्यमंत्री हैं। इस समारोह में पीएम मोदी, अमित शाह के अलावा बीजेपी शासित 21 राज्यों के सीएम, डिप्टी सीएम भी मौजूद रहे। आप नेता अरविंद केजरीवाल और आतिशी शपथ में नहीं पहुंचे। प्रवेश वर्मा समेत 6 मंत्रियों ने भी शपथ ली रेखा के अलावा 6 मंत्रियों ने भी शपथ ली। इनमें अरविंद केजरीवाल को हराने वाले प्रवेश वर्मा, आशीष सूद, मनजिंदर सिंह सिरसा, रविंद्र इंद्राज सिंह, कपिल मिश्रा और पंकज कुमार सिंह शामिल है।

प्रवेश वर्मा दिल्ली के डिप्टी सीएम शिक्षा, परिवहन-PWD विभाग मिला, सीएम ने गृह-वित्त अपने पास रखा

दिल्ली में भाजपा सरकार के शपथ के 4 घंटे के बाद ही मंत्रियों के बीच विभागों का बंटवारा कर दिया गया। मीडिया के सूत्रों के मुताबिक सीएम रेखा गुप्ता ने गृह और वित्त मंत्रालय अपने पास रखा है।अरविंद केजरीवाल को नई दिल्ली सीट से हराने वाले प्रवेश वर्मा को डिप्टी सीएम बनाया गया है। उन्हें शिक्षा, परिवहन और PWD की जिम्मेदारी दी गई है।

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

कौन अभिव्यक्त कर सकता है
अनकही पीड़ा और अनायास खुशी
एक साथ
सिवाय तुम्हारे वसंत।
तुम उधेड़ते हो अभिशाप की परतें
हाथ पकड़ कर ले जाते हो
प्रेत जगत से दूर
एक जीवंत दुनिया में।
तुम एहसास दिलाते हो कि
जीवन में अंतहीन संताप के अलावा
उल्लसित सुबह, शिथिल दोपहर और
उन्मुक्त शाम भी है।
ईर्ष्या और स्पर्धा की धूप खाती
चट्टानों के परे
स्नेह और अनुराग भरे संबंधों की
छाँह भी है।
तुम एहसास दिलाते हो कि ज़िंदगी
हाथ बाँध कर पाँत में खड़े होने वालों
में नहीं
हाथों को फैलाकर खुले मैदान में
नाचने वालों में है।
एक सुखद भ्रम रचते हो तुम
निपुण अभिनेता की तरह।
तुम्हारे अभिनय के पश्चात्
रंगशाला से बाहर निकलते हुए
उदास कर देने वाली सच्चाईयों
की तपन मुझे फिर छूने लगती है।

- चंद्रशेखर साकल्ले

एमपी में तीन हादसों में 8 की मौत, 9 घायल

भिंड में कार डंपर में घुसी; मैहर में महाकुंभ यात्रियों की स्कॉर्पियो बस से टकराई

सतना/भिंड/दतिया (नप्र)। मध्यप्रदेश में बुधवार रात 1 बजे से लेकर सुबह 7 बजे तक तीन बड़े सड़क हादसे हो गए। इन हादसों में 8 लोगों की मौत हो गई, 9 घायल हैं। पहला हादसा भिंड जिले के मेहगांव में हुआ। यहां तेज रफ्तार कार सड़क किनारे खड़े डंपर में घुस गई। तीन युवकों की मौके पर मौत हो गई। दो घायलों को ग्वालियर रेफर किया गया है। वहीं, मैहर में तड़के 3 बजे स्कॉर्पियो पीछे से बस में घुस गई। स्कॉर्पियो सवार तीन लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। तीन गंभीर घायल हैं, एक को मामूली चोट आई है। सभी भोपाल से महाकुंभ स्नान के लिए प्रयागराज जा रहे थे। इधर, दतिया में सुबह 7 बजे ऑटो बेकाबू होकर पलट गया। दो लोगों की मौत हो गई, 4 घायल हैं। ऑटो सवार भांडेर, तो कुछ पण्डोखर धाम जा रहे थे।

दतिया-बेकाबू होकर पलटा ऑटो, दो की मौत

दतिया में हादसे में ऑटो सवार 6 लोग भांडेर और पण्डोखर धाम जा रहे थे। सुबह करीब 7 बजे बीकर गांव में ऑटो बेकाबू होकर पलट गया। सभी रेलवे स्टेशन से ऑटो में बैठे थे। हादसे में ऑटो चालक अंकित पाल (25) और यात्री अंकुश राजावत की मौत हो गई। ऑटो में सवार जालौन निवासी रश्मि चौहान (26), हरियाणा निवासी सरला कुमारी खन्ना (65), आगरा निवासी गौरव वर्मा (32) और मुकेश मित्तल (50) घायल हो गए।

भिंड: बारात जानी थी और हादसा हो गया

भिंड जिले के मेहगांव क्षेत्र में नेशनल हाईवे-719 पर देर रात हादसा हुआ, जिसमें आकाश राठौर (25), मंगल राठौर (26) और उमेश राठौर की मौत हो गई। धीरज राठौर (20) और सुनील घायल हैं। परिजन अजय राठौर ने बताया, मेरे भाई सुरेश राठौर के छोटे बेटे विकास की शादी के कार्यक्रम चल रहे थे। कल मंडप था। रात करीब 12 बजे तक घर में नाच गाना हो रहा था। फिर बारिश होने लगी तो सभी सोने चले गए। तब दूल्हे का बड़ा भाई आकाश, उसके ताऊ के लड़कों के साथ बिना बताए कहीं चले गए। सुबह पांच बजे पुलिस ने सूचना दी एक्सीडेंट हो गया। आज बारात जानी थी उससे पहले ही ये हादसा हो गया।

भोपाल के रहने वाले थे स्कॉर्पियो सवार

मैहर में हादसे में घायलों को सिविल अस्पताल भेजा गया। यहां से सभी को रीवा के संजय गांधी अस्पताल रेफर कर दिया। हादसे के बाद बस ड्राइवर भाग गया।

नंदकिशोर, अरविंदाक्षन, मंडलोई व पार्वती को आज विष्णु खरे सम्मान

भोपाल। कला, साहित्य एवं संस्कृति के लिये समर्पित, निरन्तर 40 वर्षों से सक्रिय, वनमाली सृजनपीठ द्वारा वनमाली जी के शिष्य एवं प्रखर कवि, आलोचक, अनुवादक, पत्रकार तथा मध्यप्रदेश के छिंदवाड़ा में जन्मे विष्णु खरे की स्मृति में राष्ट्रीय कविता सम्मानों की घोषणा की गई है। वनमाली सृजनपीठ के राष्ट्रीय अध्यक्ष संतोष चौबे द्वारा विष्णु खरे कविता सम्मान-2025 की घोषणा करते हुए बताया कि विष्णु खरे कविता सम्मान के अंतर्गत चार अलग-अलग श्रेणियों में रचनाकारों को अलंकृत किया जायेगा। विष्णु खरे आलोचना सम्मान से वरिष्ठ आलोचक, कवि, अनुवादक नंदकिशोर आचार्य (बीकानेर), विष्णु खरे अनुवाद सम्मान से वरिष्ठ अनुवादक ए. अरविंदाक्षन (केरल), विष्णु खरे कविता सम्मान से सुप्रसिद्ध साहित्यकार, कवि, अनुवादक एवं आलोचक लीलाधर मंडलोई (नई दिल्ली) तथा विष्णु खरे युवा कविता सम्मान से युवा कवियत्री पार्वती तिर्की (झारखंड) विभूषित होंगे।

उल्लेखनीय है कि साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित प्रख्यात आलोचक नंदकिशोर आचार्य ने आलोचना के अलावा कविता, नाट्य, शिक्षा-सभ्यता संस्कृति विषयक विमर्श और संपादन क्षेत्र में अपना रचनात्मक योगदान दिया है। आप मध्यप्रदेश के साहित्यिक परिदृश्य में भी लगातार सक्रिय हैं। अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के पूर्व कुलपति एवं वरिष्ठ साहित्यकार ए. अरविंदाक्षन हमारे समय के महत्वपूर्ण आलोचक साहित्यकार और अनुवादक हैं। हिन्दी में उनकी बीस आलोचनात्मक पुस्तकें, मलयालम में पाँच आलोचनात्मक पुस्तकें, एक उपन्यास, पन्द्रह अनूदित पुस्तकों सहित अनेक पुस्तकें प्रकाशित हैं। विष्णु खरे कविता सम्मान से सम्मानित लीलाधर मंडलोई, वरिष्ठ कवि एवं आलोचक हैं। वे दूरदर्शन के महानिदेशक के पद पर भी रहे हैं। घर-घर घूमा, रात-बिरात, उपस्थित है समुद्र (कविता संग्रह) एवं अंडमान-निकोबार की लोककथाएँ, चाँद का धब्बा, पेड़ भी चलते हैं आदि अनेक पुस्तकें प्रकाशित हैं। डॉ. पार्वती तिर्की युवा कवियित्री हैं। उनका पहला काव्य संग्रह 'फिर उगना' है। कविता और लोकगीतों में उनकी विशेष अभिरुचि हैं। उल्लेखनीय है कि कविता सम्मान समारोह विगत 19 फरवरी से आयोजित किया जा रहा है। 21 फरवरी को विष्णु खरे कविता सम्मान का आयोजन स्कोप विश्वविद्यालय भोपाल के मुक्तधारा तथा वनमाली सभागार में किया जा रहा है।

समारोह के अतिथि प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी तथा ध्रुपद गायक पद्मश्री उमाकांत गुंदेचा होंगे। टैगोर विश्व कला केन्द्र के निदेशक विनय उपाध्याय संचालन करेंगे। समारोह में विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. माधुरी रामधारी (मॉरीशस) विशेष रूप से उपस्थित रहेंगी। समारोह में पुरस्कृत रचनाकारों के साथ देश के ख्यात साहित्यकार ममता कालिया (नई दिल्ली), अरुण कमल (पटना), अखिलेश (लखनऊ), ओमा शर्मा (मुंबई), मनीषा कुलश्रेष्ठ (जयपुर), महेश दर्पण, प्रकाश मनु, देवी प्रसाद मिश्र (नई दिल्ली), नीलेश रघुवंशी, मुकेश वर्मा, संतोष चौबे (भोपाल), महेश वर्मा, रामकुमार तिवारी (छत्तीसगढ़) तथा 100 से अधिक वनमाली सृजन केन्द्रों के संयोजक भाग लेंगे। भोपाल तथा मध्यप्रदेश के भी अनेक साहित्यकार विभिन्न सत्रों में उपस्थित रहेंगे।

- विस्तृत पेज 8 पर देखें

पुलिस मुख्यालय ने दस साल से जमे अफसरों की रिपोर्ट मांगी

डीएसपी, इंस्पेक्टर, सब इंस्पेक्टर की पोस्टिंग का ब्यौरा देंगे डीजी, एडीजी, आईजी, एसपी

भोपाल(नप्र)। प्रदेश में एक ही जिले में अलग-अलग पदों पर दस साल की पोस्टिंग पूरी कर चुके अफसरों को हटाया जाएगा। इसके लिए पुलिस मुख्यालय ने सभी पुलिस इकाइयों से डीएसपी, इंस्पेक्टर और सब इंस्पेक्टर्स की जानकारी मांगी है। इन अधिकारियों की एक ही जिले में अलग-अलग पदों पर पोस्टिंग को भी इसमें शामिल किया गया है। इसके आधार पर पोस्टिंग अवधि काउंट करने के लिए कहा गया है। पुलिस मुख्यालय द्वारा जारी निर्देश के अनुसार, इस तरह की जानकारी सामने आई है कि कई पुलिस अधिकारी लंबी अवधि से एक ही जिले में पोस्टेड हैं। इसके चलते कई बार अफसरों की निष्पक्ष कार्यवाही पर सवाल उठाए जाते हैं। इसलिए पुलिस इकाइयों के अधिकारी अपने क्षेत्र और जिले में पदस्थ ऐसे डीएसपी, निरीक्षक और उप निरीक्षक की सूची तैयार कराएंगे। यह जानकारी सात दिन में भेजने के लिए कहा गया है।

पीएचक्यू ने इन अफसरों से मांगी जानकारी-पुलिस मुख्यालय ने डीजी लोकायुक्त, ईओडब्ल्यू, जोनल एडीजी और आईजी, पुलिस आयुक्त भोपाल, इंदौर के साथ ही डायरेक्टर जेएनपीए सागर, एआईजी प्रशासन, सेनानी आरएपीटीसी, सीनियर एसपी रेडियो, दूरसंचार संगठन, सभी रेल, पीटीएस, पीटीसी एसपी को इसके संबंध में जानकारी देने के लिए कहा है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 22 °c
न्यूनतम 16°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ शुक्रवार, 21 फरवरी 2025

> जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।
>
> चाणक्य नीति

भारत का अनोखा मंदिर जहां दरवाजे से नहीं होते दर्शन

प्रसाद भी नहीं दिया जाता हाथ में, यहां की अलग ही है परंपरा

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक के उडुपी में मौजूद श्री कृष्ण मंदिर भक्तों के लिए अस्था का प्रतीक है। साथ ही यहां मनोकामना पूरी होने पर भक्त सबसे ज्यादा दर्शन के लिए पहुंचते हैं। मंदिर की अनोखी बात यह है, यहां भगवान श्री कृष्ण के दर्शन एक छोटी खिड़की से होते हैं, जिसे 'कान्हा की खिड़की' भी कहते हैं। उडुपी को भगवान कृष्ण के भक्तों के लिए पवित्र स्थान माना जाता है, जैसे मथुरा है उसी तरह ये जगह है। उडुपी का कृष्ण मंदिर कृष्ण भक्तों के लिए आस्था का केंद्र है, हर दिन हजारों की संख्या में श्रद्धालु यहां कृष्ण के दर्शन करने और पूजा करने के लिए पहुंचते हैं। मंदिर में भगवान कृष्ण की सबसे सुंदर मूर्ति मानी जाती है, इसमें वे बचपन के रूप बालकृष्ण के रूप में विराजमान हैं। मंदिर में कोई भी सीधा मूर्ति के दर्शन नहीं कर सकता। भगवान कृष्ण के दर्शन यहां 9 छिद्रों वाली एक छोटी खिड़की से किए जाते हैं। ये मंदिर अपने आप में ही बहुत ही अनोखा और रोचक माना जाता है। माना जाता है भगवान ने अपने एक भक्त की भक्ति से खुश होकर ये खिड़की बनवाई थी, जिससे हर कोई उनके दर्शन कर सके। ये मंदिर 13वीं शताब्दी में श्री माधवाचार्य द्वारा स्थापित हुआ था और तब से ये दक्षिण भारत के सबसे फेमस और पवित्र मंदिरों में से एक माना जाता है। जन्माष्टमी के मौके पर इस मंदिर की सजावट देखने लायक रहती है।

कर्नाटक में कश्मीरी छात्र से हुई रैगिंग और मारपीट

सीएम अब्दुल्ला ने सिद्धारमैया को लिखी चिट्ठी

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक के बीजापुर में अल-अमीन मेडिकल कॉलेज में कश्मीर के रहने वाले एमबीबीएस सेकेंड ईयर के स्टूडेंट के साथ रैगिंग और मारपीट का मामला सामने आया है। मामले में जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कर्नाटक के सीएम सिद्धरमैया को चिट्ठी लिखकर कार्रवाई की मांग की है। घटना की जानकारी देते हुए जम्मू-कश्मीर छात्र संघ ने बताया कि पीड़ित स्टूडेंट हामिम कश्मीर के अनंतनाग का रहने वाला है। संघ के मुताबिक 18 फरवरी शाम 4 बजे कॉलेज के 2019 और 2022 बैच के स्टूडेंट्स के बीच क्रिकेट मैच हो रहा था। हामिम मैच देखने गया था, उसी दौरान उससे बदसलूकी और मारपीट की गई।

डल्लेवाल ने किसान संगठनों को एकजुट होने का दिया संदेश

चंडीगढ़ (एजेंसी)। केंद्र सरकार और आंदोलनकारी किसानों के बीच छठे दौर की बैठक 22 फरवरी को शाम छह बजे चंडीगढ़ में होगी। बैठक को लेकर केंद्र सरकार की ओर से आधिकारिक पत्र जारी कर दिया गया है। उधर, खनौरी बॉर्डर पर किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल का अनशन 87वें दिन में प्रवेश कर गया है। वहीं, मीटिंग से पहले डल्लेवाल ने एक संदेश जारी कर सभी संगठनों को एकजुट होने का न्योता दिया है। उन्होंने कहा कि यह लड़ाई अब बहुत आगे पहुंच चुकी है। इसको जीतने के लिए एकता की जरूरत है। वहीं, उनके सभी संगठनों को एकता के लिए पत्र भी लिखा है। 27 फरवरी को चंडीगढ़ में बैठक होगी। डल्लेवाल ने करीब सात मिनट का संदेश जारी किया है।

बंगाल में परिवार की सारी महिलाओं ने खाया जहर

मर्दों ने भी की कोशिश

कोलकाता (एजेंसी)। पुलिस ने टांगरा इलाके में एक परिवार की तीन महिलाओं की संदिग्ध हालत में मौत और तीन पुरुष सदस्यों के एक्सीडेंट में घायल होने की गुत्थी सुलझा ली है। पुलिस का कहना है कि यह परिवार बिजनेस में नुकसान के बाद आर्थिक तंगी से जूझ रहा था। उनके ऊपर कर्ज चुकाने का दबाव था, इसलिए उन्होंने प्लान बनाकर एक साथ जान देने की कोशिश की। सभी ने पहले खीर के साथ नींद की गोली खाई। इसके बाद महिलाओं ने खुद को नुकसान पहुंचाकर जान दे दी जबकि पुरुष सदस्यों ने कार एक्सीडेंट के जरिये खुद को मारने का प्रयास किया। हालांकि पीड़ितों के रिश्तेदार की शिकायत के आधार पर पुलिस ने हत्या का मामला दर्ज किया है। टांगरा के अटल सुर लेन में प्रणय डे अपनी पत्नी सुदेषणा और बेटे प्रतीप डे के साथ रहते थे। चार मंजिल की इमारत में उनके छोटे भाई प्रसून कुमार डे भी पत्नी रोमी और बेटी प्रियंवदा के साथ रहते थे। डे परिवार 25 साल पहले क्रिस्टोफर रोड से टांगरा शिफ्ट हुआ था।

अश्लीलता रोकने के लिए अब आएगा डिजिटल इंडिया बिल

केंद्र सरकार की बड़ी तैयारी, 15 महीने से कर रहा काम

सोशल मीडिया कंटेट पर भी रखेगी नजर, बड़ा है प्लान

नई दिल्ली (एजेंसी)। सोशल मीडिया पर अश्लीलता रोकने के लिए केंद्र सरकार मौजूदा आईटी एक्ट की जगह डिजिटल इंडिया बिल लाने पर काम कर रही है। नए कानून में यू ट्यूबर, डिजिटल प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया यूजर्स को रेगुलेट करने के प्रावधान रहेंगे। डिजिटल इंडिया बिल पर केंद्र करीब 15 महीने से काम कर रहा है। अलग-अलग क्षेत्र के लिए विशिष्ट प्रावधान वाले कानून बनाए जाएंगे। जैसे दूरसंचार, सूचना प्रौद्योगिकी और सूचना एवं प्रसारण संबंधी विषयों के लिए अलग-अलग प्रावधान रखे जाएंगे। इसमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के गवर्नेंस की भी व्यवस्था हो। सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर रणवीर अलाहबादिया के विवाद के चलते सरकार डिजिटल इंडिया बिल की ओर वापसी कर रही है। हालांकि, एआई गवर्नेंस इससे अलग रखने का फैसला किया है। इसके लिए पूरी तरह अलग नियमन की जरूरत है। सरकार के सामने तुरंत की बाध्यता सुप्रीम कोर्ट को संतोषजनक जवाब देने की है कि आईटी एक्ट की खामियां दूर करने के लिए क्या किया जा रहा है। आईटी मामलों पर संसदीय समिति ने भी अश्लील कंटेंट पर अंकुश के लिए सरकार से जवाब मांग रखा है। आईटी एक्ट साल 2000 में बना था, तब 60 लाख नेट यूजर थे, अब 90 करोड़ आईटी एक्ट, 2000 पुराना हो चुका है। यह बना तब देश में इंटरनेट यूजर 60 लाख तक थे। अब 90 करोड़ से ज्यादा हैं। संसदीय समिति ने हाल में अश्लील व फूहड कंटेंट पर सरकार से पूछा था कि आईटी एक्ट में ऐसे कंटेंट को लेकर क्या प्रावधान हैं। सुप्रीम कोर्ट ने भी इसी मुद्दे पर घेरा है।

नीतिश की 'पिच' पर बीजेपी का 'खेला'

पटना (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी ने ऐतिहासिक वैभव और मुगल से संघर्ष के प्रतीक महापुरुष शिवाजी को चुनावी धार पर चढ़ा डाला। बिहार विधानसभा जंग की फतह को लेकर सक्रिय भाजपा इस चुनाव में बाजी दर बाजी चल रही है। शिवाजी की जयंती के बहाने भाजपा की एक कोशिश अपने आधार वोट को पुख्ता करने की भी हो रही है। भाजपा ने इस उद्देश्य को ध्यान में रख कर शिवाजी को कुर्मी फोल्ड में कर एक तरह से नीतिश कुमार के आधार वोट में सेंधमारी की कोशिश भी कर डाली है।

आप महाकुंभ जाएंगे, राहुल गांधी तत्काल बोले-नमस्कार

- कांग्रेस नेता ने रायबरेली में की हनुमान मंदिर में पूजा
- छात्रों से कहा-देश में हर दिन कानून को तोड़ा जा रहा

रायबरेली (एजेंसी)। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी दो दिन के दौरे पर गुरुवार को रायबरेली पहुंचे। सबसे पहले बछरावां में कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। कहा- बीजेपी ने जीएसटी और नोटबंदी कर देश में बेरोजगारी बढ़ाई है। केंद्र सरकार ईमानदारी से काम करे, तो करोड़ों युवाओं को रोजगार मिल सकता है। महाकुंभ जाने के सवाल पर राहुल गांधी ने कहा- नमस्कार और आगे बढ़ गए। इससे पहले राहुल गांधी सुबह 10 बजे लखनऊ एयरपोर्ट पहुंचे। वहां से सड़क के रास्ते रायबरेली पहुंचे। यहां हनुमान मंदिर में पूजा-अर्चना की। इसके बाद राहुल गांधी मूल भारती छात्रावास पहुंचे, यहां छात्रों से सवाल-जवाब किए। छात्रों से कहा- देश में हर रोज कानून तोड़ा जा रहा है। इसलिए आपकी बात सुनने और समझने आया हूं। इससे पहले राहुल गांधी 5 नवंबर, 2024 को रायबरेली आए थे।

वहीं, लोकसभा चुनाव यानी सांसद चुने जाने के बाद राहुल का रायबरेली का यह 5वां दौरा है। राहुल गांधी ने कहा, विचारधारा आप की है, संविधान आप ने दिया, मगर जहां भी आप जाते हो आप को कुचला जाता है।

रेखा गुप्ता की 'शपथ', शीशमहल में नहीं रहूंगी

बनीं दिल्ली की 9वीं सीएम, प्रवेश वर्मा समेत बनाए गए 6 मंत्री

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में आज से 'रेखा सरकार'। शालीमार बाग सीट से पहली बार की विधायक रेखा गुप्ता (50 साल) ने गुरुवार को दिल्ली के रामलीला मैदान में शपथ ली। शपथ के साथ ही उन्होंने यह ऐलान किया कि वह अरविंद केजरीवाल वाले शीशमहल में नहीं रहेंगी। वह दिल्ली की 9वीं और चौथी महिला सीएम बन गई हैं। रेखा से पहले सुषमा स्वराज, शीला दीक्षित और आतिशी मुख्यमंत्री रहीं। इस समारोह में पीएम मोदी, अमित शाह के अलावा बीजेपी शासित 21 राज्यों के सीएम, डिप्टी सीएम भी मौजूद रहे। आप नेता अरविंद केजरीवाल और आतिशी शपथ में नहीं पहुंचे। प्रवेश वर्मा समेत 6 मंत्रियों ने भी शपथ ली रेखा के अलावा 6 मंत्रियों ने भी शपथ ली। इनमें अरविंद केजरीवाल को हराने वाले प्रवेश वर्मा, आशीष सूद, मनजिंदर सिंह सिरसा, रविंद्र इंद्राज सिंह, कपिल मिश्रा और पंकज कुमार सिंह शामिल है। दिल्ली के रामलीला मैदान में शपथ ग्रहण समारोह में एनडीए शासित राज्यों के सीएम-डिप्टी सीएम आए। इसके अलावा पीएम मोदी, दिल्ली के उपराज्यपाल, सीएम रेखा गुप्ता और उनका मंत्रिमंडल मंच पर मौजूद रहा। शपथ के साथ ही सीएम रेखा गुप्ता बोलीं- मैं शीशमहल में नहीं रहूंगी।

प्रवेश वर्मा दिल्ली के डिप्टी सीएम, कई विभाग मिले

दिल्ली में भाजपा सरकार के शपथ के 4 घंटे के बाद ही मंत्रियों के बीच विभागों का बंटवारा कर दिया गया। सीएम रेखा गुप्ता ने गृह और वित्त मंत्रालय अपने पास रखा है। अरविंद केजरीवाल को नई दिल्ली सीट से हराने वाले प्रवेश वर्मा को डिप्टी सीएम बनाया गया है। उन्हें शिक्षा, परिवहन और पीडब्ल्यूडी की जिम्मेदारी दी गई है। प्रवेश सीएम की रेस में सबसे आगे चल रहे थे। सूत्रों के मुताबिक, नई सरकार में रोहिणी से चौथी बात जीते वरिष्ठ भाजपा नेता विजेंद्र गुप्ता को विधानसभा स्पीकर और मुस्तफाबाद से विधायक मोहन सिंह बिष्ट को डिप्टी स्पीकर बनाया जा सकता है।

महाकुंभ में अब सभी रास्तों से मिलेगी एंट्री

खत्म हुआ रेलवे का इमरजेंसी प्लान, चल रहा आखिरी सप्ताह

प्रयागराज (एजेंसी)। प्रयागराज में महाकुंभ पर उमड़ रही भारी भीड़ को देखते हुए पिछले चार दिनों से रेलवे ने इमरजेंसी प्लान लागू कर दिया था, जिसके कारण शहर में कई प्रमुख मार्ग बंद कर दिए गए थे। अब रेलवे का इमरजेंसी प्लान खत्म कर दिया गया है, जिसके बाद पुलिस ने इन मार्गों को फिर से खोल दिया है। जानसेनगंज से लीडर रोड और जोगीवीर चौराहे से स्टेशन जाने वाले रास्ते पूरी तरह से अवरुद्ध थे। जिसके चलते रेलवे स्टेशन के पास रहने वाले स्थानीय लोगों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था।

भीड़ बढ़ने पर पुलिस और रेलवे ने इमरजेंसी प्लान लागू कर दिया था जिसके तहत जानसेनगंज चौराहे से श्रद्धालुओं को लीडर रोड की तरफ जाने से रोका गया और उन्हें चौक की ओर डायवर्ट कर दिया गया था।

इससे श्रद्धालुओं को कई किलोमीटर तक पैदल चलना पड़ रहा था। वहीं लीडर रोड और जंक्शन के पास रहने वाले लोग भी अपने घरों में कैद हो गए थे, दूसरी ओर से भी निकलने का रास्ता बंद कर दिया गया था। बुधवार सुबह शहर के कई इलाकों में ब्लॉक हटा दिया गया। रेलवे ने आपातकालीन प्लान को बंद कर खुसरोबाग की जगह सीधे स्टेशन परिसर में एंट्री देना शुरू कर दिया है।

हाईकोर्ट जजों के खिलाफ लोकपाल जांच, सुप्रीम कोर्ट की रोक

- एससी ने कहा-यह बहुत परेशान करने वाला, केंद्र सरकार को नोटिस जारी किया

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को लोकपाल के उस आदेश पर रोक लगा दी, जिसमें कहा गया था कि हाईकोर्ट के जजों के खिलाफ शिकायतों की जांच करना लोकपाल के अधिकार क्षेत्र में आता है। जस्टिस बीआर गवई, जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस अभय एस ओका की बेंच ने गुरुवार को मामले पर खुद सुनवाई की और कहा कि यह बहुत परेशान करने वाली बात है। कोर्ट ने केंद्र सरकार, लोकपाल रजिस्ट्रार, शिकायतकर्ता को नोटिस जारी करते हुए निर्देश दिया कि 18 मार्च को अगली सुनवाई होगी। तब तक जजों के नाम और शिकायत का खुलासा नहीं करना है। आरोप- कंपनी के पक्ष में फैसले के लिए जजों से सिफारिश की दरअसल, लोकपाल ने 27 फरवरी को एक आदेश जारी कर हाईकोर्ट के एक मौजूदा एडिशनल जज के खिलाफ दो शिकायतों पर कार्रवाई की बात कही थी। लोकपाल ने कहा कि हाई कोर्ट का जज लोकपाल अधिनियम की धारा 14 (1) (ए) के दायरे में एक व्यक्ति के रूप में योग्य होगा। इन शिकायतों में आरोप था कि संबंधित जज ने एक निजी कंपनी के पक्ष में फैसला दिया है।

9 लाख आउटसोर्स कर्मियों की सैलरी बढ़ाने का ऐलान

छात्राओं को फ्री स्कूटी मिलेगी, 92 हजार को नई नौकरी

छुट्टा पशुओं की समस्या खत्म करने का भी किया ऐलान

लखनऊ (एजेंसी)। यूपी की योगी सरकार ने गुरुवार को 2025-26 का बजट पेश किया। इस बजट में 2027 विधानसभा चुनाव की तैयारियों की झलक देखने को मिली। योगी ने बजट 'सनातन को समर्पित' बताया। कहा- योजनाओं में 'वंचित को वरीयता' दी जाएगी। सरकार ने आउटसोर्सिंग कर्मचारियों के मानदेय में धांधली रोकने के लिए बड़ा फैसला लिया है। आउटसोर्सिंग कर्मचारियों के लिए सेवा निगम बनेगा। न्यूनतम मानदेय 20 हजार रुपए दिया जाएगा। ये पैसे सीधे अकाउंट में आएंगे। अभी तक उन्हें 16 हजार रुपए मिल रहे थे। प्रदेश में इस समय करीब 9 लाख आउटसोर्सिंग कर्मचारी हैं। छुट्टा पशु पर सरकार का ध्यान है। बजट में मध्यप्रदेश-राजस्थान की तर्ज पर पहली बार 12वीं के रिजल्ट में अच्छे नंबर लाने वाली प्रतिभाशाली छात्राओं को फ्री में स्कूटी देने का ऐलान किया गया है। इसमें यूपी बोर्ड के अलावा सीबीएसई को भी शामिल किया जाएगा। 400 करोड़ का बजट तय किया है।

मां ने प्रेमी संग मिलकर कराया था बेटे का खतना

जबरन मदरसे भी भेजते थे, धर्मांतरण के 3 दोषियों को 10-10 साल की सजा

इंदौर (नप्र)। इंदौर कोर्ट ने 8 साल के मासूम के जबरन धर्म परिवर्तन और खतना करने के केस में बुधवार को फैसला सुना दिया। कोर्ट ने पीड़ित बच्चे की मां सहित तीन आरोपियों को धारा 467 एवं 471 में 10-10 साल का सश्रम कारावास और 5-5 हजार रुपए का जुर्माना, धारा 5 धार्मिक स्वतंत्रता अध्यादेश 2020 में 7-7 साल का सश्रम कारावास और 50 हजार रुपए का जुर्माना जबकि धारा 420 और 468 में 5-5 साल का सश्रम कारावास और 5-5 हजार रुपए के जुर्माने की सजा सुनाई है। मामला जुलाई 2023 का है। राजस्थान में बाड़मेर निवासी व्यापारी महेश नाहटा ने इंदौर के खजराना थाने में एफआईआर दर्ज कराई थी। जांच के बाद पुलिस ने नाहटा की पत्नी प्रार्थना शिवहरे (27), उसके बॉय फ्रेंड इलियास अहमद (33 वर्ष) निवासी इंदौर और मोहम्मद जफर अली (37 वर्ष) निवासी शाजापुर को गिरफ्तार किया था।

बेटे को जबरदस्ती ले गई थी पत्नी, पिता का नाम बदलवाया

अनाज व्यापारी महेश नाहटा ने एफआईआर में कहा था- जून 2014 में शाजापुर निवासी प्रार्थना से शादी हुई थी। 2015 में बेटा हुआ। सब कुछ ठीक चल रहा था। 25 फरवरी 2018 को वह पत्नी और बेटे के साथ शाजापुर आया था। यहां एक सगाई अटैंड कर अपने गांव सिवाना लौटते वक्त पत्नी और बेटा रतलाम के आगे सालाखेड़ी में बस से लापता हो गए। दोनों की गुमशुदगी रतलाम थाने में ही दर्ज करा दी थी।

जांच के दौरान पता चला कि पत्नी इंदौर के रहने वाले इलियास कुरैशी के साथ गई है। पुलिस ने इलियास को रतलाम से गिरफ्तार कर लिया। कोर्ट ने उसे जेल भेज दिया। इस दौरान प्रार्थना उसके घर पर ही रही। कुछ समय बाद इलियास जमानत पर छूट गया था। मैंने बेटे को अपने साथ ही रखने की बात कही, लेकिन पत्नी नहीं मानी और चली गई। मैं उन्हें ढूंढता रहा। काफी समय तक कुछ पता नहीं चला। शाजापुर कोर्ट में बेटे की अभिरक्षा को लेकर आवेदन दिया। पुलिस को उनका पता नहीं मिला, इस कारण वारंट तामील नहीं हो पाया। इसी दौरान मालूम हुआ कि पत्नी इंदौर में खजराना की रजा कॉलोनी में इलियास के साथ रह रही है। यहां उसने मेरे बेटे का खतना करा दिया है। इलियास ने खुद को बच्चे का पिता बताकर नाम और जन्म प्रमाण पत्र भी बदलवा दिए। ये सभी फर्जी प्रमाणपत्र जफर ने बनाए। जबरन बेटे का मजहबी स्कूल में एडमिशन करा दिया। शिकायतकर्ता महेश नाहटा के साथ पत्नी प्रार्थना की पुरानी तस्वीर। गोद में उनका बेटा, जिसके 8 साल का होने पर जबरन धर्म परिवर्तन कर खतना कर दिया गया था।

जेल में कैदियों को कराया अमृत स्नान

प्रयागराज के संगम से इंदौर बुलवाया गंगाजल; बंदियों ने रखा उपवास, लिया संकल्प

इंदौर (नप्र)। इंदौर की केंद्रीय जेल में कैदियों को अमृत स्नान कराया गया। इसके लिए यूपी के प्रयागराज संगम से गंगाजल बुलवाया गया। इसके एक कुंड में डाला गया। 2400 से अधिक बंदियों ने इसमें स्नान किया। कुछ ने उपवास रखकर संकल्प भी लिया। केंद्रीय जेल की अधीक्षक अलका सोनकर ने बताया कि परिचितों की मदद से शाही स्नान के दिन का गंगाजल इंदौर बुलवाया था। जेल परिसर में अलग-अलग कुंड बनाकर उसमें गंगाजल डाला गया। केंद्रीय जेल में विधि विधान से किया पूजन किया गया। इसके बाद कुंड में गंगाजल डाला गया।

सामाजिक जुड़ाव के लिए की ये पहल- जेल अधीक्षक ने बताया कि प्रदेश में इंदौर केंद्रीय जेल पहली ऐसी जेल बनी, जहां इस तरह का आयोजन किया गया। उन्होंने कहा कि सरकार का उद्देश्य बंदियों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ना है। कुछ बंदियों ने संकल्प लिया कि वे आगे समाज सेवा में अपना जीवन लगाएंगे और सकारात्मक कार्यों से जुड़ेंगे।

दिन का पारा 1 डिग्री गिरा

फिर भी गर्मी का एहसास, फरवरी के आखिरी हफ्ते में गिरावट का अनुमान

इंदौर (नप्र)। इंदौर में लगातार चार दिनों तक अधिकतम तापमान 31 डिग्री सेल्सियस से ऊपर बना रहा, हालांकि बीते 24 घंटों में इसमें एक डिग्री की गिरावट दर्ज की गई। बावजूद इसके, गर्मी का एहसास बना हुआ है। रात के तापमान में एक डिग्री की बढ़ोतरी हुई, जिससे ठंड पूरी तरह से गायब हो गई है। बुधवार को दिनभर तेज धूप रही, वहीं 11 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चली हवा ने तापमान में मामूली गिरावट दर्ज कराई। अधिकतम तापमान 30.5 डिग्री सेल्सियस (+1) रहा, जबकि रात का तापमान 16.8 डिग्री (+3) रिकॉर्ड किया गया। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार, दक्षिण पाकिस्तान और राजस्थान के ऊपर एक साइक्लोनिक सिस्टम एक्टिव है, साथ ही उत्तर भारत में वेस्टर्न डिस्टरबेंस भी प्रभावी है। इसके चलते प्रदेश में गर्मी का असर दिख रहा है। 24 फरवरी के आसपास एक और वेस्टर्न डिस्टरबेंस सक्रिय होगा, जिससे प्रदेश के कुछ हिस्सों में हल्का असर देखने को मिल सकता है। फरवरी के अंतिम सप्ताह में तापमान में गिरावट की संभावना जताई गई है।

बुजुर्ग महिला की चैन लूटकर भागे बदमाश

प्रवचन सुनकर घर जा रही थी, सीसीटीवी में कैद हुई वारदात, पुलिस तलाश में जुटी

इंदौर (नप्र)। इंदौर के अन्नपूर्णा क्षेत्र में जैन मंदिर से प्रवचन सुनकर घर लौट रही महिला के साथ लूट की वारदात हो गई। बाइक सवार बदमाश उनके गले से सोने की चेन झपटकर फरार हो गए। घटना के बाद महिला घर पहुंची और परिजनों को जानकारी दी। पुलिस ने हुलिए के आधार पर आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है।

चेन लूटकर फरार हुए बदमाश, फुटेज खंगाल रही पुलिस

अन्नपूर्णा पुलिस के अनुसार, नेमीनगर जैन कॉलोनी निवासी सुलेखा जैन की शिकायत पर मामला दर्ज किया गया है। उन्होंने बताया कि वह नेमीनाथ जैन मंदिर में प्रवचन सुनने गई थीं। प्रवचन समाप्त होने के बाद जब वह घर लौट रही थीं, तो रास्ते में सब्जी लेने के लिए रुकीं। इसी दौरान बाइक सवार दो बदमाश वहां पहुंचे। आगे बाइक रोककर एक बदमाश पीछे की सीट से उतरा और उनके गले से चेन झपट ली। महिला के चिल्लाने से पहले ही बदमाश बाइक सहित फरार हो गए। बाद में उन्होंने घर पहुंचकर परिवार को घटना की जानकारी दी। पुलिस के मुताबिक, एक बदमाश ने नारंगी रंग की

हुडी पहनी थी, जबकि चेन झपटने वाले ने सफेद टी-शर्ट पहनी हुई थी। पुलिस को घटनास्थल के सीसीटीवी फुटेज मिले हैं और आरोपियों की तलाश में टीमें जुटी हैं।

डिलीवरी बॉय के भाई से मोबाइल लूटा

द्वारकापुरी क्षेत्र में भी लूट की एक और घटना सामने आई है। बुधवार शाम को शरद दुबे, निवासी गीतानगर, पुलिस थाने पहुंचा और बताया कि वह ऑनलाइन डिलीवरी का काम करता है। 6 फरवरी की शाम को वह अपने छोटे भाई रविशंकर दुबे के साथ रंजीत हनुमान मंदिर के पास की गली से गुजर रहा था। इसी दौरान स्कीम नंबर 71 की ओर से आए बाइक सवार बदमाशों ने रविशंकर के हाथ से मोबाइल झपट लिया और तेजी से फरार हो गए। आरोपियों के पास सीडी डीलक्स बाइक थी।

जानकारी के मुताबिक, पीड़ित ने घर पर इस घटना की जानकारी नहीं दी थी। बाद में पिता के पूछने पर दोनों भाइयों ने लूट की बात बताई। इसके बाद पुलिस अधिकारियों को सूचना दी गई, जिसके बाद टीआई राहुल राजपूत ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

इंदौर में पूर्व प्रिंसिपल से 1.70 करोड़ की ठगी

सोशल मीडिया पर ट्रेडिंग का झांसा, बैंक मैनेजर की सतर्कता से खुलासा

इंदौर (नप्र)। इंदौर में एक निजी कॉलेज के पूर्व प्रिंसिपल साइबर ठगी का शिकार हो गए। ठगों ने उन्हें सोशल मीडिया पर फर्जी ट्रेडिंग ग्रुप में जोड़कर 1.70 करोड़ रुपये की ठगी कर ली। जब बैंक मैनेजर को लगातार हो रहे ट्रांजेक्शनों पर शक हुआ तो उन्होंने पूछताछ की, लेकिन बुजुर्ग ने जानकारी देने से इनकार कर दिया। इसके बाद मामला पुलिस तक पहुंचा और साइबर क्राइम ब्रांच ने जांच शुरू कर दी।

ट्रेडिंग ग्रुप में जोड़ा, फर्जी ऐप पर दिखाया मुनाफा- 84 वर्षीय पूर्व प्रिंसिपल को आर्यन आनंद नाम के व्यक्ति का कॉल आया, जिसने खुद को ट्रेडिंग एडवाइजर बताया। उसने उन्हें लिंक भेजकर एक एप इंस्टॉल करवाया और निवेश के लिए प्रेरित किया। बुजुर्ग ने 9 बार में करीब 1.70 करोड़ रुपये जमा कर दिए। ठग लगातार उन्हें डबल मुनाफे का लालच देते रहे और एप पर उनके अकाउंट में रकम भी दिखाई, लेकिन निकासी की अनुमति नहीं दी। जब उन्होंने पैसा निकालने की कोशिश

की तो आरोपियों ने बहाने बनाए और फिर नंबर बंद कर दिए।

बैंक मैनेजर को हुआ शक, पुलिस ने की जांच

पलासिया स्थित बैंक के मैनेजर ने जब बुजुर्ग से पूछताछ की तो उन्होंने पहले निवेश का हवाला देकर जानकारी देने से मना कर दिया। इसके बाद मैनेजर ने पुलिस को सूचित किया। जब क्राइम ब्रांच ने जांच शुरू की, तब पता चला कि यह साइबर ठगी का मामला है। एडिशनल डीसीपी राजेश दंडोतिया खुद पूर्व प्रिंसिपल के घर पहुंचे और उनसे पूछताछ की। बुजुर्ग को आखिरी समय तक यह समझ नहीं आया कि वह ठगी का शिकार हो चुके हैं। वे एप पर दिखाई जा रही फर्जी रकम को ही असली मानते रहे। फिलहाल, पुलिस ने साइबर हेल्पलाइन 1930 पर शिकायत दर्ज कराई है और मामले की जांच जारी है।

इंदौर में नाबालिग से हुआ रेप

शादी के बाद पति के साथ पहुंची थाने, पड़ोसी पर केस दर्ज

इंदौर (नप्र)। इंदौर के खुड़ैल इलाके में एक महिला ने शादी के बाद पति को अपने साथ हुई दरिंदगी की जानकारी दी, जिसके बाद आरोपी से पूछताछ करने पर उसे धमकी मिलने लगी। आखिरकार दंपती ने हिम्मत जुटाकर थाने में शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है और उसकी तलाश जारी है।

चार साल पहले जंगल में किया था दुष्कर्म- पुलिस के मुताबिक, घटना 15 फरवरी 2020 की है, जब पीड़िता नाबालिग थी। वह अपने परिवार के साथ दूधिया इलाके में मजदूरी करने गई थी और वहां किराये पर रह रही थी। एक दिन बहन से विवाद होने के बाद वह गुस्से में देवगुराड़िया मंदिर चली गई। मंदिर के पीछे जंगल में गई तो पड़ोसी डेपानाथ वहां पहुंचा और उसे जबरन पहाड़ी के पीछे ले जाकर दुष्कर्म किया। डर के कारण पीड़िता ने यह बात किसी को नहीं बताई।

12 साल 6 महीने बाद इंदौर आए आसाराम, चुनिंदा सेवकों से मिले

इंदौर (नप्र)। पैरोल पर जेल से बाहर आए आसाराम पूरे 12 साल 6 महीने 11 दिन बाद मंगलवार देर रात इंदौर पहुंचे। 31 अगस्त 2013 को रात 10 बजे खंडवा रोड स्थित आश्रम से ही राजस्थान पुलिस ने गिरफ्तार किया था। बुधवार दोपहर 12.15 से 12.45 बजे तक सुपर स्पेशिएलिटी अस्पताल में चेकअप कराया। अधीक्षक डॉ. सुमित शुक्ला के मुताबिक डॉक्टरों की टीम ने विभिन्न परीक्षण किए। हालांकि टीम ने जांचें लिखी वे नहीं कराई। अनुयायियों ने जांच व उपचार के दस्तावेज डाक्टरों से ले लिए हैं। संभव है इन्हें कोर्ट में प्रस्तुत करें।

खुद को कैद किया... आश्रम पहुंचने की खबर के बाद भक्त बुधवार सुबह से गेट के बाहर जमा होने लगे थे। उन्हें कोर्ट के आदेश का हवाला देकर रवाना किया जाता रहा। आसाराम आश्रम में भी एकांत क्षेत्र में चुनिंदा सेवकों के साथ है। आश्रम में गिने-चुने साधकों को मोबाइल बाहर रख अंदर आने की अनुमति दी जा रही है। आसाराम ने आश्रम का मुआयना करने के साथ पूजा स्थल भी देखे। तनाव मुक्त रहने की सलाह... डॉ. अशोक ठाकुर की देखरेख में हृदय, किडनी, लिवर, न्यूरोलाजी, मधुमेह, उच्च रक्तचाप के विशेषज्ञ ने आसाराम की जांच की। डॉक्टर्स ने उसे आराम करने और तनाव मुक्त रहने की सलाह दी है। थोड़ा चलने पर हांफने, चक्कर, सीने में दर्द, न्यूरो, किडनी आदि समस्या बताई गई।

डॉक्टरों का प्रदेशव्यापी आंदोलन शुरू

इंदौर में पहले दिन एमवाय हॉस्पिटल गेट पर काली पट्टी बांधकर डॉक्टरों ने किया विरोध

इंदौर (नप्र)। म.प्र. शासकीय-स्वशासी चिकित्सक महासंघ द्वारा विभिन्न मांगों को लेकर प्रदेश में आज से प्रदेशव्यापी आंदोलन चलाया जाएगा। इसमें लोक स्वास्थ्य और चिकित्सा शिक्षा विभाग, श्रम विभाग, गृह विभाग व गैस राहत विभाग में पदस्थ 15 हजार डॉक्टर्स काली पट्टी बांधकर काम करेंगे। इंदौर में दोपहर करीब 1 बजे डॉक्टर्स ने एमवाय हॉस्पिटल के गेट के सामने काली पट्टी बांधकर करीब 45 मिनट तक विरोध प्रदर्शन किया। आंदोलन के तहत जूनियर और मेडिकल टीचर्स एसोसिएशन से जुड़े डॉक्टर्स 20 और 21 फरवरी को काली पट्टी लगाकर विरोध प्रदर्शन करेंगे। 22 फरवरी को कार्यस्थल के बाहर आधे घंटे टोकन विरोध प्रदर्शन करेंगे। एमटीए के अध्यक्ष डॉ. राहुल रोकड़े और सचिव डॉ. अशोक ठाकुर ने बताया कि इस दौरान इमरजेंसी सेवा चालू रहेगी। इसके साथ ही चिह्नित अस्पतालों पर अमानक दवाओं की सांकेतिक होली जलाई जाएगी। 24 फरवरी को प्रदेशव्यापी सामूहिक उपवास के साथ 1 घंटे कार्यस्थल के बाहर विरोध प्रदर्शन किया जाएगा। 25 फरवरी से प्रदेशव्यापी प्रशासनिक असहयोग आंदोलन होगा।

डॉक्टरों की ये हैं प्रमुख मांगें- चिकित्सक महासंघ के चिकित्सकों के मूलभूत विषयों का समयबद्ध निराकरण। नीतिगत, तकनीकी, चिकित्सकीय विषयों के निर्धारण में महासंघ के पदाधिकारी और विभागीय अधिकारियों को शामिल कर उच्च स्तरीय समिति का गठन किया जाए। म.प्र. मंत्रिपरिषद की 4 अक्टूबर की बैठक के निर्णय के क्रियान्वयन की मांग। इसमें चिकित्सा शिक्षकों को सातवें वेतनमान का वास्तविक लाभ और मूल वेतन का निर्धारण किया जाए।

इंदौर जिले में 'निरोगी काया' अभियान

30 साल से अधिक उम्र वालों की होगी विशेष हेल्थ स्क्रीनिंग, 31 मार्च तक चलेगा

इंदौर (नप्र)। इंदौर जिले में गुरुवार से निरोगी काया अभियान शुरू होगा। 31 मार्च तक ये अभियान चलेगा। इस अभियान में 30 साल से ज्यादा उम्र के लोगों की शुगर, बीपी और नॉन अल्कोहलिक फैटी लिवर डिजीज सहित अन्य बीमारियों की विशेष स्क्रीनिंग की होगी। इसका उद्देश्य गैर संचारी रोग नियंत्रण के प्रयासों को सुदृढ़ करना और मैदानी स्तर पर समय से इलाज और मैनेजमेंट सुनिश्चित करने के लिए एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

लोगों की होगी स्क्रीनिंग, इलाज भी मिलेगा- सीएचएमओ डॉ. बी.एस. सैत्या ने बताया कि, इस अभियान का उद्देश्य समय पर स्क्रीनिंग कर बीमारियों की पहचान करना है, ताकि इलाज जल्द शुरू किया जा सके और स्वस्थ समुदाय का निर्माण हो। अभियान की अवधि के अंतिम 5 दिनों में जिले के आयुष्मान आरोग्य मंदिरों पर स्क्रीनिंग की जाएगी, जबकि अन्य लोगों की जांच स्वास्थ्य शिविरों में की जाएगी।

यदि स्क्रीनिंग में शुगर या बीपी की समस्या पाई जाती है, तो कम्युनिटी हेल्थ ऑफिसर टेलीमेडिसिन के जरिए परामर्श लेकर इलाज शुरू करेंगे। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों पर चिकित्सा अधिकारी उपचार प्रदान करेंगे, जबकि अनियंत्रित शुगर और बीपी के मामलों को उच्च स्वास्थ्य केंद्रों में रेफर किया जाएगा। सीएचएमओ डॉ.बीएस सैत्या ने बताया कि अभियान के दौरान सभी लोगों को स्वस्थ आहार, नियमित व्यायाम और वजन नियंत्रण के लिए परामर्श भी दिया जाएगा।

लिवर को स्वस्थ रखना जरूरी- डॉ. बी.एस. सैत्या ने बताया कि, लिवर शरीर का एक महत्वपूर्ण अंग है, जो पाचन में मदद करने और ऊर्जा संग्रहित करने का काम करता है। इसलिए लिवर को स्वस्थ रखना संपूर्ण स्वास्थ्य के लिए बेहद आवश्यक है। इस अभियान के तहत नॉन-अल्कोहलिक फैटी लिवर डिजीज की पहचान के लिए आयुष्मान आरोग्य मंदिर स्तर पर सीएचओ द्वारा बीएमआई की गणना की जाएगी। यदि बीएमआई 23 से अधिक है, तो उस व्यक्ति को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर जांच के लिए रेफर किया जाएगा। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर यदि फाइब्रोसिस स्कोर 1.45 से अधिक पाया जाता है, तो मरीज को उपचार के लिए उच्च स्वास्थ्य केंद्र भेजा जाएगा।

समय पर जांच और सही देखभाल है जरूरी- डॉ. सैत्या ने बताया कि शुगर, बीपी और नॉन अल्कोहलिक फैटी लिवर डिजीज जैसी बीमारियां दीर्घकालिक बीमारियां है, जो एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में नहीं फैलती है। इनके लक्षण धीरे-धीरे सामने आते हैं और इन्हें लंबे समय तक देखभाल की जरूरत होती है। वयस्क पुरुष और महिलाएं इनसे अधिक प्रभावित होते हैं। बच्चों पर भी इनका खतरा रहता है। ये बीमारियां जीवन के महत्वपूर्ण सालों को प्रभावित कर सकती है और कई बार असमय मृत्यु का कारण भी बन सकती है। खासकर वृद्धावस्था में, लेकिन सही समय पर जांच और इलाज व जीवनशैली में बदलाव लाकर इन्हें नियंत्रित किया जा सकता है।

दो नई सुविधाएं: नए आईएसबीटी की शुरुआत मार्च से

- 15 एकड़ में बना है आईएसबीटी
- 14 टिकट काउंटर, 16 रेस्त्रा रहेंगे यहां

पहले फेज में 200 बसें चलेंगी, हजारों यात्री करेंगे सफर

इंदौर (नप्र)। कुमेड़ी में बना इंटर स्टेट बस टर्मिनल (आईएसबीटी) से मार्च से शुरू हो जाएगा। पहले फेज में यहां से 200 बसें यूपी, राजस्थान, गुजरात, ग्वालियर, भिंड, मुरैना, भोपाल सहित अन्य रूट पर चलेंगी। इनमें प्रतिदिन हजारों यात्री सफर कर सकेंगे। यह निर्णय बुधवार को संभागायुक्त दीपक सिंह की अध्यक्षता में हुई जिला प्रशासन, निगम, आईडीए, वन विभाग की समन्वय बैठक में हुआ। बैठक में संभागायुक्त ने अलग-अलग योजनाओं की प्रगति रिपोर्ट देखी और समीक्षा की। कहा कि सभी विभाग समन्वय के साथ पारदर्शिता और गुणवत्ता के साथ काम करें। साइट पर जाएं, मॉनिटरिंग करें। संभागायुक्त ने बताया कि आईएसबीटी अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त है। इस बस स्टैंड का संचालन मार्च के मध्य तक शुरू हो जाएगा।

बसों के संचालन से शहर में यातायात का दबाव कम हो जाएगा। सिंह ने निर्देश दिए कि इस बस स्टैंड पर यात्रियों के लिए सभी बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध रहें। बताया गया कि बस स्टैंड में यात्रियों और बसों के लिए अनेक सुविधाएं मौजूद हैं। आईएसबीटी के पास वाहन संचालकों को बस पार्क करने के लिए इंदौर विकास प्राधिकरण द्वारा जगह उपलब्ध कराई जाएगी। आईएसबीटी तक यात्रियों की सुविधा के लिए सिटी बस, ऑटो, ई-रिक्शा आदि लोक परिवहन के साधनों की कनेक्टिविटी की जाएगी। संभागायुक्त ने कहा कि इंदौर विकास प्राधिकरण और नगर निगम की योजनाओं में बाधक आने वाले अतिक्रमणों को हटाया जाएगा। इस दौरान जिन गरीबों के आवास हटेंगे, उन्हें प्रधानमंत्री आवास योजना 2.0 के आवास दिए जाएंगे।

बड़ा गणपति फ्लायओवर पर भी चर्चा- बड़ा गणपति पर प्रस्तावित फ्लायओवर पर भी चर्चा हुई। अगले एक पखवाड़े में इसकी डीपीआर बनाकर आगे की कार्रवाई शुरू कर दी जाएगी। इस काम में इंदौर विकास प्राधिकरण, नगर निगम के सहयोग से यह काम करेगा। एमआर-11, एमआर-12 पर भी चर्चा की गई। कलेक्टर आशीष सिंह, निगमायुक्त शिवम वर्मा, आईडीए सीईओ आर.पी. अहिरवार, वनमंडल अधिकारी बीरेंद्र के. पटेल आदि उपस्थित थे।

मई-जून तक हो सकता है निगम का नया पोर्टल लांच- पोर्टल की धीमी गति और बार-बार आने वाली तकनीकी समस्या से लोगों को निजात मिलने वाली है, क्योंकि नगर निगम जल्द ही राजस्व वसूली और अन्य सेवाओं के लिए नया पोर्टल शुरू करने जा रहा है। टेंडर प्रक्रिया जारी है। मार्च तक एजेंसी का चयन कर काम भी शुरू किया जा सकता है। संभावना है कि मई-जून तक नया पोर्टल लांच हो जाए। प्रशासन की कोशिश है कि अगले दो महीनों में नए पोर्टल के माध्यम से कम से कम संपत्ति कर जमा करने की सुविधा शुरू हो जाए। लोग नए पोर्टल के जरिए ऑनलाइन भी टैक्स जमा कर सकेंगे। दरअसल, पिछले साल जून में राज्य सरकार ने इंदौर को खुद का पोर्टल शुरू करने की अनुमति दे दी थी। नगर निगम लंबे समय से ई-नगर पालिका पोर्टल से अलग होकर खुद का पोर्टल विकसित करने की मांग कर रहा था।

संपादकीय

रेखा को कमान देने के मायने

आखिरकार भाजपा ने दिल्ली प्रदेश की कमान रेखा गुप्ता के हाथों में सौंप कर दो हफ्ते से जारी उन तमाम अटकलों पर विराम लगा दिया है, जिनमें 'कौन बनेगा मुख्यमंत्री' के नाम कर सुर्खियां बटोरी जा रही थीं। सीएम पद की होड़ में अपने सभी प्रतिद्वंद्वियों को पीछे छोड़ने वाली रेखा के बारे में कहा जा रहा है कि उनका चयन चौंकाने वाला भले न हो, लेकिन इस बात की पुष्टि है कि भारतीय जनता पार्टी और आरएसएस राजनीति में अगली पीढ़ी को प्रमोट करने के संकल्प को आगे बढ़ा रही है। साथ ही भाजपा ने रेखा को सीएम बनाकर देश की आधी आबादी यानी महिला वर्ग को भी एड्रेस किया है। रेखा गुप्ता के साथ प्रवेश वर्मा सहित 6 मंत्रियों ने भी पद की शपथ ली है। रेखा छात्र राजनीति से आई हैं और भाजपा की निष्ठावान कार्यकर्ता रही हैं। वो दिल्ली में पार्षद भी रही हैं। हालांकि वे विधायक पहली बार बनी है। लेकिन भाजपा ऐसे फैसले पहले भी करती रही है जैसे कि राजस्थान में किया। दिल्ली प्रदेश का सीएम बनने की दौड़ में दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को हराने वाले प्रवेश वर्मा का नाम सबसे आगे चल रहा था। क्योंकि वो जाट समुदाय से हैं। लेकिन भाजपा और संघ ने अंदरखाने नई रणनीति अख्तियार की और दिल्ली में किसी महिला को प्रोजेक्ट कर विपक्ष के उस आरोप को भी बेअसर करने की कोशिश की, जिसमें यह कहा जा रहा था कि भाजपा अब किसी महिला को सीएम नहीं बना रही है। राजनीतिक हल्कों में चर्चा का विषय यह है कि मुख्यमंत्री पद की दौड़ में रेखा गुप्ता ने प्रवेश वर्मा को कैसे मात दी। क्योंकि प्रवेश वर्मा खुद को इस पद का स्वाभाविक दावेदार मानकर चल रहे थे। भाजपा का मानना है कि वो अगर प्रवेश वर्मा को सत्ता सौंपती तो उस पर उस परिवारवाद को बढ़ावा देने का आरोप लगता, जिसके लिए वह विपक्ष को निशाना बनाती आई है। प्रवेश वर्मा के पिता स्व. साहेब सिंह वर्मा दिल्ली राज्य के मुख्यमंत्री रह चुके हैं। हालांकि प्रवेश को मंत्री बनाया गया है। दरअसल रेखा गुप्ता को सीएम बनाकर बीजेपी ने एक साथ कई निशाने साधने की कोशिश की है। उन्हें सत्ता सौंपने अरविंद केजरीवाल के लिए भविष्य में फिर से दिल्ली का सीएम बनने की संभावना और क्षीण हो गई है। उन्हें रेखा गुप्ता के मुकाबले अब आतिशी मार्लेना को ही आगे बढ़ाना होगा। दूसरे, रेखा भी केजरीवाल की तरह हरियाणा मूल की हैं और वैश्य समुदाय से हैं। ऐसे में दिल्ली के प्रभावी और मालदार वैश्य समुदाय में भी सही संदेश गया है। हालांकि खुद रेखा गुप्ता मध्यमवर्गीय परिवार से आती हैं। पेशे से वकील हैं। बेशक बतौर मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के कंधों पर बड़ी जिम्मेदारी डाली गई है। इस पर वो कितना खरा उतरती है, यह देखने की बात है। क्योंकि बीजेपी ने दिल्ली के संवारने और अंतरराष्ट्रीय स्तर की राजधानी बनाने, यमुना को साफ करने जैसे बड़े-बड़े वादे किए हैं। उन्हें पूरा करना है। जहां तक दिल्ली प्रदेश की बात है तो यहां ज्यादा महिला मुख्यमंत्रियों ने ही राज किया है। कांग्रेस की शीला दीक्षित तो 15 साल तक सीएम रहीं और सुशासन और केन्द्र के साथ तालमेल की उन्होंने एक अच्छी मिसाल कायम की। इसके पहले सुषमा स्वराज और आतिशी भी दिल्ली की मुख्यमंत्री रहीं। वैसे राज्य में अब डबल इंजिन की सरकार होने से रेखा गुप्ता के सामने ज्यादा कठिनाई आएगी, ऐसा नहीं लगता, लेकिन पार्टी में भीतरी चुनौती का सामना उन्हें करना पड़ सकता है। क्योंकि प्रवेश शर्मा रेखा का नेतृत्व आसानी से पचा लेंगे, इसकी संभावना कम है।

नजरिया

डॉ. सत्यवान सौरभ

लेखक स्तंभकार हैं।

डॉक्टर बनने के लिए क्यों देश छोड़ रहे छात्र?

भारत छोड़ने वाले मेडिकल छात्रों की संख्या में वृद्धि हुई है, हर साल 30,000 से अधिक छात्र विदेश जाते हैं। राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग के आंकड़ों के अनुसार, केवल 16 प्रतिशत विदेशी मेडिकल स्नातक फ़ॉरेन मेडिकल ग्रेजुएट एग्ज़ामिनेशन स्क्रीनिंग परीक्षा पास करते हैं। नीट प्रतियोगिता, उच्च ट्यूशन और घरेलू सीटों की कमी के कारण, भारत की स्वास्थ्य सेवा प्रणाली त्रस्त है, जिसके कारण विदेशी शिक्षा पर निर्भरता बढ़ रही है। कम ट्यूशन लागत, सुव्यवस्थित प्रवेश प्रक्रिया और मान्यता प्राप्त डिग्री के साथ, कई देश यात्रा के लिए पसंदीदा गंतव्य हैं। इन कारकों के कारण, छात्रों की बढ़ती संख्या भारत के बाहर चिकित्सा शिक्षा प्राप्त करके अंतर को पाट रही है, जिससे यह गारंटी मिलती है कि वे अभी भी डॉक्टर बनने की अपनी आकांक्षाओं को पूरा कर सकते हैं। आसान आवेदन और प्रवेश प्रक्रिया के कारण भारतीय छात्र अंतर्राष्ट्रीय मेडिकल कोर्स को प्राथमिकता देते हैं। छात्र अंग्रेज़ी या कोई विदेशी भाषा पढ़ सकते हैं। हर साल ट्यूशन पर लगभग 200,000 से 300,000 रुपये खर्च होते हैं। कोई कैपिटेशन शुल्क की आवश्यकता नहीं है। कई अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों को विश्व स्वास्थ्य संगठन और भारतीय चिकित्सा परिषद से मान्यता मिली है। छात्रों को एक बहुसांस्कृतिक सेटिंग से अवगत कराया जाता है जो उनके जीवन के अनुभवों और ज्ञान को व्यापक बनाता है। अच्छी शैक्षिक गुणवत्ता के साथ इनकी डिग्री अंतरराष्ट्रीय सीमाओं के पार मान्यता प्राप्त है। घरेलू सीटों के लिए तीव्र प्रतिस्पर्धा के कारण भारतीय मेडिकल छात्र तेजी से देश छोड़ रहे हैं। भारत में छात्र भयंकर प्रतिस्पर्धा के कारण विदेशों में विकल्प तलाशते हैं, अक्सर उन देशों में जहाँ चिकित्सा नियम ढीले होते हैं।

चूँकि भारत में हर 22 आवेदकों के लिए केवल एक मेडिकल सीट है, इसलिए 20,000 से अधिक छात्र हर साल चीन, रूस और यूक्रेन जैसे देशों में विदेश में अध्ययन करने के लिए मजबूर हैं। लेकिन कई अंतराष्ट्रीय मेडिकल स्कूलों में पाठ्यक्रम की असमान गुणवत्ता से छात्रों की रोजगार क्षमता और योग्यता प्रभावित होती है। भारत की स्वास्थ्य सेवा प्रणाली तक विदेशी स्नातकों की पहुँच में देरी होती है क्योंकि उन्हें फ़ॉरेन मेडिकल ग्रेजुएट एग्ज़ामिनेशन पास करना होता है और इंटर्नशिप पूरी करनी होती है। बीते साल फ़ॉरेन मेडिकल ग्रेजुएट एग्ज़ामिनेशन लेने वाले 32,000 भारतीय छात्रों में से केवल 4,000 ही योग्य थे। इन छात्रों और परिवारों के लिए, उच्च ट्यूशन लागत, अस्थिर अर्थव्यवस्थाएँ और कुछ देशों में सुरक्षा सम्बंधी खतरे बोझ हैं। रूस और यूक्रेन के बीच संघर्ष के कारण 24,000 से अधिक भारतीय मेडिकल छात्रों को विस्थापित होना पड़ा, जिसके परिणामस्वरूप वित्तीय नुक़सान और अनिश्चित शैक्षणिक भविष्य हुआ। भारत में डॉक्टरों की कमी बदतर होती जा रही है क्योंकि अधिक विदेशी प्रशिक्षित चिकित्सा पेशेवर वहाँ बेहतर अवसरों के कारण विदेशों में अभ्यास करना पसंद करते हैं। चिकित्सा शिक्षा की घरेलू मांग को पूरा करने के लिए पहला परिवर्तन चिकित्सा सीटों की संख्या का विस्तार करना है। 2025 में 10,000 और मेडिकल सीटें जोड़ी जाएंगी, भारत में 75,000 अतिरिक्त सीटों का पांच साल का लक्ष्य है। वंचित क्षेत्रों में शिक्षा तक पहुँच

बढ़ाने के लिए किफायती मेडिकल कॉलेज स्थापित करने होंगे। नए सरकारी मेडिकल कॉलेज खोलने और टियर-2 और टियर-3 शहरों में एम्स के विस्तार से चिकित्सा शिक्षा तक पहुँच बढ़ी है।

उच्च गुणवत्ता वाले निर्देश और उचित लागत को बनाए रखते हुए निजी निवेश को प्रोत्साहित करना होगा। कैरिबियन और मणिपाल कॉलेज ऑफ़ मेडिकल साइंसेज (नेपाल) जैसे संस्थान प्रदर्शित करते हैं कि भारतीय संस्थान पब्लिक, प्राइवेट, पार्टनरशिप मॉडल के तहत घरेलू स्तर पर विकसित हो सकते हैं। अधिक खुली प्रवेश प्रक्रियाओं और कई प्रवेश मार्गों को लागू करके नीट पर निर्भरता कम करना ज़रूरी है। चयन मानदंडों को व्यापक बनाने के प्रयास में राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग द्वारा ब्रिज कोर्स और वैकल्पिक प्रवेश प्रणाली का सुझाव दिया गया है। भारतीय छात्रों की सेवा के लिए भारतीय विश्वविद्यालयों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय परिसरों को बढ़ावा देना होगा। आईआईटी और मणिपाल समूह के अंतरराष्ट्रीय विस्तार से एक ऐसा मॉडल सुझाया गया है, जिसमें भारतीय मेडिकल स्कूल भारतीय नियमों के तहत अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काम करते हैं।

चिकित्सा शिक्षा और इंटर्नशिप को मज़बूत करने के लिए, हमें ऐसे सुधारों को लागू करना चाहिए जो उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवा के प्रावधान की गारंटी देते हैं। भारतीय चिकित्सा शिक्षा को अंतरराष्ट्रीय मानदंडों के अनुरूप लाना और ग्रामीण क्षेत्रों में अनिवार्य इंटर्नशिप की आवश्यकता है। रोगी देखभाल और व्यावहारिक कौशल पर ज़ोर देने के लिए, 2019 में योग्यता-आधारित चिकित्सा शिक्षा (सीबीएमई) पाठ्यक्रम लागू किया गया था। अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं, नैदानिक अनुभव और चिकित्सा संकाय प्रशिक्षण में पैसा लगाना ज़रूरी है। एम्स और एनएमसी सुधारों द्वारा मेडिकल कॉलेजों के लिए आधुनिक सिमुलेशन लैब और ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म की आवश्यकता है। एकरूपता की गारंटी के लिए सरकारी और निजी मेडिकल स्कूलों का नियमित मूल्यांकन ज़रूरी है।

एनएमसी द्वारा प्रशासित नेशनल एग्जिट टेस्ट (एनईएक्सटी), भारत और विदेशों दोनों से मेडिकल स्नातकों के लिए लाइसेंसिंग परीक्षाओं को मानकीकृत करने का प्रयास करता है। शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में बेहतर कामकाजी परिस्थितियाँ, प्रोत्साहन और अधिक वेतन प्रदान करना आवश्यक है। प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना (पीएमएसएसवाई) वंचित क्षेत्रों में एम्स जैसे संस्थान स्थापित करना चाहती है। प्रशिक्षण और स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करना अति आवश्यक है। ई-संजीवनी टेलीमेडिसिन पहल की बदौलत दूरदराज के क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवा वितरण में सुधार हुआ है, जिसने 14 करोड़ से अधिक परामर्शों को सक्षम किया है। मेडिकल सीटें बढ़ाने, निजी कॉलेज ट्यूशन को नियंत्रित करने और एफएमजी एकीकरण को मज़बूत करने की तीन-आयामी रणनीति आवश्यक है। संकाय मानकों और मेडिकल सीट वितरण के सम्बंध में एनएमसी के 2023 के सुधार सकारात्मक क़दम हैं। इसके अलावा, ग्रामीण सेवा को प्रोत्साहित करना और सार्वजनिक-निजी भागीदारी बनाना भारत की स्वतंत्रता की गारंटी देते हुए गुणवत्ता और पहुँच में सुधार कर सकता है। भारत से चिकित्सा शिक्षा प्राप्त करने के लिए इस प्रवास के बारे में मेरी कोई बुरी नहीं है। भारत में, चिकित्सा शिक्षा बेहद महंगी है। प्रवेश की बाधाएँ तर्कहीन हैं। मुझे ऐसा लगता है कि बहुत से और छात्र डॉक्टर बनने में सक्षम हैं। भारत में और अधिक डॉक्टरों की सख्त ज़रूरत है, खासकर उन लोगों की जो देश के ग्रामीण इलाकों में काम करने के इच्छुक हैं। स्वास्थ्य सेवा में इन देशों की उपलब्धियों को देखते हुए, मध्य एशिया में चिकित्सा शिक्षा खराब नहीं है।

यदि वे भारतीय छात्रों के नामांकन का उपयोग क्षमता उपयोग बढ़ाने और अतिरिक्त आय उत्पन्न करने के लिए करते हैं, तो वहाँ के कॉलेज अधिक प्रभावी और स्थायी रूप से कार्य करेंगे। अगर इससे भारतीय छात्रों के एक समूह को डॉक्टर बनने में मदद मिलती है तो यह दोनों पक्षों के लिए जीत वाली स्थिति है। असफलता की भी संभावना है। कुछ लोग भारत में काम करने की आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। कुछ उप-एजेंट या निजी ठेकेदार अधिक छात्रों को आकर्षित करने के प्रयास में कुछ प्रासंगिक जानकारी को रोक सकते हैं। तब आपातकालीन स्थितियाँ हो सकती हैं, जैसे कि चीन में कोविड-19 महामारी या यूक्रेन में युद्ध। इनके परिणामस्वरूप छात्रों के एक समूह को महत्वपूर्ण नुक़सान उठाना पड़ सकता है। भारत सरकार की नीति आपातकालीन स्थितियों में भी छात्रों की मदद करने में बहुत अच्छी नहीं है। विदेशों में चिकित्सा शिक्षा के सम्बंध में भारत सरकार की एकमात्र कार्यवाही भारत में अभ्यास के लिए योग्यता परीक्षा को और अधिक कठोर बनाना है। यह सवाल विवादास्पद है कि ऐसी परीक्षा कितनी कठिन होनी चाहिए। मुख्य मुद्दा यह है कि क्या भारत में पर्याप्त योग्य चिकित्सा पेशेवर हैं या क्या इसका उद्देश्य लोगों को विदेशों में चिकित्सा शिक्षा प्राप्त करने से रोकना है।

राजनीति

डॉ. रमेश ठाकुर

सदस्य, राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान भारत सरकार

भाजपा का 'चौंकाऊ परंपरा' का विजयी सच

भारतीय जनता पार्टी के शीर्ष नेतृत्व में भारी मंथन और विचार-विमर्श के पश्चात दिल्ली चुनाव परिणाम के 12वें दिन बाद आखिरकार रेखा गुप्ता को मुख्यमंत्री बनाने का ऐलान हुआ। मुख्यमंत्री के नाम पर भारतीय जनता पार्टी की चौंकाऊ शैली का सिलसिला विभिन्न राज्यों की तरह दिल्ली में भी जारी रहा। भाजपा के जीते 48 विधायकों में शायद कोई एकाध नाम छूटा हो, जिनका नाम मुख्यमंत्री के दावेदार के तौर पर सोशल मीडिया में न तैरा हो। बड़ा कयास तो प्रवेश वर्मा को लेकर था। लेकिन अंत में वह पिछड़ गए। क्यों पिछड़ें? इसका जवाब किसी के पास नहीं? आठ फरवरी के चुनाव परिणाम के दिन से लेकर 19 तारीख की देर शाम तक मुख्यमंत्री के नाम को लेकर भाजपा ने सस्पेंस बरकरार रखा। जैसे पिटारे से नाम बाहर निकला, सभी चकित रह गए। ऐसा नाम जिसकी कल्पना तक किसी नहीं की?

मुख्यमंत्री के नाम का सस्पेंस 12वें दिन खत्म किया गया। सप्ताह भर तक नाम को गुप्त रखा गया? पार्टी ने विचार करके और आरएसएस की सिफारिश पर हीशालीमार से विधायक चुनी गईं रेखा गुप्ता के नाम की घोषणा की। हालांकि, वरिष्ठता के लिहाज से रेखा गुप्ता अन्य विधायकों के मुकाबले बहुत जुनियर हैं। रेखा के नाम का जब ऐलान हुआ, तो कई दावेदारों के चेहरों के रंग उड़ गए। प्रवेश वर्मा मुख्यमंत्री की रेस में सबसे अव्वल थे, वह भी नाम सुनकर हक्के-बक्के हुए। जबकि, संघ ने प्रवेश के नाम पर मुहर पहले से लगा हुई थी, पर मोदी-शाह सहमत नहीं थे। असहमति के बाद संघ ने किसी महिला को मुख्यमंत्री बनाने का विकल्प दिया। जिस पर भाजपा ने रेखा गुप्ता का नाम फाइनल किया। वैसे, दिल्ली की राजनीति के अलावा बाहर रेखा गुप्ता से लोग अपरिचित हैं। वह शालीमार बाग विधानसभा से पहली मर्तबा जीती हैं।

भाजपा ने एक और नई परंपरा शुरू की है। चुनाव जीतने के बाद राज्यों में किसी बड़े चेहरे को मुख्यमंत्री के पद पर न नहीं बैठाएंगे? जबकि, अंदरखाने इस परंपरा से वह नेता असहज और बेहद नाखुश हैं जो जीत में बड़ी भूमिका अदानिभाते हैं। सीएम पद के दावेदारों में दिल्ली में भी कुछ बड़े और प्रचलित नाम थे लेकिन सभी नकारे गए। मोदी-शाह के फैसले के बाद पार्टी का अन्य कोई महत्वाकांक्षी विधायक शायद ही रेखा गुप्ता का विरोध करने का

अब दुस्साहस कर पाए? सीएम बनने के बाद रेखा गुप्ता को भी अपना सियासी कार्यकौशल दिखाना पड़ेगा। पार्टी ने चुनाव अभियान में दिल्ली वालों को बहुतेरे सब्जबाग दिखाए हैं। उन्हें पूरा करने की जिम्मेदारी उन पर होगी। फ्री की सौगातें, पेयजल समस्या से निपटना, बिजली संकट, यमुना की सफाई, बेरोजगारी जैसे बड़े मसलों पर उनकी राजनीतिक परीक्षा दिल्ली की जनता लेगी। परीक्षा आम आदमी पार्टी की भी है। विपक्षी भूमिका में कितना कारगर साबित होंगे, ये उन्हें प्रूफ करना होगा।

भाजपा का चुनाव जीतने के बाद अंत तक मुख्यमंत्री के नाम को सार्वजनिक नहीं करने की 'चौंकाऊ परंपरा' इस समय चर्चाओं में है। ये सिलसिला बीते कुछ वर्षों से उन्होंने जारी रखा है। हालांकि इसके फायदे-नुकसान का गणित उन्हें ही पता होगा? पिछले ही साल मध्य प्रदेश और राजस्थान में भी इसी शैली ने सबको चौकाया था। एमपी में डॉ. मोहन यादव, राजस्थान में पंडित भजनलाल शर्मा को सामने लाकर पार्टी ने प्रदेशों में खलबली मचा दी थी। उन तीनों राज्यों के निर्णयों में एक बात तो कॉमन थी, जो कतई भी चौंकाती नहीं? दरअसल, तीनों ही मुख्यमंत्री आरएसएस और भाजपा की राजनीतिक-संस्कृति में पले-बढ़े नेता हैं? तीनों नाम संघ-भाजपा की आपसी सहमति से तय हुए। पेशे से वकील रेखा गुप्ता सालों से अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से जुड़ी रहीं हैं। संघ के नेताओं से भी उनके संबंध बेहतरीन बताए जाते हैं।

हरियाणा के जींद जिले स्थित नंदगढ़ में जन्मी रेखा गुप्ता को लेकर भाजपाने एक मास्टर स्ट्रोक खेला है इस समय तकरीबन राज्यों में भाजपा की हुकूमतें हैं, जिनमें किसी में कोई महिला मुख्यमंत्री नहीं हैं। इसलिए राजधानी में महिला को मुख्यमंत्री बनाकर उस कमी को भाजपा ने दूर किया है। क्योंकि विपक्षी दल ये आरोप लगाते आए थे कि भाजपा महिला सशक्तिकरण की बात तो करती है, पर निभाती नहीं? पार्टी ने जाति-समीकरण को देखकर ही रेखा गुप्ता का सीएम के लिए चुनाव किया है। क्योंकि वह वैश्य समाज से वास्ता रखती हैं। दिल्ली में वैश्य बहुतायत संख्या में हैं। पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल भी वैश्य थे, उनकी काट पार्टी ने रेखा के जरिए की है। वैश्य समुदाय से जुड़े अन्य नेता के नाम पर भी मंथन हुआ। जैसे कि अगर अनुभवी राजनेता विजेंद्र गुप्ता को मुख्यमंत्री बनाया जाता, तब भी इस समीकरण को साध सकते थे। लेकिन महिला होने के नाते रेखा गुप्ता का पलड़ा विजेंद्र गुप्ता से भारी पड़ा।

भविष्य की चुनौतियों की जहां तक बात है। तो उससे लड़ने के लिए न सिर्फ मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता को जमीन पर उतरना पड़ेगा। बल्कि भाजपा की पूरी मशीनरी को भी सामूहिक रूप से दिल्ली में मोर्चा संभालना होगा। क्योंकि पार्टी ने चुनाव में वादों की बौछार की हुई है। सभी वादों को पूरा करना होगा। वादे पूरे इसलिए करने होंगे, क्योंकि दिल्ली को राजनीतिक पाठशाला कहते हैं। केंद्रीय मीडिया भी यहीं बसती है। नेता-नगरी से लेकर तमाम पावर-पैसा यहीं है। उन सभी की नजरें टिकी रहेंगी। इसके बाद भाजपा को बिहार भी कूच करना है। दिल्ली का मौजूदा बजट 76 हजार करोड़ के आसपास है जिसमें बेतहाशा वृद्धि नई सरकार को करनी पड़ेगी, तभी सभी वादों का खर्च उठा पाएगी सरकार। महिलाओं को नगद पैसे देना, पेंशन में बढ़ौतरी, बिजली-पानी फ्री, बस फ्री, प्रेग्नेंट महिलाओं को पैसा देना इत्यिदी। रेखा गुप्ता की राजनीति अभी तक नगर निगम तक सीमित रही। बड़े औहदे का उन्हें अनुभव नहीं है। हालांकि, उनकी निजी शख्सियत खांटी भाजपाई की रही है। पर, राष्ट्रीय नेतृत्व वाली छवि से दूर? उनके भाषणों में उग्रता, मुखरता और लड़कपन हमेशा से दिखा। तभी तो, उनके नाम की घोषणा के बाद सोशल मीडिया पर उनके पुराने विवादास्पद व आपत्तिजनक भाषणों को 'एक्स' से उठाकर लोग शेयर कर रहे हैं। पर देखा जाए जो मौजूदा राजनीतिक संस्कृति में इस तरह के कमेंट्स न सिर्फ अब पसंद किए जाते हैं, बल्कि उन्हें योग्यता के तौर पर देखा जाता है। निगम में उनके द्वारा माइक तोड़ने की घटना, केजरीवाल को अनाप-शनाप कहने वाले बयान भी सोशल मीडिया पर तैर रहे हैं। बहरहाल, दिल्ली की राजनीति में अब चुनौतियों का दौर सत्ता पक्ष और विपक्षी पार्टी 'आप' दोनों के लिए शुरू होगा? हारने के बाद आम आदमी पार्टी और विजय प्राप्ति के बाद भाजपा, दोनों दिल्ली में अपने-अपने राजनीतिक वजूद को बचाने और बढाने में जुटेंगी। कांग्रेस के समझ भी चुनौतियां हैं वह भी उभरने की कोशिश करेगी। देखते कौन-कौन अपनी परीक्षा में सफल होगा या विफल?

भक्ति के बाजार में ऑफरों की बरसात

कटाक्ष

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा उरतृप्त

लेखक व्यंग्यकार हैं।

सूरज की पहली किरण के साथ, शहर के मशहूर 'मोक्ष बाजार' में चहल-पहल शुरू हो गई। बाजार के मुख्य द्वार पर लिखा था, 'यहाँ हर पाप की माफी का ऑफर - आज और अभी!' पोस्टर में एक संत दिख रहे थे, जिनके हाथ में 'साल का सबसे बड़ा मोक्ष मेला' का बैनर था। उनके चेहरे पर वही मुस्कान थी, जो सिर्फ व्यापारियों के चेहरों पर होती है।

जैसे ही श्रद्धालु अंदर घुसे, एक जोरदार आवाज गूंजी, 'आइए, पापों कीधुलाई कराइए। पहली सेवा फ्री, दूसरी पर 50 प्रतिशत छूट!' धर्मस्थल अब तीर्थ नहीं, बल्कि एक शॉपिंग मॉल में तब्दील हो चुका था। हर कोने में आस्था की दुकानें सजी थीं।

पहली दुकान थी 'गंगा जल स्पा।' दुकान के मालिक ने सफाई दी, 'हमारे गंगा जल में स्नान करने से आपके सारे पाप धुल जाएंगे। बस 999 रुपये में 10 मिनट का स्नान। अगर स्नान के साथ प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो सिर्फ 499 रुपये एक्स्ट्रा।' ग्राहक लाइन में लगे थे, जैसे टिकट खिड़की पर मेला लग गया हो।

दूसरी दुकान थी 'पाप कटौती केंद्र।' यहाँ विभिन्न पापों के लिए अलग-अलग दरें थीं। चोरी का पाप 200 रुपये, झूठ बोलने का 150 रुपये, और घूसखोरी का पाप 500 रुपये। दुकानदार ने गर्व से बताया, 'यहाँ क्रेडिट कार्ड से भी पेमेंट की सुविधा है। ईएमआई पर पापमुक्ति का ऑफर भी है।'

बाजार के बीचों-बीच एक विशाल मशीन लगी थी, जिस पर लिखा था, 'पाप धोने की ऑटोमैटिक मशीन।' श्रद्धालु मशीन के पास जाकर अपनी पर्ची डालते, और मशीन उन्हें एक पुर्ज़ा निकाल कर देती, जिसमें लिखा होता, 'आपके पाप सफलतापूर्वक धुल गए हैं। अब आप अगले सप्ताह तक पाप कर सकते हैं।' भीड़ इतनी ज्यादा थी कि मशीन का स्टॉक खत्म होने की घोषणा हो गई।

बाजार में एक कोने में 'भक्त कलेक्शन' नाम की दुकान थी। यहाँ भगवान की मूर्तियों पर भारी छूट थी। 'तीन मूर्तियाँ खरीदें, चौथी फ्री!' दुकानदार ने प्रचार किया, 'यह ऑफर सिर्फ आज के लिए है। जल्दी करें, कहीं भगवान आउट ऑफ स्टॉक न हो जाएं।' भक्तों ने धक्का-मुक्की करके मूर्तियाँ खरीदनी शुरू कर दीं।

एक कोने में 'मोक्ष काउंटर' था, जहाँ पंडित जी बैठे थे। उनके पास एक बड़ी सी किताब थी, जिसमें भक्तों के पापों का हिसाब लिखा था। एक भक्त ने पूछा, 'पंडित जी, मेरा पाप कितना बचा है?' पंडित जी ने चश्मा लगाकर जवाब दिया, 'तुम्हारे पाप का बैलेंस 35 प्रतिशत बचा है। 65 प्रतिशत पिछले महीने के मेले में कट चुका है।'

बाजार के अंत में, एक विशाल मंच पर धर्मगुरु जी प्रकट हुए। उन्होंने माइक पर घोषणा की, 'भक्तों, अगले महीने से हमारे बाजार में वीआईपी मोक्ष कार्ड की शुरुआत हो रही है। इस कार्ड से आप बिना लाइन में लगे सीधे स्वर्ग की टिकट कटा सकते हैं।' भक्तों ने ताली बजाई। किसी ने पूछा, 'गुरु जी, इसकी कीमत क्या होगी?' गुरु जी मुस्कुराए, 'स्वर्ग के लिए कीमत की चिंता मत करें, यह आपके जेब के अनुसार होगा।'

दिन खत्म होते-होते बाजार की सारी दुकानें खाली हो चुकी थीं। पंडित, गुरु, और दुकानदार अपने-अपने पैसे गिनने में व्यस्त थे। भक्तगण संतुष्ट होकर लौट रहे थे, मानो उन्होंने सच में स्वर्ग की एक झलक देख ली हो। कहीं दूर से एक आवाज आई, 'धर्म व्यापार है, और भक्ति उसका सबसे बड़ा उत्पाद।'

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) -विनोद तिवारी
कार्यकारी प्रधान संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

प्रो. आरके जैन 'अरिजीत'

लेखक व्यंग्यकार हैं।

नैतिकता का मुखौटा : पहनावा नहीं, असल में सोच ही खोखली

शहर के प्रतिष्ठित उद्यान में संध्या वेला के समय बुजुर्गों की एक विशिष्ट सभा जमती थी, जिसे आदरपूर्वक 'संस्कृति रक्षक मंडली' की संज्ञा दी गई थी। ये अनुभवी सज्जन अपने समय के गहन विचारक माने जाते थे, जिनका प्रत्येक संवाद युवाओं के क्षीण होते संस्कारों पर चिंता व्यक्त करने के लिए ही होता था। उनकी दृष्टि में परंपराएँ समाज की आधारशिला थीं, और आधुनिकता एक भयावह आँधी की भाँति भारतीय संस्कृति को तहस-नहस कर रही थी।

आज की चर्चा विशेष रूप से गंभीर थी। वर्माजी ने अपना चश्मा ठीक करते हुए गर्म चाय की चुस्की ली और भारी स्वर में बोले, 'समाज का नैतिक पतन अब चरम पर पहुँच चुका है। देखिए, इन दिनों की बहुएँ और बेटियाँ कैसे कपड़े पहन रही हैं! घूँघट तो अब इतिहास बन चुका है, साड़ी का स्थान जींस-टॉप और स्कर्ट ने ले लिया है। माता-पिता ने बच्चों को पूरी तरह खुला छोड़ दिया है, इसलिए ये दिन देखने पड़ रहे हैं।'

शर्माजी ने उनकी बात को बल देते हुए सिर हिलाया, 'बिल्कुल सही कह रहे हैं आप! संस्कारों की धज्जियाँ उड़ चुकी हैं। पहले की नारियाँ लज्जा और मर्यादा का प्रतीक थीं, अब देखिए, पश्चिमी संस्कृति ने सब कुछ बर्बाद कर दिया है। आजकल की पीढ़ी को परंपराओं का कोई ज्ञान ही नहीं रहा।' पार्क में उपस्थित अन्य बुजुर्ग भी इस गंभीर विमर्श में शामिल हो गए। किसी ने कहा, 'पहले बहुएँ ससुर के सामने सिर झुकाकर खड़ी होती थीं, अब तो बेझिझक फैशन परेड करती हैं!' तो कोई बोला, 'आजकल के युवक भी कहाँ कम हैं! कान में बाली, अजीबो-गरीब हेयरस्टाइल और आधुनिकता के नाम पर अनुशासनहीनता। ये सब बदलाव समाज को बर्बाद कर रहे हैं।' संस्कृति की रक्षा के संकल्प के साथ इस सभा का समापन हुआ। सभी अपने घरों को रवाना हुए, मन में यह दृढ़ विश्वास लिए कि वे समाज को नैतिक पतन से बचाने के लिए कटिबद्ध रहेंगे।

रात्रि के समय वर्माजी जैसे ही घर पहुँचे, श्रीमती वर्मा प्रसन्न मुद्रा में मोबाइल लेकर उनके पास आईं, 'सुनिए, देखिए, बेटे और बहू की तस्वीरें आई हैं। बहू कितनी प्यारी लग रही है इस ड्रेस में!' वर्माजी ने उत्सुकता से मोबाइल स्क्रीन की ओर देखा। बहू ने घुटनों तक की स्टाइलिश ड्रेस पहनी थी, बाल खुले थे, हल्का मेकअप था, और चेहरे पर आत्मविश्वास झलक रहा था। वर्माजी का चेहरा खिल उठा। 'वाह! हमारी बहू कितनी ग्रेसफुल और मॉडर्न लग रही है। समय के साथ बदलाव जरूरी है, पहनावे से संस्कार थोड़े ही बदलते हैं! आत्मविश्वास मायने रखता है, और आजकल का फैशन ही यही है। हमें नई पीढ़ी की सोच को खुले मन से अपनाना चाहिए।'

श्रीमती वर्मा ने विस्मय से उनकी ओर देखा। 'अभी कुछ घंटे पहले आप कह रहे थे कि बहुओं को साड़ी पहननी चाहिए और घूँघट में रहना चाहिए, और अब इतनी आधुनिक सोच?' वर्माजी ने मुस्कुराते हुए कहा, 'अरे भाग्यवती, समाज में कुछ बातें कहनी पड़ती हैं, लेकिन घर में हमें खुश रहना चाहिए। वैसे भी, हमारी बहू पढ़ी-लिखी और समझदार है, उसे अपनी मर्जी से जीने देना चाहिए!' श्रीमती वर्मा हल्की मुस्कान के साथ रसोई की ओर बढ़ गईं। उन्होंने अब समझ लिया था कि संस्कारों की दुहाई सिर्फ़ दूसरों को देने के लिए होती है, खुद पर लागू करने के लिए नहीं। वर्माजी के चेहरे पर आत्मसंतोष की चमक थी- बाहर वे संस्कृति के रक्षक थे और घर में प्रगतिशील विचारों के प्रवक्ता।

दरअसल, यही समाज की असली मानसिकता है। दूसरों की बेटियाँ मर्यादा और संस्कारों की बेड़ियों में रहें, लेकिन अपनी बहू-बेटियाँ आधुनिक बनें, आत्मनिर्भर बनें। जब बात दूसरों के घर की हो, तो भारतीय संस्कृति पर लंबा प्रवचन दिया जाए, लेकिन जब अपने घर की बात आए, तो वही पाश्चात्य सभ्यता 'समय के साथ चलने' का प्रतीक बन जाए।

संस्कारों का झंडा उठाने वाले अक्सर अपनी ही सुविधानुसार नियम गढ़ते और तोड़ते हैं। आदर्शों की दुहाई केवल तब तक दी जाती है, जब तक वह खुद पर लागू न हो। यही दोहरा चरित्र समाज की जड़ों में गहराई तक समाया हुआ है-जहाँ नैतिकता सिर्फ़ दिखावे के लिए है और सिद्धांत अवसर के अनुसार बदल जाते हैं। पहनावा नहीं, असल में सोच ही खोखली हो चुकी है।

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर विशेष

भाषा मैत्री से बढ़ेगी विश्व मैत्री

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक भारत के महामहिम राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी रह चुके हैं। संप्रति पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय, बठिंडा के डॉ. अंबेडकर चेयर में चेयर प्रोफेसर हैं।

भाषाओं का अपना सौन्दर्य है, और साम्राज्य भी। विश्व में भाषाएँ न होतीं तो मनुष्य अपने आपको अभिव्यक्त कर ही नहीं पाते। लगभग 9 हज़ार भाषाएँ हमारे दिलों पर राज करती हैं और हम मनुष्य उनके माध्यम से सबके हृदय में स्थान बना पते हैं। विश्व में भाषाओं को लेकर की जाने वाली राजनीति इस प्रकार बेवजह की प्रैक्टिस है। यदि सकारात्मक लोग हों तो निश्चय ही भाषा अस्मिता-विमर्श का मुद्दा न होकर सांस्कृतिक सरोकार के रूप में व्याख्यायित की जाएगी। भाषा का महत्व अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का रजत जयंती समारोह यही इस वर्ष की थीम वैश्विक स्तर पर स्वीकार की गयी है। चूंकि पृथ्वी पर सरोकार बढाने का दायित्व भाषाओं का रहा है। सरोकार और सामंजस्य बनाने में भाषाएँ बहुत मददगार साबित हुई हैं।

वैश्वीकरण और सामाजिक परिवर्तनों के कारण कई भाषाओं के लुप्त होने का खतरा यूनेस्को हमेशा व्यक्त करता रहा है। शिक्षा प्रणाली किसी की मातृभाषा में सीखने के अधिकार का समर्थन करती है। जिन छात्रों को जिस भाषा में पढ़ाया जाता है, जिसे वे पूरी तरह से समझते हैं, वे बेहतर समझ, जुड़ाव और महत्वपूर्ण सोच की कौशल के साथ तैयार होते हैं। बहुभाषी शिक्षा का अपना महत्वा है। स्वदेशी भाषाओं के लिए स्वयं को तैयार करना भी ज़रूरी है। शिक्षा और संस्कृति के बीच गहरे संबंध को बढ़ावा देती भाषाएँ समावेशी और न्यायसंगत समाजों का निर्माण करती हैं।

संयुक्त राष्ट्र की छः आधिकारिक भाषाओं से पूरा विश्व परिचित है, ऐसा नहीं है। लेकिन इन्हें वैश्विक स्तर पर अपना महत्व एवं अभिप्राय अभिव्यक्त के लिए बड़ा मंच मिला। यूनेस्को ने जिन 8,324 भाषाओँ को आज भी जीवंत होने की बात स्वीकारी है, वे भाषाएँ बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। भाषाओँ के साथ बोलियों का तादात्म्य होता है। जो भाषाएँ ज्यादा समय तक बने रहने में आज अपने आपको सक्षम बता रही हैं, उनकी ताकत उनकी बोलियाँ हैं। आज विश्व की 10 अरब से अधिक की आबादी यह मानती है कि किसी एक भाषा का अधिकार नहीं है। कोई भी देश यह दावा नहीं कर सकते कि उनके देश की भाषाएं विश्व की भाषा बनने में सक्षम है। लेकिन भाषाओं में रचे जा रहे साहित्य, सोच, विचारणा अनेक चहारदीवारी को तोड़कर अपनी शब्द शक्ति व अभिव्यंजना से एक छोर से दूसरे छोर पर जाकर अपनी जगह बनाई हैं, यह पढ़ा-लिखा सृजनधर्मी बौद्धिक वर्ग मानता है। क्लासिक जो रचे गए उनमें यह शक्तियां विद्यमान रहीं। वे अपना महत्व, अपने प्रभाव को जमाये बिना नहीं रहीं। इसीलिए आज अच्छे महत्वाकांक्षी देश अपने इंटैलक्चुअल्स को अच्छे साहित्य रचने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। अच्छे सिद्धांतों को प्रतिपादित व प्रकाशित करने पर बल देते हैं। वे देश या वे लोग अपनी भाषाओं को निर्बाध बना ही नहीं सकते जो अपने बौद्धिक समाज पर धन खर्च करने से बचते हैं या अच्छे साहित्यकारों का सम्मान करने से डरते हैं।

भाषाओं के माध्यम से अपनी अस्मिता व पहचान बनाने की इच्छाशक्ति वाले देश ज्यादा शक्तिशाली होते हैं। चीन की जनशक्ति व भारत की जनशक्ति अपनी-अपनी भाषाओं पर भी गर्व करती है लेकिन भारत और चीन में एक फर्क है कि चीन अपने समस्त कार्य चीनी भाषा में करने में शर्म नहीं करते, भारत के लोग अपनी भाषा में काम करने, वार्तालाप करने, अभिभाषण करने में शर्म करते हैं। अपने अस्तित्व को ज्यादा समय तक जीवित रखने के लिए अपनी भाषा में काम करने वाला चीन इसीलिए ज्यादा कुछ कर पाया है। भारत का अकादमिक समुदाय अंग्रेजी भाषा में ही ज्यादा से ज्यादा सीखने-सिखाने की होड़ में लगा हुआ है। विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा में बोलने वाले अध्यापक उन्हीं अपने अध्यापक साथियों के बीच हेय दृष्टि से देखे जाते हैं। दक्षिण के लोग और बंगाल व ओड़िसा के लोग हिंदी में बोलने और लेक्चर देने से कतराते हैं। वामपंथ को

बीमारी रही है अंग्रेजी की। वामपंथी विचारधारा ने हिंदुस्तान की अकादमिक माहौल को अंग्रेजी में रंग दिया। जब से भारत में बीजेपी सरकार आई है यही वामपंथी और दक्षिण के लोग, ओड़िसा के लोग और बंगाली हिंदी में बोलने के लिए विवश हुए हैं। अभी भी विश्वविद्यालय, कॉलेज में अंग्रेजी में ही स्वीकार्यता है। भारत के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह मजबूरी बन गए हैं कि अंग्रेजी दा हिंदी में बोलने, लिखने, समझने के लिए विवश हुए हैं क्योंकि प्रधानमंत्री व गृह मंत्री द्वारा हिंदी में सभी काम किया जा रहा है। मजबूरी में जीने वाली जनशक्ति कभी भी अपना भला नहीं कर पाती। इसे कार्य-संस्कृति का हिस्सा बनाने की रणनीति व अपनी भाषा में गौरवबोध की अन्तश्चेतना कब जागृत होगी, पता नहीं।

विश्व में जितने भी देशों में भाषाओँ की मृत्यु हो रही है, उसकी जिम्मेदार वहां की सरकारें हैं। सरकारें स्वतः अपनी भाषाओँ के लिए कार्य नहीं करतीं। अधिकांश देशों में औपनिवेशिक भाषाओँ का आज भी आधिपत्य बने रहना इस बात का प्रमाण है कि वहां की कौमें अभी भी उपनिवेश से मुक्त नहीं हो सकी हैं। बाज़ार के कारन बहुत से देशों की भाषाओं ने अपनी जगह बनायीं है। छोटे नारे, लोक में व्यापार को बढ़ाने के लिए आए, वे नारे भाषाओँ को ज्यादा प्रभावी सहयोग नहीं दे सकते। भाषाएँ तो लोक से यदि व्याकरण व अलंकार के साथ समाज में समाविष्ट होती हैं, स्वीकार्य होती हैं और सम्मान की विषयवस्तु बनती हैं तो ही अपना स्वाभाविक उन्नयन पाती हैं। यह कार्य सरकारें योजनाबद्ध तरीके से करतीं तो दम तोड़ने वाली भाषाओँ में से अधिकाँश भाषाएँ आज भी हमारे बीच होतीं।

अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का जमाना आ गया है। इस युग की सबसे खूबसूरत बात यह होगी कि भाषाएँ जो अपना दम तोड़कर हम सबसे मुक्त होने के कगार पर हैं, उन्हें सुरक्षित करने की कोशिश शुरू हो। सरकारें यदि इनके माध्यम से भाषाओँ की सुरक्षा कर पाएंगी तो अब जो बची भाषाएँ हैं उन्हें हम सुरक्षित रख सकेंगे। इसके लिए संयुक्त राष्ट्र-यूनेस्को और भाषा एडवोकेट साथ आकर कार्य करेंगे, तो ही यह संभव होगा। यह वर्ष मातृभाषा का रजत जयंती वर्ष है तो ऐसी योजनाओं को बढ़ावा देने का यह वर्ष है। बहुभाषिकता को भी ज्यादा महत्व देने का वर्ष है। जब बहुपक्षवाद के माध्यम से पूरी पृथ्वी की सभ्यताएं इस कोशिश में हैं की सतत विकास के लक्ष्य को हम सब हासिल करें और परस्पर वैश्विक स्तर पर के हमारे लक्ष्य एक हों तो ऐसे समय में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भाषाओं के साथ मैत्री करने का यह वर्ष है। भाषाओं के साथ मैत्री करने से विश्व में मैत्री, शांति व परस्पर विकास के नए अध्याय लिखे जा सकेंगे। इसलिए इस रजत जयंती वर्ष को सभी देश भाषा मैत्री वर्ष के रूप में क्यों न अपनाएं और यह सन्देश भी दें कि हम सब एक-दूसरे की भाषाओं को सुरक्षित करने के अभियान में एक-साथ हैं। एआई की अपनी क्षमता के साथ भी सक्षम देश भाषाओँ के संरक्षण के लिए काम करते हैं तो निश्चय ही वे एक दूसरे के द्विपक्षीय व बहुपक्षीय सहयोगी साबित होंगे। भाषा-मैत्री की यह वैश्विक संधि निश्चय ही सभी के सुंदर भविष्य के लिए नए इनिशिएटिव के रूप में परिभाषित होगी।

मातृभाषा दिवस पर विशेष

बहुभाषिक भारतः शिक्षा और संस्कृति के बीच सेतु

स्मृति मिश्रा

लेखक वर्तमान में लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन, नई दिल्ली में बहुभाषी शिक्षा इकाई प्रमुख हैं।

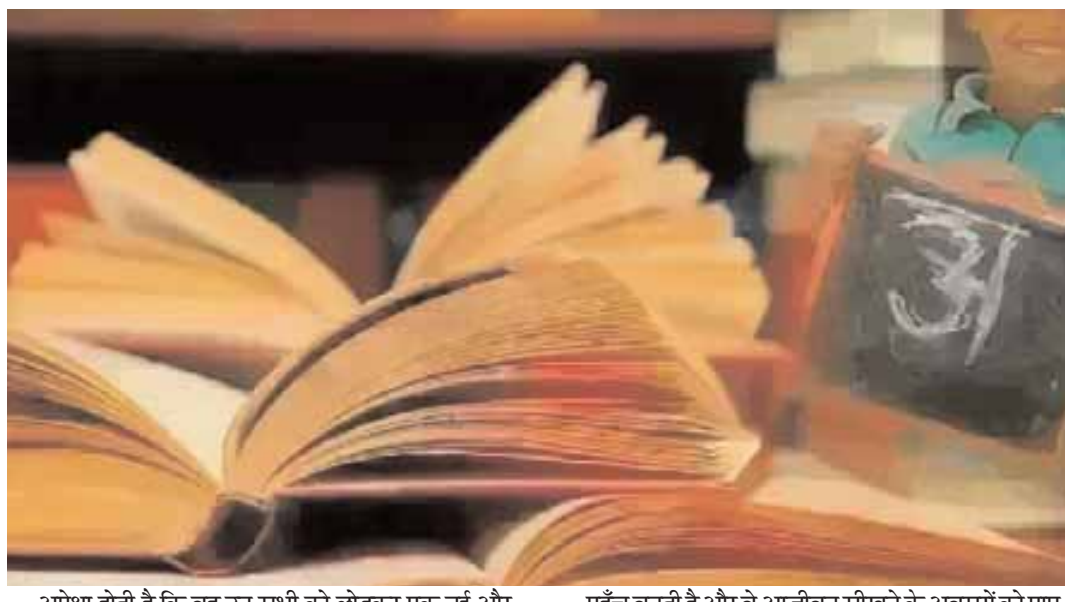

पिछले दिनों काम के सिलसिले में झारखंड जाना हुआ और वहाँ से लातेहार और लोहरदगा ज़िलों में भी गई। किसी समय ये दोनों ज़िले ओराँव जनजाति और उनके द्वारा बोली जाने वाली कुँड़ुख़ भाषा के लिए जाने जाते थे पर अब स्थिति बदल गई है। अब नई पीढ़ी, जो स्कूल जा रही है, नागपुरी बोलती-समझती है। जब लोगों से बातचीत की तो पता चला कि कुँड़ुख़ तो अब बुज़ुर्गों तक ही सीमित हो गई है। यह बदलाव पिछले कुछ वर्षों में हुआ है और अब जहाँ झारखंड से सटे राज्य ओडिशा में ओराँव जनजाति कुँड़ुख़ (ओडिशा में इसे ओराँव भाषा के नाम से ही जाना जाता है) बोलती है वहीं झारखंड में इस भाषा को बोलने वाले लोग ही नहीं बचे।

भाषाएँ अस्मिता, संचार, सामाजिक एकीकरण, शिक्षा और विकास के लिए एक रणनीतिक महत्व रखती हैं। अपनी तमाम जटिलताओं के साथ भी भाषाएँ आमजन को जोड़कर रखने और विकसित होने में मदद करती हैं। इसके बावजूद बढ़ते वैश्वीकरण ने कई भाषाओं को ख़तरे में डाल रखा है। भारत जैसे बहुभाषिक-बहुसांस्कृतिक देश में पहले से ही भाषाओं को सामाजिक स्तर के अनुसार विभिन्न श्रेणियों में बाँटकर रखा गया है उस पर जब 'एक देश-एक भाषा' जैसे विचार आने लगते हैं तो देश की कई भाषाओं एवं संस्कृतियों को अपना वजूद छोड़ना पड़ता है। भाषा और संस्कृति एक-दूसरे की पूरक हैं और एक पर ख़तरा दूसरे के ख़त्म होने का मार्ग प्रशस्त करता है। जब भाषाएँ फीकी पड़ने लगती हैं तो सांस्कृतिक विविधता का समृद्ध भंडार भी ख़त्म होने लगता है। अवसर, परंपराएँ, स्मृति, सोच और अभिव्यक्ति के अनूठे तरीके - बेहतर भविष्य सुनिश्चित करने के लिए मूल्यवान संसाधन - सब ख़त्म होने लगते हैं।

यह वर्ष अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का 25वाँ वर्ष है और विश्व की तमाम भाषाओं, जिसमें गैर-प्रमुख भाषाएँ भी शामिल हैं, के महत्व और जीवन में उनकी उपयोगिता का जश्न मनाने का वर्ष है। भाषाएँ शिक्षा और सतत विकास के लिए आवश्यक हैं और ये एक बुनियादी संसधान के रूप में काम करती हैं जिसके माध्यम से ज्ञान स्थानांतरित किया जाता है और संस्कृतियाँ संरक्षित होती हैं। इसके बावजूद एक तथ्य ये भी है कि देश की केवल 22 भाषाएँ ही भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में दर्ज हैं जबकि यहाँ 1369 मातृभाषाएँ हैं।

बचपन से ही जिस भाषा, जिस संस्कृति और संदर्भों के साथ एक बच्चा जुड़ा होता है, स्कूल में प्रवेश करते ही उससे अपेक्षा होती है कि वह उन सभी को छोड़कर एक नई और किसी-किसी संदर्भ में बिल्कुल अपरिचित भाषा एवं नए संदर्भों में सीखना शुरू करे। वर्तमान स्थिति में लगभग 30 प्रतिशत बच्चे एक ऐसी भाषा में सीखने को मजबूर हैं जिसे वे नहीं समझते। लगभग 25 प्रतिशत बच्चे अंग्रेज़ी माध्यम स्कूलों में पढ़ते हैं जिन्हें स्कूल के बाहर अंग्रेज़ी का कोई एक्सपोजर नहीं है। इसके इतर, हम सभी ये जानते हैं कि सीखने के परिणामों में सुधार के लिए महत्वपूर्ण है कि शिक्षा प्रणाली किसी की मातृभाषा में सीखने के अधिकारों का समर्थन करे। जब बच्चों को उस भाषा में पढ़ाया जाता है जिसे वे पूरी तरह से समझते हैं तो वे बेहतर समझ, जुड़ाव और समालोचनात्मक चिंतन कौशल प्राप्त कर पाते हैं। हालाँकि, बढ़ते वैश्वीकरण के संदर्भ में नई भाषाओं को सीखना और एक बहुभाषिक व्यक्ति के रूप में परिणित होना भी आवश्यक है। इसमें बहुभाषी शिक्षा की एप्रोच और रणनीतियाँ महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। बहुभाषी शिक्षा की एप्रोच में सीखना परिचित भाषा से शुरू होकर अन्य भाषाओं तक बढ़ता है। बहुभाषी शिक्षा न केवल बच्चों की मदद करती है बल्कि शिक्षा और संस्कृति के बीच के गहरे संबंध को भी सुदृढ़ करती है जिससे अधिक समावेशी एवं न्यायसंगत समाजों का निर्माण होता है। यह एप्रोच ग़ैर-प्रमुख, अल्पसंख्यक और स्वदेशी भाषाओं के संरक्षण में भी सहायता करती है जिससे सभी के लिए शिक्षा तक समान पहुँच बनती है और वे आजीवन सीखने के अवसरों को प्राप्त कर पाते हैं।

बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक समाज अपनी भाषाओं के माध्यम से अस्तित्व में हैं जो उन्हें अपने पारंपरिक ज्ञान एवं संस्कृतियों को लंबे समय तक प्रसारित और संरक्षित करने में मदद करती है। बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक समाज को बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि पहली बार स्कूलों में आने वाले बच्चों को उनकी भाषा में सीखने के अवसर प्रदान किए जाएँ और परिचित भाषा से अपरिचित भाषाओं को सीखने का मार्ग प्रशस्त किया जाए। यह कार्य बहुभाषी शिक्षा की एप्रोच और रणनीतियों द्वारा आसानी से किया जा सकता है जिसकी पैरवी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-फाउंडेशनल स्टेज 2022 भी करती है। यदि भाषाओं का यह वृहद् भंडार किन्हीं कारणों से संकुचित किया जाता है तो हमें अपनी समृद्ध संस्कृतियों को खोने के लिए भी तैयार रहना होगा।

बहुभाषिकता हमारे देश की अस्मिता है। इसे संजोकर रखना और इसे संवर्धित करना हम सभी की ज़िम्मेदारी है। इस अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर हम सभी को एक संकल्प लेना चाहिए कि अपने भविष्य को हम अधिक सहिष्णु और न्यायसंगत समाज की सौगात देंगे और तब शायद हम विविधता में एकता के विचार को सही अर्थों में जी रहे होंगे।

मातृभाषा-संस्कार, संस्कृति और अस्मिता की त्रिवेणी

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर विशेष

बाल मुकुन्द ओझा

वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस हर साल 21 फरवरी को मनाया जाता है। यह दिवस देश और दुनिया में भाषाई, सामाजिक और सांस्कृतिक विविधता व बहुभाषिता को प्रोत्साहन देने के साथ मातृभाषाओं से जुड़ी जागरुकता फैलाने के उद्देश्य से मनाया जाता है। इसी को दृष्टिगत रखते हुए अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस की वर्ष 2025 की थीम 'भाषा का महत्व : अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का रजत जयंती समारोह' रखा गया है। यूनेस्को के मुताबिक देश और दुनिया में 40 प्रतिशत आबादी को उस भाषा में शिक्षा प्राप्त नहीं है जिसे वे बोलते या समझते हैं। फिर भी, बहुभाषी शिक्षा में इसके महत्व की बढ़ती समझ के साथ प्रगति हो रही है, विशेषकर प्रारंभिक स्कूली शिक्षा में, और सार्वजनिक जीवन में इसके विकास के प्रति अधिक प्रतिबद्धता के साथ। आज, 250 मिलियन बच्चे और युवा अभी भी स्कूल नहीं जाते हैं और 763 मिलियन वयस्क बुनियादी साक्षरता कौशल में निपुण नहीं हैं। मातृभाषा शिक्षा सीखने, साक्षरता और अतिरिक्त भाषाओं के अधिग्रहण का समर्थन करती है।

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस प्रत्येक भाषा की गरिमा को स्वीकार करने के लिए मनाया जाता है। यह दिवस हमको इस बात का ध्यान दिलाता है कि भाषा अभिव्यक्ति का साधन मात्र नहीं है यह सांस्कृतिक सेतु भी बनाती है। यूनेस्को द्वारा दुनिया भर के विभिन्न देशों में उपयोग की जाने वाली (पढ़ी, लिखी और बोली जाने वाली) 7 हज़ार से अधिक भाषाओं की पहचान की गई है। इसी बहुभाषीवाद को मनाने के लिए 21 फरवरी का दिन चुना गया है। यूनेस्को के मुताबिक दुनियाभर में 6000 भाषाएं बोली जाती हैं। यूनेस्को अनुसार वर्तमान में कम से कम 2680 देशी भाषाओं के लुप्त होने का खतरा है। एक रिपोर्ट के मुताबिक भारत में लगभग दो हज़ार भाषाएं या बोलिया बोली जाती हैं। इनमें से 42.2 करोड़ लोगों की मातृभाषा हिंदी है।

यह सही है की भाषाओँ की दृष्टि से भारत एक समृद्ध देश है। उत्तर भारत के राज्यों को छोड़कर देश में जितने भी राज्य है वहां की मातृ भाषा हिंदी नहीं है हालाँकि हिंदी को हमने राष्ट्र भाषा के रूप में स्वीकारा है। बंगाल में बंगला, असम में असमी, कर्णाटक में कन्नड़, तमिलनाडु में तमिल ,केरल में मलयालम आंध्र में तेलगु और उड़ीसा में उड़िया का बोलबाला है। कुछ अन्य राज्यों की भाषा भी वहां की स्थानीय भाषा है और वहां हिंदी नहीं बोली जाती। आजादी के बाद यदि हमने अपनी निज भाषा के विकास पर ध्यान दिया होता तो आज हिंदी सम्पूर्ण देश में सर्वत्र मातृ भाषा के रूप में अपना स्थान बना लेती। हमारी गुलाम मानसिकता का ही यह परिणाम था की हिंदी मातृ भाषा का अपना दर्जा हासिल नहीं कर पाई। क्षेत्रीय भाषाओं से हमारा कतई विरोध नहीं है। यदि देश के नागरिक अपनी स्थानीय भाषा को मातृ भाषा के रूप में स्वीकारते है तो यह उनका जन्मसिद्ध अधिकार है। हमारा विरोध तो विदेशी भाषा से है जिसने हिंदी को आगे नहीं बढ़ने दिया। आज आवश्यकता इस बात की कि हम विश्व मातृ भाषा दिवस जरूर मनाएं लेकिन हिंदी को उसका हक अवश्य दिलाये। दक्षिण के प्रदेश अपनी निज बोली या भाषा को अपनाये इसमें किसी को आपत्ति नहीं है मगर राष्ट्रभाषा के स्थान पर अंग्रेजी को अपनाये यह हमे किसी भी हालत में स्वीकार नहीं है। वे तमिल, कन्नड़ या बंगला को अपनाये हमे खुशी होगी मगर हिंदी के स्थान पर अंग्रेजी थोपे तो यह बर्दाश्त नहीं होगा।

आज आवश्यकता इस बात की है की हम देश की मातृ और जन भाषा के रूप में हिंदी को अंगीकार करे। अपनी अपनी निज भाषा के साथ हिंदी को स्वीकार कर देश को प्रगति पथ और एक सूत्र में पिरोने के लिए अपने स्वार्थ त्यागे और देश के प्रति अपनी अगाध श्रद्धा का परिचय दें। अंतरराष्ट्रीय मातृ भाषा दिवस की सार्थकता इसीमें है कि हम अपनी क्षेत्रीय भाषाओँ की अस्मिता को स्वीकार करने के साथ हिंदी को व्यापक स्वरुप प्रदान कर देश को एक नई पहचान दें। यह देश की सबसे बड़ी सेवा होगी।

सरोकार

सरकार ने दी है मातृभाषाओं को मजबूती

डॉ. संतोष पटेल

लेखक भोजपुरी जन जागरण अभियान के अध्यक्ष हैं।

भारत भाषाओं का देश है। भाषाओं से ही राष्ट्रीय चेतना का निर्माण होता है,इसलिए राष्ट्र और भाषा दोनों का विकास जरूरी है। जैसा कि दुनिया में अनेक भाषाएं विलुप्ति के कगार पर हैं इनको बचाने के लिए संयुक्त राष्ट्रसंघ ने 21 फरवरी को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाने का फैसला किया। यों तो यह तारीख बांग्लादेश के भाषाई आंदोलन के कारण वहां शहीद दिवस के रूप में मनाया जाता है क्योंकि बांग्लादेश बनने से पहले यह क्षेत्र पूर्वी पाकिस्तान कहलाता था परंतु यहां के लोगों ने बांग्ला भाषा और संस्कृति पर पाकिस्तान द्वारा दूसरी भाषा थोपने का मुखर विरोध किया। इस दिन ढाका विश्वविद्यालय के पांच विद्यार्थियों ने अपनी प्राण की आहुति दी थी। भाषा के प्रति अनुपम प्रेम और अद्भुत अनुराग को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ ने इस दिन को अंतराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में मनाने का फैसला किया जो पूरी दुनिया में मनाई जा रही है।

इसमें कोई दो राय नहीं है कि भारत में भाषाओं के ऊपर मंडराते संकट की पहचान भी सरकार ने की है और मौजूदा सरकार ने नई शिक्षा नीति,2020 में भाषा संबंधी अनेक प्रावधानों की संस्तुति की है जिसके माध्यम से भारत में कुछ मातृभाषाएं जो विलुप्ति की कगार पर थीं, उन्हें नवजीवन मिला है। प्राथमिक स्तर से मातृभाषाओं में पढ़ाई का प्रावधान एक क्रांतिकारी कदम है जिससे बच्चों में अपनी मातृभाषा से लगाव बढ़ेगा, संस्कृति के प्रति प्रेम विकसित होगा साथ ही पहचान के प्रति चेतना का विकास होगा और इस तरह पहचान के संकट के समस्या का अंत होगा।

जैसा कि शुरुआत में संविधान की आठवीं अनुसूची में 14 भाषाओं को शामिलकिया गया था परंतु धीरे-धीरे अब 22 भारतीय भाषाओं को सम्मिलित किया चुका है लेकिन इसके इतर सरकार ने शास्त्रीय भाषाओं की एक और श्रेणी वर्ष 2004 में तैयार किया तब से 2013 तक छः भाषाओं यथा तमिल, संस्कृत, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम और उड़िया को उसमें स्थान दिया गया परन्तु वर्ष 2024 में संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने एकमुश्त पांच भाषाओं को शास्त्रीय भाषा श्रेणी में स्थान प्रदान किया है जिसमें पाली, प्राकृत, मराठी, असमिया और बांग्ला भाषाएं हैं। पिछली सरकार की गलतियों को सरकार ने ना केवल दुरुस्त किया बल्कि पाली और प्राकृत जैसी प्राचीन भाषाओं को शास्त्रीय भाषा के श्रेणी में रखकर दुनिया के अनेक देशों से प्रशंसा हासिल की है क्योंकि शास्त्रीय भाषाओं के मापदंड में भाषाओं का 1500 से 2000 वर्ष की प्राचीनता होनी चाहिए उसमें

ये दोनों भाषाएं खरी उतरती है। ध्यातव्य हो कि भगवान बुद्ध की देशना या भगवान महावीर की शिक्षाएं क्रमशः पाली और प्राकृत में हैं जिसका साक्ष्य हमारे पास अशोक स्तम्भ, स्तूप, भित्ति लेखन या शिलालेख में देखा जा सकता है।

इधर इसी महीने संसद में लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला ने घोषणा किया है कि कई भाषाओं में अनुवाद सेवाओं के विस्तार की घोषणा की जिनमें बोडो,डोगरी, मैथिली, मणिपुरी, उर्दू और संस्कृत शामिल है। लोकसभा अध्यक्ष ने यह भी घोषणा की कि आगे सोलह और भाषाओं में एक साथ अनुवाद उपलब्ध कराने पर काम चल रहा है। विदित हो कि अब तक अंग्रेजी और हिंदी के अलावा दसभाषाओं, असमिया, बांग्ला, गुजराती, कन्नड़, मलयालम, मराठी, ओड़िया, पंजाबी, तमिल और तेलुगु में अनुवाद सेवाएं उपलब्ध थी।

अंतर्राष्ट्रीय भाषा दिवस को सार्थकता देते हुए उत्तर प्रदेश सरकार ने विधानसभा की कार्यवाही हिंदी अंग्रेजी के साथ अवधी, बज्र, भोजपुरी और बुंदेली में सुनी जा सकती है। देश में यह ऐसा पहला प्रयोग है इससे जनप्रतिनिधियों को न केवल अपनी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता मिलेगी बल्कि आम नागरिक भी विधानसभा की कार्यवाही अपनी भाषा में सुन सकेगा।उत्तर प्रदेश की सरकार ने इन मातृभाषाओं के भाषाई साहित्य अकादमी को यथाशीघ्र संचालित करने का आश्वासन दिया है इसमें संत तुलसी दास अवधी अकादमी, संत कबीरदास भोजपुरी अकादमी और सूरदास के नाम पर ब्रजभाषा अकादमी स्थापित होने की बात कही गई है। यानी 14 फरवरी के दो दिन पहले उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा लिया निर्णय मातृभाषाओं के प्रति उनकी गंभीरता का परिचायक है। मौजूदा भारत सरकार ने कुछ भाषाओं को शास्त्रीय श्रेणी में रखकर, कुछ भाषाओं के अनुवाद को विस्तार दे कर और उत्तर प्रदेश राज्य सरकार ने भारत में भाषाओं के प्रति संजीदगी दिखलाई है। भाषाओं पर मंडरा रहे संकट के बादल को टालने का स्तुत्य प्रयास किया है और उम्मीद किया जा सकता है भविष्य में भारत सरकार आठवीं अनुसूची में भी कुछ भाषाओं यथा भोजपुरी जैसी बड़ी भाषा को स्थान देगी।

संक्षिप्त समाचार

शासन हमें भूमि आवंटित करे, सेन समाज ने सौंपा ज्ञापन

बैतूल। सर्व सेन समाज कल्याण एवं विकास समिति के तत्वावधान में समाज के प्रतिनिधिमंडल ने कलेक्टर नरेन्द्र सूर्यवंशी से मिलकर सेन समाज के आराध्य श्री सेन महाराज के मंदिर निर्माण कार्य में आ रही रुकावट एवं शिकायतों को लेकर ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में उल्लेख है कि समाज द्वारा काशी तालाब के समीप नगरपालिका द्वारा दी गई है। जिसमें सेन पार्क भूमि पर 5 वर्षों से सेन पार्क में पूजा अर्चना एवं विधि विधान से कार्य किया जा रहा उसके बावजूद कुछ लोगों द्वारा बार-बार आपत्ति एवं शिकायते की जा रही है जिसके कारण समाज में आक्रोश व्याप्त है। प्रतिनिधिमंडल ने कलेक्टर बैतूल के समक्ष मांग रखी कि उक्त भूमि को शासन द्वारा हमें आवंटित किया जाए जिससे हम उसे भूमि पर हमारे आराध्य श्री सेन महाराज के मंदिर का निर्माण कार्य कर सके। इस अवसर पर समाज के अध्यक्ष रमेश बोरखेडे, सचिव रामनारायण उच्चसरे कोषाध्यक्ष एमएल बघेले युवा अध्यक्ष दीपक मालवी आदि मौजूद थे।

गायत्री शक्तिपीठ में सौंपे गए दायित्व

नरसिंहपुर। गायत्री शक्ति पीठ में आयोजित गुरुदेव श्रीराम शर्मा आचार्य व्याख्यान माला कार्यक्रम में प्रमुख ट्रस्टी आचार्य थंम्मन सिंह शर्मा का जन्मदिन वरिष्ठ परिजनों की उपस्थिति में मनाया गया। इसी कार्यक्रम में शांति कुंज के निर्देशानुसार उपजोन प्रभारी नरेश तिवारी के द्वारा मंजू श्रीवास्तव को जिला कन्या कौशल प्रभारी एवम भारती कौरव को सह प्रभारी का दायित्व सौंपे जाने पर मन्दिर प्रबंधन समिति प्रमुख श्रीमती हेमलता शर्मा एवं उपस्थित परिजनों ने सम्मानित किया । इनके साथ नरसिंहपुर में कन्या कौशल विस्तार हेतु शामिल सदस्य मातृशक्ति जिनमें कल्पना चौकसे शंकरचार्य वार्ड प्रभारी, ओमवती मालवीय रोंसरा प्रभारी, अर्चना सोनी कामथ वार्ड प्रभारी, निशा सोनी भगत सिंह वार्ड प्रभारी, विभा सोनी गयादत्त वार्ड प्रभारी, सकुन नामदेव बजरंग वार्ड प्रभारी, माधुरी यादव महिला मण्डल रोंसरा प्रभारी, पार्वती दुबे महिला मण्डल शांति नगर प्रभारी, रिद्धि ब्यौहार पुंसवन सह प्रभारी का भी रोली तिलक लगाकर सम्मान किया गया।

केन्द्रीय जेल में विधिक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

नरसिंहपुर। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण एवं म.प्र.राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के निर्देषानुसार एवं माननीय प्रधान जिला न्यायाधीश एवं अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण श्री अखिलेश शुक्ला के मार्गदर्शन में केन्द्रीय जेल नरसिंहपुर में विधिक जागरूकता एवं साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया। उक्त शिविर में पंचम जिला न्यायाधीश श्री वैभव सक्सेना द्वारा कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विचाराधीन बंदियों एवं दोषसिद्ध बंदियों को प्राप्त विधिक अधिकारों के संबंध में अवगत कराते हुए जिला प्राधिकरण नरसिंहपुर द्वारा बंदियो को निःशुल्क प्रदान की जा रही विधिक सहायता पर प्रकाश डाला। चीफ लीगल एड डिफेंस काउंसिल श्री विष्णु श्रीवास्तव द्वारा बंदियो को विधिक सेवा प्राधिकरण के कार्यो एवं उद्देश्यों से अवगत कराया एवं उन्हे अवगत कराया कि लीगल एड क्लीनिक में जेल विजिटिंग लॉयर एवं पैरालीगल वालेंटियर नियुक्त रहेगे जो बंदियों को विधिक सहायता प्रदान करने मे सहायता करेंगे।

बैतूल पुलिस द्वारा अवैध मादक पदार्थों के विरुद्ध अब तक की सबसे बड़ी कार्रवाई

लगभग एक करोड़ रुपए मूल्य का अवैध मादक पदार्थ जब्त

बैतूल। पुलिस ने अफीम की अवैध खेती और सप्लाई के एक बड़े रैकेट का भंडाफोड़ किया है। पुलिस ने 1 करोड़ की अफीम के साथ 8 लोगों को गिरफ्तार किया है। इनमें तीन ढाबा संचालक भी शामिल हैं। ये ढाबा संचालक हाईवे पर आने-जाने वाले ड्राइवरों को अफीम की खुराक देते थे। एसपी निश्चल एन झारिया के अनुसार, मुखबिर की सूचना पर पुलिस पिछले एक महीने से इस खेती की जानकारी जुटा रही थी। पुलिस कंट्रोल रूम में आयोजित पत्रकार वार्ता में पुलिस अधीक्षक निश्चल एन. झारिया ने बताया कि यह कार्रवाही पुलिस महानिदेशक मध्यप्रदेश कैलाश मकवाना के नशे के विरुद्ध सख्ती से चलाए जा रहे अभियान के तारतम्य में तथा पुलिस महानिरीक्षक नर्मदापुरम रेंज के मार्गदर्शन में पुलिस अधीक्षक बैतूल निश्चल एन. झारिया के निर्देशानुसार, विभिन्न थाना क्षेत्रों में विशेष टीमों का गठन कर कार्यवाही की गई। अभियान लगभग एक माह से चल रहा था, जिसमें जिले के सभी वरिष्ठ अधिकारी शामिल थे। पुलिस ने अब तक लगभग एक करोड़ रुपए मूल्य का अवैध मादक पदार्थ जब्त किया है। गिरफ्तार आरोपियों से पूछताछ एवं खुफिया इनपुट के आधार पर जल्द ही और भी बड़ी कार्यवाहियां की जाएंगी।

कुल 75 लाख की अफीम खेती पर कार्रवाई

एसपी निश्चल एन झारिया ने बताया कि रानीपुर थाना अंतर्गत ग्राम सडक़वाड़ा में 45 लाख रुपये मूल्य की अवैध अफीम की खेती का भंडाफोड़ किया है। पुलिस ने यहां कार्रवाही करते हुए 44,340 अफीम के पौधे, जिनका कुल वजन 2748 किलोग्राम और अनुमानित कीमत 45 लाख रुपये है। इस मामले में भिकारी धुर्वे पिता ओझा धुर्वे, उम्र 66 वर्ष, निवासी ग्राम सडक़वाड़ा, थाना रानीपुर पर धारा 8/18 (सी), 25 एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया। वहीं ग्राम धसेड़ में छतन उईके द्वारा अवैध रूप से अफीम की खेती की जा रही है। पुलिस ने 49 बैग अफीम के पौधे जिनका कुल वजन 1703 किलोग्राम और अनुमानित कीमत 30 लाख रुपये है। पुलिस ने इस मामले में छतन उईके, पप्पू चकवान और प्रियांशू उर्फ प्रशू चकवान को गिरफ्तार किया है। इसके अलावा ममता डाली बंगाली, निवासी चोपना को गिरफ्तार किया गया। सभी आरोपियों के विरुद्ध धारा 8/18 (सी), 25 एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज कर विवेचना जारी है।

डोडाचूरा के साथ आरोपी गिरफ्तार

पुलिस ने राजस्थानी ढाबे पर छापेमारी कर आशाराम उर्फ आशू निवासी राजस्थान को 200 ग्राम डोडाचूरा के साथ पकड़ा। आरोपी के विरुद्ध धारा 8/15 एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया। इसी तरह समराथल राजस्थानी ढाबा शाहपुर पर पुलिस ने रितेश विश्नोई निवासी हरदा को 260 ग्राम डोडाचूरा के साथ गिरफ्तार किया। धारा 8/15 एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया। थाना कोतवाली पुलि ने 274 ग्राम डोडाचूरा के साथ आरोपी गिरफ्तार किया। सूचना के आधार पर पुलिस ने हनुमान विश्नोई, निवासी जोधपुर, राजस्थान को 274 ग्राम डोडाचूरा के साथ गिरफ्तार किया। धारा 8/15 एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया। एसपी श्री झारिया ने कहा कि पुलिस का यह अभियान आगे भी निरंतर जारी रहेगा। आम जनता से अपील है कि किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना तुरंत पुलिस को दें।

वन विभाग की बड़ी कार्रवाई, 243 किलो जंगली सूअर का मांस जब्त, छह आरोपी गिरफ्तार

बैतूल। जिले में वन विभाग और सतपुड़ा टाइगर रिजर्व की संयुक्त टीम ने बड़ी कार्रवाई करते हुए 243 किलो जंगली सूअर का मांस बरामद किया है। इस मामले में अंतरराज्यीय शिकारियों और मांस तस्करों के नेटवर्क का खुलासा हुआ है। कार्रवाई के दौरान छह आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है, जिनके पास से चार मोटरसाइकिल और पांच मोबाइल फोन भी जब्त किए गए हैं। सभी आरोपियों को न्यायालय में पेश कर न्यायिक रिमांड पर भेज दिया गया है। यह कार्रवाई 17-18 फरवरी 2025 की दरमियानी रात वनमंडलाधिकारी दक्षिण बैतूल विजयानन्तम टी. आर. और उपसंचालक सतपुड़ा टाइगर रिजर्व पूजा नागले के मार्गदर्शन में की गई। भैंसदेही, मुलताई और सावलमेंढा परिक्षेत्र में संयुक्त टीम गठित कर सघन गश्ती अभियान चलाया गया। इस दौरान गुड़गांव चौपाटी के पास अवैध गतिविधियों में संलिप्त परतवाड़ा महाराष्ट्र के विशाल और कैलाश को हिरासत में लिया गया। पूछताछ में उन्होंने बताया कि खरीदार मिथुन निवासी चोपना, बैतूल ने मांस खरीदा और चला गया। इसके बाद टीम ने पिपरिया गांव के पास मिथुन मंडल को दो बड़े जूट बैग के साथ मोटरसाइकिल पर जाते हुए पकड़ा। एक अन्य कार्रवाई में परतवाड़ा महाराष्ट्र के झनकलाल और किसन को गुड़गांव-भैंसदेही रोड पर पकड़ा गया। तलाशी के दौरान उनके पास से दो जूट बैग में जंगली सूअर का मांस मिला। पूछताछ में सप्लायर मुकेश जनवारे का नाम सामने आया। मुकेश जनवारे और सुमित पचेल गुड़गांव की ओर आ रहे थे, तभी जनोना बैरियर पर टीम ने उन्हें रोकने की कोशिश की। मुकेश जनवारे अपना मोबाइल छोड़कर भाग निकला, लेकिन सुमित पचेल को गिरफ्तार कर लिया गया। पूरे अभियान में कुल 243 किलो जंगली सूअर का मांस बरामद किया गया। आरोपियों के बयान सहायक वन संरक्षक के समक्ष दर्ज किए गए और उन्हें भैंसदेही न्यायालय में पेश कर जेल भेज दिया गया। इस कार्रवाई में प्रशिक्षु आईएफएस अधिकारी और प्रभारी परिक्षेत्र अधिकारी भैंसदेही नीरज निश्चल के नेतृत्व में वनमंडल दक्षिण बैतूल और सतपुड़ा टाइगर रिजर्व की टीम ने हिस्सा लिया। इसमें उपवनमंडलाधिकारी मुलताई संजय साल्वे, उपवनमंडलाधिकारी भैंसदेही देवानंद पाण्डेय, परिक्षेत्र अधिकारी सतपुड़ा टाइगर रिजर्व निशांत जैन, वन परिक्षेत्र अधिकारी मुलताई नितिन पंवार, वन परिक्षेत्र अधिकारी सांवलमेंढा मानसिंह परते और अन्य वन अधिकारियों व कर्मचारियों की अहम भूमिका रही।

आयुष्मान योजना से रानी को मिला जीवनदान

पैरालिसिस अटैक आने से राइट साइड का भाग हो गया था सुन्न

बैतूल। 16 वर्षीय आदिवासी किशोरी को पैरालिसिस अटैक आने से परिजन लगभग मरणासन्न स्थिति में लेकर सिम्स अस्पताल पहुंचे थे, जहां पर आयुष्मान योजना के तहत किशोरी का ना सिर्फ उपचार हुआ, बल्कि आज वह पूरी तरह से स्वस्थ्य जीवन भी जी रही है। किशोरी के परिजनों ने बताया कि अगर उनके परिवार का आयुष्मान कार्ड नहीं होता तो निश्चित रूप से किशोरी की जान पर बन आ सकती थी। उन्होंने बताया कि आयुष्मान कार्ड होने की वजह से उनकी बच्ची का निःशुल्क उपचार किया गया। जबकि वह 14 दिनों तक शहर के लिंक रोड, टिकारी स्थित सिम्स अस्पताल में भर्ती रही। इसके बाद भी उन्हें कोई पैसा अलग से नहीं लगा। परिजनों ने बताया कि अगर उनके पास आयुष्मान कार्ड नहीं होता तो वह बच्ची का उपचार निजी अस्पताल में नहीं करा पाते, क्योंकि उनकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। उन्होंने उपचार करने वाले डॉ. श्याम सोनी और आयुष्मान योजना प्रारंभ करने वाले पीएम नरेंद्र मोदी को भी धन्यवाद दिया है। बच्ची का उपचार करने वाले सिम्स अस्पताल के संचालक एमडी, डीएनबी डॉ. श्याम सोनी ने बताया कि छिंदवाड़ा जिले के जुन्नारदेव तहसील निवासी किशोरी को पैरालिसिस अटैक आया था। उसका सीटी स्कैन करने पर पता चला कि ब्रेन का लेफ्ट हाफ पार्ट डैमेज हो गया है। उसकी ना सिर्फ जुबान लडखड़ा रही थी बल्कि उसे बार-बार झटके भी आ रहे थे। बच्ची को 7 दिनों तक आईसीयू में रखा गया और लगातार उसको जरूरी मेडीसिन देने के साथ-साथ मानीटरिंग भी की गई। उपचार सफल हुआ और आज बच्ची पूरी तरह से सामान्य जीवन जी रही है। डॉ. सोनी ने बताया कि बच्ची के चाचा को भी हार्टअटैक आने पर सिम्स अस्पताल में ही उनका उपचार किया गया था, इसलिए बच्ची के परिजन उसे भी यहां लेकर आए थे। अब बच्ची पूरी तरह से स्वस्थ्य है।

मां की स्मृति में समाजसेवी हरीश गढ़ेकर ने लायंस चैरिटेबल हॉस्पिटल को दिए दो लाख

बैतूल। बाल कैंसर रोगियों के इलाज और इलाज के दौरान अस्थाई तौर पर उनके परिजनों को रहने के लिए लायंस क्लब चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा लायंस चैरिटेबल हॉस्पिटल का निर्माण किया जा रहा है जिसके लिए गत रविवार को भूमिपूजन कार्यक्रम संपन्न हुआ। भूमिपूजन कार्यक्रम में शामिल लायन हरीश गढ़ेकर ने अपनी मां की स्मृति में इस लायन चैरिटेबल हॉस्पिटल के निर्माण में 2 लाख रुपए दान किए है। उक्त राशि दान करने पर अतिथियों ने श्री गडेकर को शाल एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। भूमिपूजन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में लायंस क्लब के पूर्व अंतर्राष्ट्रीय निदेशक एवं एलसीआईएफ ट्रस्टी लायन जीएस होरा मौजूद थे, वहीं बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल, जन अभियान परिषद उपाध्यक्ष मोहन नगर, विद्या भारती के प्रांतीय संगठन मंत्री अनिल अग्रवाल, डिस्ट्रिक्ट गवर्नर लायन मनीष शाह, लायन श्रवण कुमार, लायन डॉ. जीपीएस होरा, लायन महेश मालवीय , भाजपा जिलाध्यक्ष सुधाकर पवार एवं भूमिदान करने वाले अमृतलाल सोनी कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे। भूमिपूजन कार्यक्रम में शामिल लायन हरीश गडेकर ने अपनी मां की स्मृति में एक कक्ष निर्माण किए जाने हेतु 2 लाख रुपए दान किये। जबकि कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल ने लायन चैरिटेबल हॉस्पिटल हेतु स्वयं की ओर से 11 लाख तथा 20 लाख रुपए विधायक निधि से देने की घोषणा की। इस तरह 31लाख की बड़ी राशि श्री खंडेलवाल की ओर से लाइन चैरिटेबल हॉस्पिटल के लिए मिलेंगे। विधायक श्री खंडेलवाल के बाद लायन चैरिटेबल हॉस्पिटल निर्माण के लिए राशि डोनेट करने वालों में समाजसेवी हरीश गढ़ेकर ने सामने आते हुए अपनी मां स्वर्गीय श्रीमती काशीबाई पत्नी स्व. डीआर गढ़ेकर की स्मृति में उक्त हॉस्पिटल में एक कक्ष निर्माण हेतु 2 लाख रुपए दिये। गौरतलब है कि श्री गढ़ेकर हाल ही में राजस्व विभाग के रेवेन्यू इंस्पेक्टर जैसे महत्वपूर्ण पद से समाजसेवा के क्षेत्र में सक्रिय भागीदारी निभाने के लिए स्वैकक्षिक सेवानिर्वित्त हुए है और तब से ही वे समाजसेवा में अपनी सेवाए दे रहे हैं। श्री गढ़ेकर ने बताया कि लायंस क्लब एक इंटरनेशनल संस्था है, जिनके द्वारा समाजसेवा के क्षेत्र में वृहद स्तर पर सेवा कार्य कर रहे है । उन्होंने बताया कि बैतूल में लायंस चैरीटेबल हॉस्पिटल के लिए लायंस क्लब इंटरनेशनल द्वारा 2 करोड़ 23 लाख रुपए दिए जा रहे हैं। उक्त राशि से लगभग 8 एकड़ भूमि पर लायंस चैरिटेबल हॉस्पिटल का निर्माण होना है जिसके लिए ही यह भूमि पूजन का कार्यक्रम हुआ है।

संत शिरोमणि गाडगे जयंती

बाईक रैली 23 को बैतूल पहुंचेगी, होंगे अनेक कार्यक्रम

बैतूल। अखिल भारतीय धोबी समाज के तत्वावधान मे संत गाडगे सेवा समिति द्वारा संत शिरोमणि गाडगे जी का जन्मोत्सव मनाया जाएगा। इस संबंध में समाज के संभागीय संगठन मंत्री मनीष पटने व ब्लाक अध्यक्ष दशरथ मडुराने ने बताया कि 20 फरवरी को सुबह बाइक रैली संतोष रजक जी संत गाडगे बाबा सेवा समिति संगठन मंत्री सागर और बृजेश रजक केसली ब्लांक अध्यक्ष के नेतृत्व मे सागर से निकलेगी। जो आज शुक्रवार को बैतूल जिले में आएगी और बैतूल मुलताई होकर संत गाडगे बाबा जन्म स्थली अमरावती जिले में शेगाव पहुंचेगी। श्याम सेवतकर और अनिल पपाडकर ने रैली की वापसी में 23 फरवरी को मुलताई कार्यक्रम में शामिल होंगी। श्री गाडगे बाबा मंदिर मुलताई में विभिन्न कार्यक्रम जिसमें सुबह 8 बजे हवन पूजन, 10 बजे पालकी यात्रा नगर भ्रमण, क्रिश मेमोरियल में निःशुल्क शिविर, वर्ष समाज के प्रतिभावान युवाओं और रक्तदाताओं का सम्मान, समाज के युवक-युवती परिचय सम्मेलन आयोजित किया जाएगा।

100 दिवसीय निक्षय शिविर एवं निरोगी काया अभियान की दी गई जानकारी

टीबी की बीमारी को लेकर जागरूकता जरूरी : डॉ. मालवीय

बैतूल। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ रविकांत उइके ने बताया कि गुरुवार को होटल कुणाल में आयोजित प्रेस वार्ता में 100 दिवसीय नि-क्षय शिविर अभियान (7 दिसम्बर 2024 से 23 मार्च 2025 तक) एवं निरोगी काया अभियान की जानकारी दी गई। जिला क्षय अधिकारी डॉ आनंद मालवीय ने बताया कि अभियान के अंतर्गत सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, आरोग्य मंदिरों में प्रतिदिन शिविर लगाकर टीबी मरीजों की स्क्रीनिंग की जा रही है। टीबी के मरीजों को मिलने वाली निःशुल्क दवाइयां एवं नि-क्षय पोषण योजना के अंतर्गत प्रतिमाह शासन द्वारा पोषण आहार के लिये 1 हजार रुपए राशि तथा प्रधानमंत्री टीबी मुक्त अभियान के अंतर्गत सामुदायिक सहायता से पौष्टिक आहार फूड बास्केट प्रदाय किये जा रहे हैं। वर्ष 2025 में जिले को टीबी मुक्त बनाने में योगदान देने के लिए पत्रकारगणों से आग्रह किया गया। डॉ.मालवीय द्वारा क्षय रोग के जीवाणु माइक्रोबैक्टीरियम ट्यूबरकुलोसिस तथा क्षय रोग के संक्रमण राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम के तहत दी जा रही सेवाओं की जानकारी दी गई। उन्होंने फैफडो के क्षय रोग, फैफडों के बाहर का क्षय रोग की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने संभावित टीबी मामलों की पहचान, सघन केस फाइंडिंग, बलगम परीक्षण, नैदानिक उपकरण, डाट्स की व्यवस्थित रणनीति आदि की भी जानकारी दी। डॉ मालवीय ने बताया कि अभियान के दौरान उच्च जोखिम वाली 4,13,330 जनसंख्या की स्क्रीनिंग की जानी थी, लक्ष्य की पूर्ति करते हुये 4,23,698 जनसंख्या की स्क्रीनिंग की गई जो कि 103 प्रतिशत है। अभियान के दौरान 14,184 उच्च जोखिम जनसंख्या वाले टीबी संभावित मरीजों के एक्स-रे किये गये। स्पुटम के लिये 16,086 उच्च जोखिम जनसंख्या वाले टीबी संभावित मरीजों की नॉट टेस्टिंग की गई। एक्स-रे एवं स्पुटम परीक्षण के पश्चात् जिले में 427 पॉजिटिव टीबी मरीजों का इलाज प्रारंभ किया गया। अभियान के दौरान नये एवं पुराने मरीजों को नि-क्षय पोषण योजना के अंतर्गत 701 बेनीफिट प्रदान किये गये। अभियान के दौरान 505 नये नि-क्षय मित्रों का पंजीयन किया गया। 505 नये बने नि-क्षय मित्रों द्वारा 453 फूड बास्केट टीबी का उपचार ले रहे मरीजों को प्रदान किये गये। अभियान के दौरान 5,266 नि-क्षय शिविरों का जिले में आयोजन किया गया।

निरोगी काया अभियान की दी जानकारी: जिला मीडिया अधिकारी श्रीमती श्रुति गौर तोमर ने निरोगी काया अभियान की जानकारी देते हुये बताया कि यह अभियान 20 फरवरी से 31 मार्च 2025 तक संचालित किया जाएगा। अभियान में 30 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के व्यक्तियों का मधुमेह, उच्च रक्तचाप एवं एनएएफएलडी (नॉन एल्कोहलिक फैटी लिवर) की 100 प्रतिशत स्क्रीनिंग एवं रीस्क्रीनिंग की जाएगी। अर्थात तीन बडी बीमारियों, डायबिटीज, ब्लड प्रेशर और लीवर में फैट की स्थिति देखी जाएगी। अभियान के तहत जिले के 354 आयुष्मान आरोग्य मंदिरों (उप स्वास्थ्य केन्द्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, मुख्यमंत्री संजीवनी क्लीनिक) पर हेल्थ केम्प लगाये जाएगे। आशा कार्यकर्ता और एएनएम घर-घर जाकर 30 वर्ष से अधिक उम्र के व्यक्तियों को आयुष्मान आरोग्य मंदिर आने के लिये प्रेरित करेंगी तथा आयुष्मान आरोग्य मंदिर स्वास्थ्य संस्थाओं में उनकी स्क्रीनिंग/रीस्क्रीनिंग की जाएगी। मधुमेह एवं उच्च रक्तचाप के चिन्हित हितग्राहियों को निशुल्क दवाइयां वितरित की जाएगी। इस अवसर पर उप जिला मीडिया अधिकारी महेशराम गुबरेले, जिला पीएमडीटी समन्वयक प्रमोद दरवाई, शाखा प्रभारी परिवार कल्याण भगत सिंह उइके, फार्मासिस्ट उमेश परपाची एवं प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के पत्रकार गण मौजूद रहे।

कुनबी समाज का अंतर्राष्ट्रीय युवक-युवती परिचय सम्मेलन 9 मार्च को

बैतूल। आगामी 9 मार्च को अखिल भारतीय क्षत्रीय लोणारी कुनबी समाज संगठन द्वारा 20वें अंतर्राष्ट्रीय युवक-युवती परिचय सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। यह आयोजन चपाती केंद्र के पास, ई-सेक्टर, भेल बरखेड़ा में होगा, जिसमें देश-विदेश से कुनबी समाज के युवक-युवती, अभिभावक और समाजजन बड़ी संख्या में भाग लेंगे। यह अवसर संगठन के 25 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में रजत जयंती समारोह के रूप में भी मनाया जाएगा। इस आयोजन में मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव, केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया सहित अन्य मंत्री, सांसद, विधायक और गणमान्य अतिथि शामिल होंगे। राष्ट्रीय अध्यक्ष विष्णु राने ने बताया कि यह आयोजन समाज के युवाओं के विवाह हेतु परिचय मंच प्रदान करने के साथ-साथ महिला सशक्तिकरण और स्वास्थ्य जागरूकता को भी बढ़ावा देगा। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में कुनबी समाज महिला मोर्चा द्वारा विशेष हल्दी-कुमकुम कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा, जिसमें समाज की महिलाओं को सम्मानित किया जाएगा। इसके अलावा एक विशाल स्वास्थ्य शिविर भी लगाया जाएगा, जिसमें आयुष्मान कार्ड बनवाने की सुविधा, नेत्र परीक्षण, पैथोलॉजी जांच, सिकल सेल टेस्टिंग, बोन डेंसिटी टेस्ट और विशेषज्ञ डॉक्टरों द्वारा मुफ्त परामर्श व दवा वितरण किया जाएगा।

मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन ने मंत्रालय में ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट की तैयारियों की समीक्षा की।

बागेश्वर धाम में 7 दिन का महाकुंभ, ट्रैफिक प्लान जारी

पीएम मोदी करेंगे कैंसर अस्पताल का भूमिपूजन, राष्ट्रपति देंगी 251 जोड़ों को आशीर्वाद

छतरपुर (नप्र)। छतरपुर के बागेश्वर धाम में 21 से 27 फरवरी तक छठवां बुंदेलखंड महाकुंभ आयोजित किया जा रहा है। यातायात व्यवस्था को सुचारू बनाने के लिए पुलिस ने विशेष इंतजाम किए हैं। सभी बसों को पहाड़िया मैदान स्थित पार्किंग क्रमांक 4 में खड़ा किया जाएगा। वैकल्पिक व्यवस्था के तहत फोरलेन किनारे ग्राम गढ़ा तिगैला के पास पार्किंग क्रमांक 7 और ग्राम गंज के पास पार्किंग क्रमांक 8 का उपयोग किया जाएगा। 23 फरवरी को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 100 बेड के कैंसर अस्पताल का भूमिपूजन करेंगे। 26 फरवरी को महाशिवरात्रि के अवसर पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू 251 जोड़ों को आशीर्वाद देने पहुंचेंगी।

इन पार्किंग में पार्क होंगी गाड़ियां

चार पहिया वाहनों के लिए काव्या गेस्ट हाउस की मुख्य पार्किंग क्रमांक 2 निर्धारित की गई है। वैकल्पिक पार्किंग गंज कदोहा रोड पर क्रमांक 5 और हंस होटल के पास क्रमांक 6 में होगी। ऑटो और बाइक बाईपास तिराहा पार्किंग क्रमांक 3 में खड़ी की जाएंगी।

डायवर्जन के जरिए निकल सकेंगे

राजनगर रेलवे क्रॉसिंग से कोड़ा ग्राम की ओर वाहनों की आवाजाही प्रतिबंधित रहेगी। बागेश्वर से लौटने वाले वाहन पहाड़िया मैदान डायवर्जन पॉइंट से ग्राम कदोहा होते हुए गंज की ओर जाएंगे। वहां से फ्लाईओवर के रास्ते हाईवे पर निकल सकेंगे।

शिवराज ने जल सहेलियों के साथ पौधे लगाए

केंद्रीय मंत्री चार साल से कर रहे हैं पौधारोपण; ओरछा से जटाशंकर तक पैदल जलयात्रा निकाली

छतरपुर (नप्र)। केंद्रीय मंत्री शिवराजसिंह चौहान ने छतरपुर में जल सहेलियों के साथ पौधारोपण किया। बता दें कि शिवराजसिंह चौहान ने मुख्यमंत्री रहते हुए 19 फरवरी 2021 को प्रतिदिन पौधे लगाने का संकल्प लिया था, जिसके चार साल पूरे हो गए हैं। पांचवे साल के पहले दिन उन्होंने जल सहेलियों के साथ पौधा लगाया। पौधारोपण के पूर्व जल सहेलियां ओरछा से जल लेकर पैदल चलकर जटाशंकर धाम तक पहुंचीं। यहां उन्होंने भगवान भोलेनाथ का जलाभिषेक किया। कार्यक्रम में भाजपा कार्यकर्ताओं ने शिवराज सिंह का पुष्प मालाओं से स्वागत किया और जेसीबी की मदद से पुष्प वर्षा की। छतरपुर में जल सहेलियों के कार्यक्रम में पहुंचे केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह का स्वागत किया गया।

शिवराज ने कहा-वृक्ष ही जीवन का आधार: इस अवसर पर शिवराज सिंह ने कहा कि वृक्ष ही जीवन का आधार हैं। वृक्ष हमें ऑक्सीजन देते हैं और मिट्टी का क्षरण रोकते हैं। वे कीट-पतंगों और पक्षियों को आश्रय देते हैं। उन्होंने कहा- वे पिछले चार साल से लगातार पौधे रोप रहे हैं। अब पांचवें साल में जल सहेलियों के साथ पौधे लगाने का सौभाग्य मिला है। उन्होंने लोगों से जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ और पूर्वजों की पुण्यतिथि पर पेड़ लगाने का आग्रह किया। जल सहेलियों की यह पहल पूरे बुंदेलखंड में जल संरक्षण का संदेश दे रही है। मंत्री ने कहा कि जल और मिट्टी का संरक्षण आने वाली पीढ़ियों के लिए जरूरी है।

2021 में अमरकंटक से की थी शुरुआत

अनूपपुर स्थित अमरकंटक से 19 फरवरी 2021 के दिन नर्मदा जयंती पर शिवराज सिंह चौहान ने संकल्प लिया था कि वो अपने दिन की शुरुआत हर दिन एक पौधरोपण से करेंगे। इस पौधारोपण को पूरे चार साल हो गए है। यानि की शिवराजसिंह 1430 दिन से लगातार पौधारोपण कर रहे हैं। बता दें कि मुख्यमंत्री और केंद्रीय मंत्री रहते हुए शिवराजसिंह चौहान ने प्रदेश के साथ ही कई दूसरे राज्यों में भी पौधे लगाए हैं। उनमें उत्तराखंड, तमिलनाडु, नई दिल्ली, उत्तरप्रदेश, पश्चिम बंगाल, गुजरात, केरल, आंध्रप्रदेश आदि शामिल हैं।

इंदौर की गेर के लिए सीएम-मंत्रीमंडल को न्योता

महापौर ने ऐतिहासिक रंगपंचमी खेलने के लिए बुलाया, यूनेस्को में शामिल करने के प्रयास भी तेज

इंदौर (नप्र)। इंदौर में रंगपंचमी पर निकलने वाली गेर में मोहन सरकार के शामिल होने की संभावना है। महापौर पुष्यमित्र भार्गव, विधायक गोलू शुक्ला ने मुख्यमंत्री को पूरी कैबिनेट के साथ गेर में शामिल होने का न्योता दिया है। पिछले साल भी मुख्यमंत्री ने गेर में भाग लिया था और रंगों के इस उत्सव में जमकर होली खेली थी।

बता दें कि, इंदौर में होलिका

दहन के बाद धुलेंडी मनाई जाती है और इसके बाद रंगपंचमी पर गेर निकालने की परंपरा है। इस गेर में लाखों लोग एक साथ होली खेलते हैं। खास बात यह है कि इसे देखने के लिए विदेशों से भी पर्यटक आते हैं। वहीं, इसे यूनेस्को की विश्व धरोहर में शामिल कराने के प्रयास भी जारी है।

इंदौर में रंगों का सबसे बड़ा त्योहार रंगपंचमी पर बनाया जाता है। गेर एक प्रकार का जुलूस होता है, जिसमें सैकड़ों की संख्या में लोग एक साथ निकलते हैं। वहीं इंदौर में गेर निकालने की परंपरा होलकर राजवंश के लोगों ने शुरू की थी। होलकर राजवंश के लोग आम जनता के साथ होली खेलने के लिए सड़कों पर निकलते थे और एक जुलूस की शक्ल में पूरे शहर में भ्रमण कर लोगों के साथ होली खेलते थे, तभी से आज तक इंदौर में रंगपंचमी पर गेर निकालने की परंपरा चली आ रही है।

अग्रवाल समाज का होली मिलन समारोह 19 मार्च को

रंगपंचमी पर मानस उद्यान में उड़ेगा गुलाल, तैयारियों को लेकर बैठक 23 फरवरी को

भोपाल (नप्र)। भोपाल में अग्रवाल समाज का होली मिलन समारोह 19 मार्च को रंग पंचमी के अवसर पर मानस उद्यान लालघाटी में आयोजित किया जाएगा। इस आयोजन की तैयारियों के लिए श्री अग्रवाल स्नेह सम्मेलन समिति ने बैठक बुलाई है।

यह बैठक 23 फरवरी को दोपहर 12 बजे अग्रवाल विश्रांति भवन भोपाल में आयोजित होगी। यहां भोपाल शहर के अग्रवाल समाज के नए अध्यक्ष का चुनाव किया जाएगा। वहीं होली मिलन समारोह की विस्तृत रूपरेखा तैयार की जाएगी।

समिति ने अग्रवाल समाज के सभी सदस्यों से इस बैठक में उपस्थित होने का आग्रह किया है, जिससे आगामी होली मिलन कार्यक्रम को सफलतापूर्वक आयोजित किया जा सके।

जीआईएस समापन पर अमित शाह देंगे एमपी को सौगात

• सांची की होगी नेशनल ब्रांडिंग, एनडीडीबी के साथ होगा एमओयू, एमडी को ट्रेनिंग में भेजा

भोपाल (नप्र)। ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट के समापन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होने भोपाल आ रहे केंद्रीय सहकारिता मंत्री अमित शाह एमपी को दूध संकलन के लिए बड़ी सौगात देंगे। समिट के दौरान ही मध्यप्रदेश सरकार का एनडीडीबी (नेशनल डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड) के साथ एमओयू किया जाएगा और इसके माध्यम से सांची दूध की नेशनल लेवल पर ब्रांडिंग की जाएगी। सरकार ने साफ किया है कि सांची ब्रांड के नाम में कोई बदलाव नहीं होगा। उधर एमपी स्टेट कोआपरेटिव डेयरी फेडरेशन के एमडी को इस एमओयू के पहले ट्रेनिंग पर भेज दिया गया है। कुशाभाऊ ठाकरे अंतर्राष्ट्रीय कन्वेंशन सेंटर में 25 फरवरी को एमपी स्टेट कोऑपरेटिव डेयरी फेडरेशन लिमिटेड एवं संबद्ध दुग्ध संघों और राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के मध्य सहकार्यता अनुबंध (कोलेबोरेशन एग्रीमेंट) किया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इसको लेकर कहा कि राज्य सरकार ने प्रदेश के दुग्ध उत्पादकों की आय दोगुनी करने और दुग्ध उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए यह फैसला किया है। कैबिनेट द्वारा एमपी स्टेट को-ऑपरेटिव डेयरी फेडरेशन लिमिटेड और संबद्ध दुग्ध संघों और राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के मध्य होने वाले सहकारिता अनुबंध (कोलेबोरेशन एग्रीमेंट) पर पहले ही सहमति दे दी गयी है। इस अनुबंध की अवधि 5 साल होगी, जिसका आपसी सहमति से विस्तार किया जा सकेगा।

एग्रीमेंट के बाद यह काम किए जाएंगे

- हर ग्राम पंचायत में कलेक्शन सेन्टर स्थापित किए जाएंगे।
- दुग्ध संघों की प्रोसेसिंग क्षमता में वृद्धि की जायेगी।
- वर्तमान में प्रदेश में दुग्ध समितियों की संख्या 6 हजार है, जिसे बढ़ाकर 9 हजार किया जाएगा।
- एक दुग्ध समिति लगभग 1 से 3 गांव में दुग्ध संकलन करती है, 9 हजार दुग्ध समितियां के माध्यम से लगभग 18 हजार ग्रामों को कवर किया जा सकेगा।
- दुग्ध संकलन भी 10.50 लाख किलोग्राम प्रतिदिन से बढ़कर 20 लाख किलोग्राम प्रतिदिन हो जाएगा।
- एनडीडीबी द्वारा दुग्ध उत्पादक संस्थाओं (एमपीओ) के माध्यम से कवर किए गए गांवों को 1390 से बढ़ाकर 2590 किया जाएगा।
- दूध की खरीद को 1.3 लाख किलोग्राम से बढ़कर 3.7 लाख किलोग्राम प्रतिदिन किया जाएगा।
- दुग्ध संघों की प्रोसेसिंग क्षमता में वृद्धि की जायेगी।
- वर्तमान में डेयरी प्लांट की क्षमता 18 लाख लीटर प्रतिदिन है, जिसे बढ़ाकर 30 लाख लीटर प्रतिदिन किया जाएगा।
- इस तरह अगले 5 सालों में लगभग 1500 करोड़ रुपये का निवेश किया जायेगा।
- दुग्ध उत्पादकों की कुल वार्षिक आय 1700 करोड़ रूपये से दोगुना कर 3500 करोड़ रुपये किये जाने का लक्ष्य रखा गया है। दुग्ध समितियों की संख्या बढ़ाई जायेगी। इन सबके परिणाम स्वरूप दुग्ध उत्पादकों की आय में अप्रत्याशित वृद्धि होगी।
- बीजेपी के संकल्प पत्र पर भी होगा अमल
- बीजेपी ने अपने संकल्प पत्र में प्रदेश में दूध खरीदी तय करने और किसानों को दूध के सही दाम दिलाने का वायदा किया है, जिसे राज्य सरकार ने अपनी प्राथमिकता में लिया है। इस एमओयू के माध्यम से संकल्प पत्र-2023 पर भी अमल किया जाएगा।

जादू-टोने के शक में महिला की पीट-पीटकर हत्या

देवर का परिवार घर से उठा ले गया, लाठी-डंडों से मारा; पति-बेटे, पोते को भी पीटा

सीधी (नप्र)। सीधी में जादू-टोने के शक में लाठी-डंडों से पीट-पीटकर बुजुर्ग महिला की हत्या कर दी गई। इससे पहले आरोपियों ने महिला के लकवाग्रस्त पति को पीटा। बचाने पहुंचे बेटे और पोते को भी पीटा। दोनों की हालत गंभीर है।

घटना कुसमी के ग्राम पिपरहा की है। बुधवार रात करीब 8 बजे ग्राम मेडरा से आए पुष्पराज, दिलीप, संतोष, अजय सिंह और इंद्रभान सिंह, महिला चिराऊंजिया सिंह (80) के घर में घुस गए। चिराऊंजिया के पति श्रीमान सिंह को देखकर हमला कर दिया।

आरोपी बुजुर्ग महिला को घर से एक किलोमीटर दूर पिपरहा मोहल्ले में ले गए। यहां उसे इतना पीटा कि उसने दम तोड़ दिया। जानकारी मिलने पर चिराऊंजिया का बेटा उदयभान सिंह और पोता पृथ्वीराज सिंह मौके पर पहुंचे तो उनसे भी मारपीट की। आरोपी महिला के देवर के बेटे हैं।

बहू बोली- पांच लोगों ने मिलकर हमला किया

मृतक महिला की छोटी बहू आराधना सिंह ने बताया, पांच लोगों ने मिलकर ससुरालवालों पर हमला किया। आरोपी मेडरा से आए थे। कुसमी थाना प्रभारी भूपेश बैस ने बताया कि सभी घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस टीमें लगातार छापेमारी कर रही हैं।

चाचा के परिवार ने किया हमला

मृतक महिला के बड़े बेटे उदयभान सिंह ने बताया, चाचा के पोते समर बहादुर सिंह की एक दिन पहले महाराष्ट्र में मौत हुई थी। 18 फरवरी को अंत्येष्टि की गई। चाचा के परिवार को शक था कि मां ने जादू-टोना किया, इस कारण समर की मौत हो गई। अगले दिन उन लोगों ने घर में घुसकर हमला कर दिया।

ग्रामीणों के आने पर भागे आरोपी

उदयभान सिंह ने बताया, रात करीब 8 बजे मां को कुछ लोग उठाकर ले गए। पड़ोसियों ने मुझे इसकी सूचना दी। मैं बेटे के साथ मौके पर पहुंचा। 5-6 लोग मां को लाठी-डंडों से पीट रहे थे। बचाने गए तो हमसे भी मारपीट की। इस दौरान काफी लोग आ गए। उन्हें देखकर आरोपी भाग गए। पड़ोसी सत्यवान ने बताया कि 18 फरवरी को इंद्रभान ने अपने बेटे समर की अंत्येष्टि में जादू-टोने का आरोप लगाया था। इससे पहले दोनों परिवार में कोई विवाद नहीं था।

मुरैना में श्रद्धालुओं से भरी ट्रैक्टर-ट्रॉली पलटी

करीब 25 लोग सवार होकर सिय-पिय मिलन में जा रहे थे

मुरैना (नप्र)। मुरैना के करह धाम में सिय-पिय मिलन वार्षिक उत्सव के आज (गुरुवार) अंतिम दिन भंडारा पाने जा रहे श्रद्धालुओं का ट्रैक्टर-ट्रॉली हादसे का शिकार हो गई। बगियापुरा गांव के पास सामने से आ रही मारुति कार की टक्कर से ट्रैक्टर अनियंत्रित होकर पलट गया, जिससे ट्रॉली में सवार करीब 25 श्रद्धालु घायल हो गए, सभी की हालत गंभीर है। उन्हें जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

बता दें कि जिले के प्रसिद्ध धार्मिक स्थल करह धाम में सात दिवसीय वार्षिक उत्सव का आज अंतिम दिन था। बड़ी संख्या में श्रद्धालु भंडारे की प्रसादी पाने के लिए पहुंच रहे थे। सुमावली के बिरुआ गांव के श्रद्धालु भी ट्रैक्टर-ट्रॉली से करह धाम जा रहे थे। तभी हादसा हो गया, गनीमत रही कि ट्रॉली के नीचे कोई नहीं दबा, नहीं तो जान भी जा सकती थी। सुमावली से करह धाम जाने वाली सड़क सिंगल लेन है, जिस पर पहले से ही अत्यधिक ट्रैफिक रहता है। आज भंडारे के अंतिम दिन श्रद्धालुओं की भारी भीड़ रही, जिससे सड़क पर अत्यधिक दबाव बढ़ गया।

एमएसएमई विभाग की नवीन स्टार्टअप नीति एवं कार्यान्वयन योजना को मिली मंजूरी

बैतूल। प्रदेश में स्टार्टअप को आत्मनिर्भर और आर्थिक रूप से सशक्त बनाने तथा स्टार्टअप इकोसिस्टम को सुदृढ़ बनाने के लिये मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में मंगलवार को आयोजित मंत्रि-परिषद की बैठक में एमएसएमई विभाग की नवीन स्टार्टअप नीति एवं कार्यान्वयन योजना 2025 को मंजूरी दी गई है। इससे प्रदेश में आर्थिक सशक्तिकरण और आत्मनिर्भरता को नई गति मिलेगी। एमएसएमई मंत्री श्री चेतन्य कुमार काश्यप ने स्टार्ट-अप नीति के मंजूर होने पर मुख्यमंत्री डॉ. यादव और मंत्रि-परिषद के सदस्यों का आभार व्यक्त किया हैं। उन्होंने कहा है कि मध्यप्रदेश के युवाओं के आईडियाज को इस नई नीति से नई उड़ान मिलेगी।

36 घंटे का उपवास रख ट्रेन चला रहे लोको-पायलट

देश भर में चल रहा विरोध, भोपाल रेल मंडल के 1500 का रनिंग स्टाफ भी शामिल

भोपाल (नप्र)। देश भर में लोको पायलेट्स व रनिंग स्टाफ ने लगातार 36 घंटे उपवास करते हुए ट्रेनों का संचालन शुरू कर दिया है। इसकी शुरुआत 20 फरवरी सुबह 7 बजे से हो गई है। जो 21 फरवरी शाम 7 बजे तक रहेगी। इसमें भोपाल रेल मंडल के 1500 रनिंग स्टाफ व लोको पायलेट शामिल हैं। 7वें वेतन आयोग के तहत एएलपी के वेतनमान को आईटीआई डिप्लोमा के समकक्ष किए जाने, 8 घंटे से अधिक ड्यूटी होने पर डबल विश्राम मिलने व छुट्टी को लेकर विरोध-प्रदर्शन किया जा रहा है। जिसको लेकर भोपाल रेलवे स्टेशन पर यह लोको पायलट धरने पर बैठे हैं। सभी लोको पायलट हड़ताल स्थल से ही अपनी-अपनी ड्यूटी पर जा रहे हैं। ऑल इंडिया लोको रनिंग स्टाफ एसोसिएशन ने सरकार को चेतावनी देते हुए कहा है कि यदि उनकी

मांगे पूरी नहीं की गईं तो वे आंदोलन के लिए बाध्य होंगे। संगठन के अनुसार, पूरे देश के 367 डिपो और 36 रेल मंडलों के लोको पायलट एवं सहायक लोको पायलट 21 दिनों का नोटिस दे चुके हैं, जिसके बाद वे भूख हड़ताल और अन्य विरोध प्रदर्शन शुरू करेंगे। एसोसिएशन का कहना है कि 1 जनवरी 2024 से लागू किए गए डिवाल्विंग एलाउंस में 25त्न की कटौती से लोको पायलटों को भारी आर्थिक नुकसान हो रहा है। इसके अलावा, रनिंग स्टाफ के ड्यूटी आवर्स को लेकर भी संगठन में नाराजगी है। उनका कहना है कि आठ घंटे से अधिक ड्यूटी होने पर अतिरिक्त आराम और भत्ते मिलने चाहिए, जो अभी तक नहीं दिए जा रहे हैं। मंडल सचिव एमपी चौधरी ने बताया कि हम लोग 36 घंटे के उपवास पर बैठे हैं। हमारी समस्याओं का रेलवे समाधान नहीं कर रहा है। हम सभी भूखे रहकर काम कर रहे हैं। हम लगातार पिछले चार महीने में कई बार रेलवे के सामने रखा है। इस पर रेल प्रशासन द्वारा जो रवैया अपनाया जा रहा है, इसलिए हम लोग धरने पर बैठे हैं।

एआईएलआरएसए की प्रमुख मांगे

- माइलेज का रेट आरएसी 1980-81 के आधार पर दिया जाए।
- माइलेज रेट में परिवर्तन के लिए नियमबद्ध माइलेज का आकलन कर नई सीमा बढ़ाई जाए।
- 01.01.2024 से टीए के रेट को भी माइलेज रेट के अनुसार संशोधित किया जाए।
- 6वें वेतन आयोग की सिफारिशों के अनुसार भत्तों का पुनः निर्धारण हो।
- 7वें वेतन आयोग के तहत ALP के वेतनमान को ITI डिप्लोमा के समकक्ष किया जाए।
- साप्ताहिक विश्राम 30 घंटे के बजाय 16 घंटे से अधिक दिया जाए।

वनमाली कथा समय व विष्णु खरे सम्मान विशेष

कला, साहित्य एवं संस्कृति के लिए समर्पित वनमाली सृजनपीठ द्वारा भोपाल में आयोजित तीन दिनी साहित्य संस्कृति का समागम का आज अंतिम और अलंकरण का दिन है। जाने माने कवि, लेखक और प्रसिद्ध लेखक, विचारक वनमालीजी के प्रिय शिष्य रहे विष्णु खरे की स्मृति में स्थापित हिंदी के चार लब्धप्रतिष्ठ रचनाकारों को विष्णु खरे सम्मान से सम्मानित किया जाएगा। इसी उपलक्ष्य में इस महती सांस्कृतिक आयोजन का आज दूसरा और अंतिम पन्ना–

विष्णु खरे : जीवन और व्यक्तित्व का समावेशी दस्तावेज

संतोष चौबे

यह कोई संयोग नहीं कि जब खंडवा के डॉ. सी.वी. रामन विश्वविद्यालय ने देश के दो प्रसिद्ध साहित्यकारों पर अध्ययनवृत्ति देने का विचार किया तो उन्होंने ख्यात कहानीकार जगन्नाथ प्रसाद चौबे 'वनमाली' एवं लब्धप्रतिष्ठ कवि विष्णु खरे का चयन किया।

वनमाली और विष्णु खरे दोनों का ही संबंध खंडवा से रहा और विष्णु खरे असल में तो वनमाली जी के छात्र ही थे, जिन्हें उन्होंने अपने भावभीने वक्तव्य में बहुत शिद्दत से याद किया था। वनमालीजी के व्यक्तिगत पुस्तकालय में, जो मेरे पास आज भी सुरक्षित है, विष्णु खरे की कुछ प्रारम्भिक रचनाएँ और उनकी हस्तलिखित पांडुलिपियाँ आज भी देखने को मिल जाती हैं, जिनमें वेस्टलैंड का उनके द्वारा पहले पहल किया गया हिंदी अनुवाद 'मरुभूमि' भी शामिल है, और वनमाली जी के निधन के करीब 30 साल बाद विष्णु खरे से हुई मेरी मुलाकात में उन्होंने बताया था कि उनके पास उस समय भी वनमाली जी की कुछ कहानियाँ हस्तलिखित रूप में तथा कुछ 'जागृति' नामक पत्रिका में प्रकाशित, सुरक्षित रखी हैं। ये गुरु शिष्य का बहुत प्रेम भरा रिश्ता था जो आगे चलकर विष्णु खरे की कविताओं में, जीवन के प्रति उनके दृष्टिकोण में तथा साहित्य और आलोचना के क्षेत्र में उनके गहरे रुझानों में परिलक्षित होता है।

'वनमाली' को याद करते हुए विष्णु खरे ने कहा था, 'जो सबसे बड़ा वरदान उन्होंने मुझे दिया वह था स्कूल की मैग्जीन का सम्पादक बनाना। वे मुझे प्रेस की दुनिया के संपर्क में ले आये और पहली बार मैंने जाना कि प्रिंटिंग प्रेस क्या होती है, पहली बार मैंने जाना कि प्रेस का मालिक क्या होता है, कम्पोजिटर क्या होता है, लैब क्या होती है, कम्पोजिंग कैसे होती है, प्रूफ रीडिंग कैसे होती है, छपाई कैसे होती है और किताब बनकर कैसे आती है। वह दुनिया पहली बार उन्होंने खोली मेरे सामने और उस दुनिया में मैं अब तक मुब्तिला हूं। करीब पचास वर्ष पहले वह मेरी दुनिया थी, उसमें से स्याही की बू आती थी, कागज की खुशबू आती थी और एक बहुत बूढ़ा कम्पोजिटर चश्मा लगाये हुए वहाँ बैठता था। उस प्रेस के मालिक का नाम साद भाई था। अजीब नाम था। मराठा था वह। उससे मराठी बोलता था मैं और उस अनुभव पर मैंने सबसे पहले एक कहानी लिखी, उसका नाम था 'दो शिकायतें एक कहानी' और यह कहानी 'कहानी' नाम की पत्रिका में छपी जो उस वक्त बहुत प्रसिद्ध हुआ करती थी। उसके पहले मेरी एक और कहानी छप चुकी थी जिसका नाम था 'भिखमंगे' जो कि चौबे साहब ने देखी थी और उसको सराहा था। उन्होंने हमेशा मुझे बराबरी का दर्जा दिया लेकिन मैं कभी इतना बदगुमान नहीं हुआ कि मैं उनसे कोई बदतमीजी करूँ या कोई लिबर्टी लूँ। इसी तरह उन्होंने मुझे चौबीस घंटे अंग्रेजी बोलने को मौका भी दिया और उस भाषा के प्रति मेरा बड़ा संकोच और झिझक खोली। मेरे जीवन में 'जगन्नाथ प्रसाद चौबे वनमाली की केन्द्रीय भूमिका है।'

तो इस तरह वनमाली और विष्णु खरे एक ऐसा गहरा साहित्यिक और मानवीय संबंध बनाते हैं जो आज के समय में विलक्षण प्रतीत होता है और विष्णु खरे की उन आँखों से टपकता है जब पचास बाद वे वनमाली कथा सम्मान में बोलने खड़े होते हैं। बाद में उनका कवि व्यक्तित्व विकसित हुआ जिसमें खंडवा और वनमालीजी पर भी कुछ कविताएँ उन्होंने लिखीं और उन्हीं की तरह स्पष्टवादी होने का खिताब हासिल किया।

विष्णु खरे

दोनों ही साहित्यकारों के रचनात्मक अध्ययन के लिए उन्हीं के तरह के ख्यातनाम समीक्षक, आलोचक व्यक्तियों का चयन किया गया। जहाँ वनमाली अध्ययन वृत्ति के लिये सारिका, दिनमान और नवभारत टाइम्स जैसे प्रख्यात पत्र-पत्रिकाओं से जुड़े रहे और भारत सरकार के पूर्व सीनियर फैलो, कथा लेखक, आलोचक और सम्पादक महेश दर्पण का चयन किया गया, तो वहीं, विष्णु खरे अध्ययन वृत्ति के लिये सुप्रसिद्ध रखने वाले प्रकाश मनु का चयन किया गया, जो कि विष्णु खरे के गहरे मित्र और अभिन्न सहयोगी भी रहे।

दोनों ही अध्येताओं ने अपने अध्ययन ग्रन्थों के लिये एक सुनिश्चित पैटर्न का पालन किया है। वह उनकी अपनी एक लंबी भूमिका से शुरू होता है जो अध्ययन की दिशाएँ खोलती है। महेश दर्पण ने वनमाली जी का परिचय उनके पुत्र, बेटियों और उनके छात्रों की स्मृतियों के माध्यम से दिया है और फिर उनकी कहानियों तथा कथा समय की विशद् विवेचना की है। उन्होंने उनके समकालीनों के पत्रों के माध्यम से भी वनमालीजी के व्यक्तित्व को जाँचने की कोशिश की है। महेश दर्पण वनमालीजी की रचनात्मकता के दूसरे पक्ष उनके निबंधों और व्यंग्य निबंधों तक भी जाते हैं और उनके शब्द चित्रों को भी अपने अध्ययन में शामिल करते हैं। विष्णु खरे पर प्रकाश मनु का अध्ययन भी बहुत ही विस्तृत और गहन रूप से किया गया है।

वनमाली और विष्णु खरे एक ऐसा गहरा साहित्यिक और मानवीय संबंध बनाते हैं जो आज के समय में विलक्षण प्रतीत होता है और विष्णु खरे की उन आँखों से टपकता है जब पचास बाद वे वनमाली कथा सम्मान में बोलने खड़े होते हैं। बाद में उनका कवि व्यक्तित्व विकसित हुआ जिसमें खंडवा और वनमालीजी पर भी कुछ कविताएँ उन्होंने लिखीं और उन्हीं की तरह स्पष्टवादी होने का खिताब हासिल किया।

दोनों ही साहित्यकारों के रचनात्मक अध्ययन के लिए उन्हीं के तरह के ख्यातनाम समीक्षक, आलोचक व्यक्तियों का चयन किया गया। जहाँ वनमाली अध्ययन वृत्ति के लिये सारिका, दिनमान और नवभारत टाइम्स जैसे प्रख्यात पत्र-पत्रिकाओं से जुड़े रहे और भारत सरकार के पूर्व सीनियर फैलो, कथा लेखक, आलोचक और सम्पादक महेश दर्पण का चयन किया गया, तो वहीं, विष्णु खरे अध्ययन वृत्ति के लिये सुप्रसिद्ध रखने वाले प्रकाश मनु का चयन किया गया, जो कि विष्णु खरे के गहरे मित्र और अभिन्न सहयोगी भी रहे।

दोनों ही अध्येताओं ने अपने अध्ययन ग्रन्थों के लिये एक सुनिश्चित पैटर्न का पालन किया है। वह उनकी अपनी एक लंबी भूमिका से शुरू होता है जो अध्ययन की दिशाएँ खोलती है। महेश दर्पण ने वनमाली जी का परिचय उनके पुत्र, बेटियों और उनके छात्रों की स्मृतियों के माध्यम से दिया है और फिर उनकी कहानियों तथा कथा समय की विशद् विवेचना की है। उन्होंने उनके समकालीनों के पत्रों के माध्यम से भी वनमालीजी के व्यक्तित्व को जाँचने की कोशिश की है। महेश दर्पण वनमालीजी की रचनात्मकता के दूसरे पक्ष उनके निबंधों और व्यंग्य निबंधों तक भी जाते हैं और उनके शब्द चित्रों को भी अपने अध्ययन में शामिल करते हैं। विष्णु खरे पर प्रकाश मनु का अध्ययन भी बहुत ही विस्तृत और गहन रूप से किया गया है।

उसकी शुरुआत विष्णु खरे की जीवन यात्रा से होती है जो कि उनकी विचारकथा की आत्मसंवेदी दुनिया तक जाती है। प्रकाश मनु उनकी कविताओं के माध्यम से उन्हें समझने की कोशिश करते हैं, उनके द्वारा अनूदित महाकाव्यों पर बात करते हैं और विष्णु खरे से एक अंतरंग बातचीत को भी अपने अध्ययन में शामिल करते हैं जो उनके जीवन के अंतिम दिनों तक हमें ले जाती है। दोनों ही अध्ययन अध्येयताओं की मेहनत और विद्वत्ता का परिचय तो देते ही हैं, साथ ही वे वनमाली और विष्णु खरे पर किये गये अब तक के सर्वोत्तम अध्ययनों में भी शामिल हो जाते हैं।

कविताओं में आत्मकथा

प्रकाश मनु

विष्णु खरे शायद हिंदी के उन विरले कवियों में से हैं जिनकी कविताओं में काफी ज्यादा आत्मकथा है। हो सकता है, कविता इतनी आत्मकथा लिख पाने वाला कोई दूसरा कवि हमारे यहाँ हो ही यहाँ। इसका जिक्र करना इसलिए जरूरी लगा कि कहानी में आत्मकथा लिखना तो आसान है। इसकी तुलना में कविता में आत्मकथा लिखना कठिन है- एक बहुत दुष्कर काम। पर विष्णु खरे बगैर कोई दावा किए और यहाँ तक कि बगैर कोई दिखावा किए यह काम करते हैं। कविता में निजी जिंदगी के अक्स यकीनन आते हैं और निजी अहसास या अनुभूतियाँ आएँगी तो भला निजी जिंदगी कैसे बच रहेगी? तो भी कविता में निजी जिंदगी के कुछ इधर-उधर छिटके अक्स ही ज्यादातर दिखाई देते हैं। मानो समझ लिया गया हो कि कविता का पेट इतने से ही भर जाता हो। जबकि विष्णु खरे की कविताओं में उनकी आत्मकथा ज्यादा खुलकर और अपने पूरे वर्णनात्मक विस्तार के साथ आती हैं। सच कहूँ तो उनकी कविताओं के एक पाठक के तौर पर मुझे वह बहुत अच्छा और सुखद लगता है।

विष्णु खरे की कविताओं में उनकी आत्मकथा ज्यादा खुलकर और अपने पूरे वर्णनात्मक विस्तार के साथ आती हैं। सच कहूँ तो उनकी कविताओं के एक पाठक के तौर पर मुझे वह बहुत अच्छा और सुखद लगता है।

विष्णु खरे जिस नास्टेलजिया या कहूँ कि गहरी भावनात्मक तड़प के साथ अपने जीवन में आए या आवाजाही करते लोगों, घटनाओं और चीजों का जिक्र करते हैं, वह मुझे सचमुच उनकी कविताओं का एक मुग्ध कर देने वाला फिनोमिना लगता है। और कहीं-कहीं तो घटनाओं या हादसों के ठीक-ठीक सन् ही नहीं, दिन, तारीख और स्थानों के इतने सीधे-सीधे ब्योरे भी हैं कि उनकी कविताएँ 'एक और आत्मकथा' जान पड़ती हैं। कोई सतर्क लेखक या पाठक चाहे तो इन कविताओं में छिपी हुई आत्मकथा न सिर्फ डिस्कवर कर सकता है, बल्कि इनके आधार पर विष्णु खरे की एक अच्छी जीवनी भी लिखी जा सकती है।

विष्णु खरे के 'खुद अपनी आँख से' संग्रह में ऐसी कई कविताएँ हैं। खासकर 'टेबिल', 'अव्यक्त', 'गरमियों की शाम', 'हँसी', 'प्रारंभ', 'अकेला आदमी' काफी ब्योरों से भरी ऐसी कविताएँ हैं, जिनकी निजता पर ध्यान जाए बगैर नहीं रहता। इनमें हम एक किशोर को जो अपनी उम्र से ज्यादा समझदार और संवेदनशील है धीरे-धीरे आगे बढ़ते और एक अलग सी शख्सियत हासिल करते देखते हैं। याद कीजिए, हँसी कविता का वह बच्चा जो एक साथ तीन शील्ड जीतकर निस्तब्ध रात के सन्नाटे में पैदल घर लौट रहा है और एक शील्ड के अचानक गिर जाने पर पैदा हई आवाज और रात गश्त लगाते सिपाही के सवालों मे वह कुछ अचकचा गया था। फिर किस असाधारण आत्मविश्वास से वह सिपाही के सवालों का जवाब देने के बाद घर जाता है-

एक हाथ में तीन इनाम और दूसरे हाथ से
जेब में पड़ी मूँगफली और पेठे के टुकड़ों से
कशमकश करते हुए एक शील्ड फिसली
और ग्यारह बजे रात के सुनसान में धमाके की तरह गिरी
बंद होटल के पास घूरे पर से चौंका हुआ कुत्ता भौंकने लगा
पास के घर से ऊपर की खिड़की खुली
और एक भर्राई आवाज ने पूछा कौन है रे रामसरन
गश्त लगाता हुआ कानिस्टबिल टार्च फेंकता
साइकिल पर फुर्ती से उस तरफ आया
क्या मामला है उसने घबराए हुए रौब में पूछा
कुछ नहीं यह गिर पड़ी थी
क्या है ये सामान कहाँ लिए जा रहे हो
इनाम मिला है घर जा रहा हूँ
कैसा इनाम है ये क्या चाँदी जड़ी हुई है
नहीं चाँदी नहीं है शायद पीतल पर पालिश है
रहते कहाँ हो कहीं पढ़ते हो क्या
यहीं पास में रामेश्वर रोड पर गवर्नमेंट स्कूल में

उस लड़के के साफ और निर्भीक जवाबों से सिपाही थोड़ा अचकचाया और लड़का घर की ओर चल पड़ा। वहाँ पहुँचकर सावधानी से तीनों शील्ड को नीचे रखकर उसने ताला खोला। यह सोचते हुए कि कल किताबों के साथ-साथ इन्हें भी स्कूल ले जाना होगा, और वहाँ ये हेडमास्टर जी के कमरे में रखी जाएँगी। एक अकेले छोटे बच्चे का यह आत्मविश्वास और समझदारी दोनों ही चकित जरूर करते हैं। वह किशोरवय बच्चा उम्र से पहले ही बड़ा हो गया है और चीजों को समझने लगा है, यह भी पता चलता है।

इस संग्रह की 'अव्यक्त', 'गरमियों की शाम', 'प्रारंभ' और 'दोस्त' जैसी कविताओं में विष्णु खरे के बचपन, किशोरावस्था और तरुणाई के कुछ न भूलने वाले अक्स हैं। यहाँ तक कि इन कविताओं को पढ़ना विष्णु जी के बचपन, किशोर काल और तरुणाई के चेहरे को देख लेने की मानिंद है।

ऐसे ही 'सबकी आवाज के पर्दे में' संग्रह की 'दिल्ली में अपना फ्लैट बनवा लेने के बाद एक आदमी सोचता है', 'चौथे भाई के बारे में', 'अपने आप', 'मंसूबा', 'स्कोर बुक', 'खामखयाल' सरीखी कविताओं को जरा याद करें। आपको लगेगा, यह कविताओं में लिखी गई सीधी-सीधी आत्मकथा है और इनके साथ जुड़े पारिवारिक प्रसंगों, पात्रों और घटनाओं का दर्द या विडंबना इतनी गहरी है कि वह कविताओं को भी कहीं अधिक मार्मिकता दे देती है। 'चौथे भाई के बारे में' कविता की शुरुआत किसी औचक कथा की तरह होती है, जो धीरे-धीरे हमें अपने प्रभाव की गिरफ्त में ले लेती है-

यह शायद 1946 की बात है जब हम तीन भाई
घर में पड़े रामलीला के मुकुट पहनकर खेल रहे थे
तब अचानक विह्वल होकर हमें बताया गया
कि मेरे और मुझसे छोटे के बीच तुम भी थे
और यदि आज तुम होते तो हम चार होते
राम लक्ष्मण भरत शत्रुघन की तरह
बतलाने के बाद माँ या बुआ सहम गई थीं।

रंगभूमि पर कविता

विनय उपाध्याय

विष्णु खरे स्मृति कविता सम्मान समारोह का एक महत्वपूर्ण आयाम है कविताओं का मंचन। नाट्य समूह शेडो ग्रुप भोपाल के कलाकार मनोज नायर के निर्देशन में विष्णु खरे की चुनिंदा कविताओं का रंग संस्कार कर रहे हैं। प्रसंगवश दिलचस्प है कविता और उसके रंगमंच पर नई तरह से सोचना। खरे की कविताओं की भीतरी आवाज़ और इन बेबाक, बेलौस और निर्भीक आवाज़ों को चुनकर मनोज ने एक अनूठा रंग-रूपक तैयार किया है। यहाँ वाचिक अनिभय का करिश्मा तो है ही, संगीत और देह गतियों में बिंधे दृश्यों का कमाल भी हैं। कविता को निश्चय ही यहाँ अभिव्यक्ति का नया ठौर मिल रहा है।

सुदूर अतीत में भी कविता और कला की अंतरंग सोहबत से पाठक-रसिकों का संकुल तैयार होता रहा। जिसे हम मौखिक, वाचिक, श्रुति या पाठ परंपरा कहते आए हैं, कविता उसी नाव पर तैरती लोक की वैतरणी पार करती रही है। इस परंपरा ने सदा ही नए प्रभावों को आत्मसात किया और सुविचारित ढंग से समाज को संस्कारित करने तथा कविता के प्रति गहरी प्रीति जगाने में जिम्मेदार भूमिका निभाई। इधर बीच के बरसों में कविता के पाठ को लेकर, नए कलात्मक रिश्तों को लेकर, नई पीढ़ी के बदलते रुझान और आस्वाद के आग्रहों को लेकर शिक्षा और संस्कृति के रहनुमाओं ने योजनाबद्ध ढंग से कोई कारगर पहल की हो, मालूम नहीं। इस अंधेरे में टिमटिमाती उम्मीद भरी लौ शौकिया रंगमंच ने जरूर दिखाई है।

ख़ासकर विषय, विचार-अभिनय के जरिए जनता के बीच उसे ले जाने का उत्साह गैर पेशेवर रंगकर्मियों ने दिखाया है। कविता के पाठ प्रयोग की प्रस्तुतियों का चलन बढ़ा है। स्वीकारने और नकारने के तर्क-वितर्कों के बीच नई बहसों ने जन्म लिया है। लेकिन लगभग निर्वासित और बेजार हो रही आधुनिक कविता की कला के परिसर में यह आमद भरोसा तो जगाती ही है। शुभ है कि अपनी-अपनी हदबंदियाँ तोड़कर साहित्य और कला की विधाएँ एक-दूसरे से गलबाहें कर समाज को संबोधित होना चाहती हैं। मक़सद यही कि समाज से उठाया कोई विचार, घटना, स्मृति या अनुभव पूरे ताप के साथ समाज में जाए और सर्जक का निजी चिंतन समूह को भी आन्दोलित करे। यहाँ गौर करने की बात यह भी कि नए खुल रहे नाट्य विद्यालयों में कहानी के रंगमंच को लेकर तो प्रयोग होते दिखाई पड़ रहे है, किंतु कविता के प्रति रुचि प्रायः कम ही दिखाई दे रही है।

बात भोपाल की, तो रंगभूमि पर हो रहे प्रयोगों ने ख़ासा ध्यान बाँटा है। नई कविता के रंगमंच ने दिलचस्पी के आयाम रचते हुए वृहद दर्शक बिरादरी अर्जित करने में बाजी मारी है। मिसाल के तौर पर हिन्दी के यशस्वी कवि संतोष चौबे की कविताओं की भारत भवन, भोपाल में हुई पाठ-प्रस्तुति बहुआयामी और निरंतर सृजन सक्रिय युवा रंगकर्मी संजय मेहता ने चौबे के नवप्रकाशित काव्य संग्रह 'धरती का कोना' और 'इस अ-कवि समय में' से 26 कविताएँ चुनकर छात्र वय के कलाकारों के जरिए उन्हें साभिनय प्रस्तुत किया। निश्चय ही यह चौबे की कविताओं का पुनर्जन्म था लेकिन एक नए रागात्मक सूत्र और आनंद की अपार ऊर्जा से सभागार भरा था। यहाँ कहीं-कहीं शब्दों के अशुद्ध उच्चारण, सतही पाठ और दृश्य की परिधि में ठीक से उनके न बाँध पाने की बाक़ी रही कसर पर प्रदर्शन के बाद कवि-आलोचकों के बीच बहसें भी हुईं लेकिन रंगकर्म और कविता के बीच रचनात्मक छटपटाहट और चुनौतियों से पार जाने की ज़िद को तो साधुवाद ही मिला।

लगभग चार सौ प्रेक्षकों से भरी अंतरंग शाला में एक चौथाई तादाद उन तरुणों की थी जिनमें से अधिकांश सूचना प्रौद्योगिकी या विज्ञान के स्नातक बनने मध्यप्रदेश या पड़ोसी प्रदेशों के नगर कस्बों से आए हैं। खुद कवि संतोष चौबे के लिए यह विस्मय और प्रसन्नता से भरा अनुभव था कि तकनीक की तालीम ले रहे इन छात्रों ने न केवल पेश की जा रही कविताओं को धीरज और रुचि से सुना बल्कि प्रस्तुति के दौरान ठीक मुकाम पर स्वतः स्फूर्त तालियों से कविता के प्रति अपनी समझ का साक्ष्य भी दिया। तय तो यही है कि कविता से आत्मीय परिचय की पहली सीढ़ी उसका पाठ है।

आधुनिक हिंदी रंगमंच के आसपास बात करते हुए थोड़ा पीछे जाएँ तो भोपाल में कविता और मंच की नातेदारी का सिलसिला रंगमंडल भारत भवन ने शुरू किया। ज्येष्ठ रंगकर्मी अलखनंदन ने हिंदी के सुप्रतिष्ठित कवि श्रीकांत वर्मा की रचनाओं के साथ अगुवाई की। रंगकर्मी जयंत देशमुख मुक्तिबोध की कविताओं को लेकर नए नाटकीय तेवरों के साथ प्रकट हुए।

उत्साह और जागृति के इस माहौल में राजीव गोहिल ने कविता का मंचीय प्रयोग किया था। बीच के कुछ बरस ख़ामोशी में डूबे रहे, लेकिन हिंदी कविता का हाथ थामकर उसे पुनः रंग परिसर में लाने का साहस संजय मेहता ने किया। अपने नाट्य समूह 'रंगशीर्ष' के लिए उन्होंने बाक़ायदा कविता की पाठ प्रस्तुति के शोध, अन्वेषण और मंचन का सिलसिला शुरू किया। म.प्र. की साहित्य अकादमी के आयोजनों में भी कविता के आस्वाद और सम्प्रेषण की नई जगह बनी। प्रदेश के ही जनसंपर्क संचालनालय ने 'कविता में मध्यप्रदेश' शीर्षक धारावाहिक प्रस्तुतियों के अवसर 'रंगशीर्ष' को मुहैया कराए। । ग़ौर करने का पहलू यह भी कि इस प्रयोग ग के के साथ कवि-प्रशासक पंकज राग की रुचि और आग्रह भी मायने रखते हैं। उस वक्त जनसंपर्क महकमे के प्रशासनिक सूत्र उन्हीं के हाथों में थे।

एक अन्य सफल प्रयोग 'कविता यात्रा' भी काफ़ी चर्चित रहा। संतोष चौबे द्वारा चयनित समकालीन हिंदी कवियों की रचनाओं को मनोज नायर ने अनूठी रंग चेतना दी। वहीं रंगकर्मी ब्रजेश अनय ने मालवा के कवि प्राण वल्लभ की कविताओं को नाटकीय सूत्रों में विन्यस्त किया। आलोक चटर्जी ने भी कविता और गद्य की कई विधाओं के नियमित पाठ की ओर रुख किया।

इधर मध्यप्रदेश की रंगभूमि पर काव्य नाटकों के प्रयोगों की चुनौती को भी नए नाट्य समूह 'विहान' ने स्वीकार किया।

विष्णु खरे की कविताएँ

अंतिम

क्या याद आता होगा मृत्यु के प्रारंभ में
मांतक वेदना की लंबी मौत
या कृतज्ञ बेहोशी में या उससे कुछ पहले-
एक बहुत नन्ही लड़की अँगुलियाँ पकड़ती हुई
या पास आती हुई दो दमकती आँखें
या बचपन और पुराना घर और धूप-भरी सुबहें और रेलगाड़ी
या बहुत सूनी गर्मियों की उदास दुपहर अथवा
उससे भी बोझिल शाम के एक-दो पेड़ वाले रास्ते
या चीज़ें जो की नहीं गईं या एक घर जो कभी नहीं बना
या दुःख जो दिए गए

या सुख जिन्हें छुआ नहीं गया
और इन सबके होने और न होने की व्यर्थता
यह सब याद आता होगा और एक पक्षी का उड़ना भी
किसी एक अनाम फूल का हवा में हिलना और

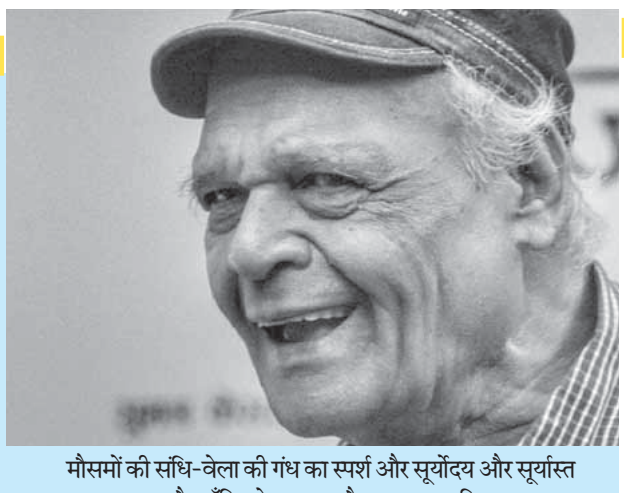

मौसमों की संधि-वेला की गंध का स्पर्श और सूर्योदय और सूर्यास्त
और अँधियारे आकार और रहस्यमय रात्रि
और यह करुण एहसास
कि यह सब अंतिम है–एक पूरे होते हुए जीवन को
बचे हुए कुछ भयार्द्र क्षणों की
डूबती हुई स्मृति में जीना।

जो मार खा रोई नहीं

तिलक मार्ग थाने के सामने
जो बिजली का एक बड़ा बक्स है
उसके पीछे नाली पर बनी झुग्गी का वाक़या है यह
चालीस के क़रीब उम्र का बाप
सूखी साँवली लंबी-सी काया परेशान बेतरतीब बढ़ी दाढ़ी
अपने हाथ में एक पतली हरी डाली लिए खड़ा हुआ
नाराज़ हो रहा था अपनी
पाँच साल और सवा साल की बेटियों पर
जो चुपचाप उसकी तरफ़ ऊपर देख रही थीं
गुस्सा बढ़ता गया बाप का
पता नहीं क्या हो गया था बच्चियों से
कुत्ता खाना ले गया था
दूध दाल आटा चीनी तेल केरोसीन में से
क्या घर में था जो बगर गया था
या एक या दोनों सड़क पर मरते-मरते बची थीं
भी रहा हो तीन बेंतें लगी बड़ी वाली को पीठ पर
और दो पड़ीं छोटी को ठीक सर पर
जिस पर मुंडन के बाद छोटे भूरे बाल आ रहे थे
बिलबिलाई नहीं बेटियाँ एकटक देखती रहीं बाप को तब भी
जो अंदर जाने के लिए धमका कर चला गया
उसका कहा मानने से पहले
बेटियों ने देखा उसे
प्यार, करुणा और उम्मीद से
जब तक वह मोड़ पर ओझल नहीं हो गया।

(संकलन संयोजन-टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केन्द्र, आरएनटीयू, भोपाल)